४४

संक्षिप्त गार्हस्थ्य चिकित्सा

तथा

[हि]मालयका जडी बूटीयौंका मुष्टियोग संग्रह



लेखक तथा मुद्रापक

कविराज हेमन्तराम भट्टराइ एल्०ए०एम्०एस०

भिषग्रत्न, आयुर्वेदोपाध्याय

भू० पू०

हाकिम (सिंहदर्बार वैद्यखाना)

उपाध्यक्ष श्री ५ को सरकारको आयुर्वेदीय हस्पिटल

श्री ५ को सरकारको प्रमुख अधिकृत, वाग्मती अंचल

संक्षिप्त–गार्हस्थ्य–चिकित्सा

तथा

हिमालयका जड़ी बूटीका

मुष्टियोग संग्रह

हिन्दीभाषायाम्

कविराज हेमन्त राम भट्टराईत्युपान्हेन

L. A. M. S.

भिषग्रत्न आयुर्वेदोपाध्यायपदभाजा

एतावत्कालपर्यन्तम्
सनिजानुभवैः शास्त्रोपदिष्टै नैंकशो योगैः
सुगुम्फितम्

प्राप्तिस्थानम्

"विजया भवन", कमलादी ब्ल. न.२७/१२७ काठमाड़ौं।

मूल्य रू. ८।–

मुद्रकः– आनन्द प्रेस, बागबजार, काठमाडौं, फो० नं० ११९२५

विषय सूची

रोगका नाम	पृष्ट
ज्वर सान्निपातिक	१ देखि ६ तक
श्लेष्मक ज्वर	१० देखि ११ तक
श्वसनक ज्वर	१२
कर्ण मूलिक ज्वर	१३
मसूरिका और भेद	१४ देखि १८ तक
विषम ज्वर	१८ देखि २२ तक
क्षय संबन्धि ज्वर	२३

रोगका नाम	पृष्ट	रोगका नाम	पृष्ट
अतीसार	२४	अग्निमंद अजीर्ण	२६
अम्लपित्त अम्लशूल	३०	कोष्टवद्धता, अर्श	३१
कृमि	३४	कास	३५
श्वास	३७	रक्तपित्त	३६
राजयक्ष्मा	४१	अरुचि	४३
छर्दि	४४	मूर्च्छा	४५
अपस्मार उन्माद	४८	वातव्याधि	५०
मांस वात	५१	गृध्रसी	५२
ग्रंथि वात	५३	शूल	५५
उदर शूल	५६	हृदय	६०
मूत्र कृच्छ्र, मूत्राघात	६१	प्रमेह	६२
स्थौल्य	६४	उदर जलोदर गुल्म, प्लीहा	६५
पाण्डु कामला	६६	शोथ	६८
श्लीपद	७२	कुष्ठ	७३
युवानपिडका, गुदभ्रंश	७८	विषमेह	८६
फिरंग	८०	रक्तप्रदर	८१

श्वेत प्रदर	८२	ओठ मुख और गलेकारोग	८४
कर्ण, पीनस	८६-८७	शिरोरोग	८६
नेत्र	६३	चर्म्म	६७
बान्ता और हिचकी	६७	रक्तपान	६८
विष, स्थावर	६६-१००	मद्य	१०२
सर्प विष	१०३	कुकुर विष	१०४
अस्थिभग्न, अस्थिस्थानच्युति			१०६

अशुद्धि शोधनम्

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट
वात नाशक	पित्त नाशक	४
पित्त नाशक	वाम नाशक	४
हलास	हल्लास	१७
वच्वे	वच्चे	१८
चाहिउ	चाहिए	२२
अडी	अंडी	३१
अश	अर्श	३२
तलां	तोंक	३४
इसकारण	इसका कारण	३७
विपयका	विषका	४७
आम वाज	आम वात	५४
नरियलका	वबूरका फूल	६२
आयुर्वेक्त	आयुर्वेदोक्त	६३
एकत्रसेद	एकत्रभेद	६४
इत्यानि	इत्यादि	६७
तीते पानी	तीते पानी	७१
रसमाणिक्य ६ लाल	रसमाणक ६ लाल	
सेरे	मेरे	६१

लेखक के दो शब्द

हिंदी भाषा आर्य भाषा सर्वोका ।
ज्ञान—प्रज्ञा—युक्त—विज्ञानता का ॥
आषानीसें भाव है व्यक्त होता ।
मित्रों काही आपसी मित्रता का ॥१॥

क्या नैपाली हैंदवी भिन्नताहै ? ।
हिंदुस्तानी लोक नेपाल लोक में ॥
धर्म्मौं कर्म्मौं एक रीतिरिवाज ।
ए देशौंही आर्यता एकसाज ॥२॥

खाना पीना एकही हैं चिकित्सा ।
दोनो काही सँस्कृति एक सँस्था ॥
राजासें रङ्कका आन जाना ।
आगेंसेंही आपसी भाव जाना ॥३॥

ऐ बन्धौं में भारती लोग लेखे ।
नैपालीमें, में यही लेखताहूं ॥
चाहे कोई हो लकीर् या फकीर ।
सब् हैं बूटीको शरण् में विभोर ।४॥

ॐ नमो भारतवर्षस्य भरतखण्डस्य प्राच्य प्रती — च्यमत चिकित्सत शास्त्राऽऽयुर्वेदपारावार पारीणेभ्यः—

निवेदनम्

ॐ नमो भारत वासिभ्यो गुरुभ्यो भक्तिनम्रतः ॥
यदीयधिषणावल्ली प्रसूते फल मुत्तमम् ॥१॥
यस्मिन् महादेश एवैकत्र च स्थिरासनः ॥
श्रीभारतो भारतो हिज्यायान् वै जृम्भते सदा ॥
प्राच्यप्रतीच्यमतयो यत्र सन्ति मनीषिणः ॥३॥
तत्सकाशा त्प्राप्तविद्यः शवच्छेदपुरस्सरम् ॥
कृत कर्म्माऽभ्यासजातोऽनुभूत आतुरालये ॥४॥
श्रीलपञ्चसर्व्वकार — स्वास्थ्यसेवाविभागके ॥
वहुसेवांविधायैव समवाप्ताऽवकाशतः ॥५॥
मित्र देश भारतस्य सांद्रमित्रत्व माप्यते ॥
अतोपि सँस्कृतजुषा हिंदीभाषासु लिख्यते ॥६॥
अहमस्मि स्तोकमति रायुर्वेद महोदधेः ॥
क पारं केवल महंतितीर्पुरुडुपेनहि ॥७॥
अल्पीयसि पुस्तके हि ये ये योगा निवेशिताः ॥
तेऽसीमांस्याः प्रयोक्तव्या प्रायशो वह्निवेशजाः ॥८॥

हर्षोद्धारः

अहो देशः सुख महो पुण्यं धन्यं महो पुनः ॥
यत्र भूमण्डले सन्ति स्वसँस्कृति—धृतव्रताः ॥१॥
स्व भाषा स्वङ्गलनाथा स्वसँस्कृति धृतव्रताः ॥
वयं सर्व आयभाषा मुद्रापयितुमुद्दढा ॥२॥
एवङ्कार भारतो हि सँस्कृते रून्नतौ स्थितः ।

तथा नेपाल देशोऽपि जाजागर्त्ति निजोन्नतौ ॥३॥
उभयो स्तत्प्रसङ्गे ममो द्यमर्मिदंफलेत् ॥
सर्व्वेषां भविकायैव भद्रिके भावुक रुचेत् ॥४॥

प्रश्रयावनतो
लेखको भू० पू० प्रमुख अधिकृत कविराज
विश्वजनीनः कविराजो वर्त्तमानोहेमंतराम
आदर्श जवाहर लाल चम्पू तथा
गान्धि गीतायाश्च लेखकः

कृत ज्ञता

इन ग्रन्थके आद्योपान्त अवलोकन करके उपयोगिता तथा हितकर तथा अहित करके बारे समुचित दिशा दिखानेवाले धीमान् श्रीमान् स्पृहयालुमहोदय हरिश्चन्द्र शुक्लाजीने नितांत्त कार्यासक्त होतेहुवेभी अपना वहुमूल्य समय देकर जो परिचयदियाहैं इससें में अत्यन्त आभारीहूं श्रीमतीकासाथ उन महोदयको निरंत्तर कल्याण कामना करताहुँ—

पुनश्च श्रीमान् वर्धिष्णुबुद्धिवाले राधाकान्तझाने इस ग्रन्थके लेखकमें प्रोत्सहन आद्योपांत्त पुंखानुपुंख भावसे संशोधन आदि कियाकलाप करके मुझे आशातीत सहायदियाहैं अतः में उनका अत्यन्त ऋणीहुँ निजका भद्रता चाहताहुं—

आयुर्वेदीय

संक्षिप्त गार्हस्थ्य चिकित्सा तथा मुष्टि योग संग्रह

उपक्रमणिका

कुछ रोग ऐसे हैं कि सामान्यतः रोग पहिचानने के बाद कुछ मुष्टि योग जाननेसें डाक्टर, कविराजों की सहायता विना लिए भी आसानीसें रोगका निवारण कियाजा सकताहै। इसग्रन्थको बनानेका उद्देश्य यह हैं कि, साधारण रोगका नाम सें परिचय कर रोगौंको हटानेके लिए, जड़ीबूटी आपातत यथालाभ द्रव्यका हातौंहात आन्तरिक तथा वाहय प्रयोगकरके गरीव जनताको आरोग्य संपन्न करना। क्यौंकि संपन्न परिवार वाला लोगौंको बहुविध वहुमूल्य महौषधि उपलब्ध होताहै। दीन हीन असहाय गरीव रोगियों केलिए एक एक द्रव्य जड़ीबूटी सुलभ वनस्पति सर्व्वत्र सुलभ होनेसे चिरकालतक प्रयोग कर ने के लिए कठिनता नही आतीहैं। आयुर्वेदमें मुष्टियोग, रस, क्वाथ, कल्क, चूर्ण, वटी, रस, उपरस आदिका प्रयोग (स्वल्प मूल्य तथा वहुमूल्य) होनेसें गरीव तथा मध्यवर्ग जनतामें तथा धनी वर्गमें आयुर्वेद दवा ओं की बडी उपयोगिता सिद्ध हुईहै। नेपालमें जैसा पहाड पर्वतौंमें

रहने वाले लोग आयुर्वेद दवा औं के उपर श्रद्धा भक्ति विश्वास रखतेहैं । वैं से ही नेपालके शहर वासियौं को भी एलोप्याथिक दवामें ज्यादाही श्रद्धा एवं विश्वासहै । यह होनेका कारण आयुर्वेदका अनभिज्ञता दोष तथा सर्व्वत्र आयुर्वेद महौषधिका अभाव। परन्तु वाजारमें पसारीका दोकानको कमीके कारण तथा निर्मित महौषधियौंका प्राप्तिस्थान उपयुक्त सर्व्वत्र नही होने के कारण तथा मात्र वन जङ्गल के संरक्षण होनेसें भी जडी बूटीयौं का यथार्थ ज्ञान परिचय नही होनेके कारण काष्ठौषधिसें चिकित्सा कार्यमें दुःखी गरीव जनताको कठिनाई होती रहीहै ।

अतः यह मुझे महसूस करके वाग वगीचा, घरके चारों ओर नजदीक में मिलने वाले साधारण जनताको परिचित वनस्पति महौषधियौंका प्रयोगसें फलवत्‌चिकित्सा होनेवाले अभावसें तथा प्राचीन आयुर्वेद शास्त्रौंका आधारसें तथा मेरापिता वंशप्रसाद भट्टराईका अनुभवसें पुनीत महौषधियौंका समावेशकरके नीरक्षीरविवेकन्यायसें उचित उपदेश पानेकेलिए सवोंके सामने रखताहुँ। उस ग्रन्थमें रोग निदानका विशेष विवेचना लिखनेको विशाल कायके भयसें प्रत्येक रोगका नाम और कही कहीं रोगका प्रकार और उपयुक्त देवौषधिका आमयिक प्रयोग दिखाकर साधारण जनताका सेवा करनेकादृष्टिकोण रखताहुं ।

इस पुस्तिकामें आयुर्वेदिक चिकित्सा ज्ञानं विज्ञान संयुतम् (अर्थात् विज्ञान विशेष ज्ञान संयुक्त ज्ञान समावेशहै।

इस बातमें तनिक संदेहकी गुञ्जास नहीहै) यहप्राचीन वैदिकालसें एकही धारा वाहिक रूपसें आई हुई चिकित्साका प्रायौगिक प्रभावहै ।

इस ग्रन्थवनानेमें भूतकालके ज्ञान अनेकन ग्रन्थौं का आधार तथा प्राच्यशास्त्र अर्वाचीन शास्त्रका अध्ययनसें तथा लेखकका शवच्छेद ज्ञान मूलक महौषधियौंका, रोग तथा सँस्थानमें ठीक कार्य कर्तृत्वका विचार शक्ति में निर्भरहै। इस में लेखकका ५० वर्षसें अधिकके अनुभवसें परिपूत योगौंका समावेशहै । मैं सँस्कृत भाषाके प्रेमीहुँ तथापि सँस्कृत भाषाके बोधहीन नेपाली और भारतीयौं के ज्ञान दिलाने के लिएही यह ग्रन्थ हिन्दी भाषामें लिखनेका प्रयास कियाहै ।

इस ग्रन्थसें श्लीपद रोग के प्रकरण तक परममित्र महेन्द्र ……जीनें संशोधन कियाहै इसमें उक्त महोदयका कृतज्ञता प्रकट करताहुँ । मुझे आशा हैकि इसपुस्तकमें लिखेहुवे योगसें आपलोग लाभ उठाएंगे ।

छिद्रान्वेषणकं त्यक्त्वा दोषस्तोमजिहीर्षया ॥
भवेयुः पाठकाः सर्वे रोगिणश्च चिकित्सकाः ॥१॥

विनयावनतः—
कविराज हेमन्त राम भट्टराई
(भू० पू० प्रमुख अधिकृत कविराज)
(श्री ५ को सरकार)
ब्लक नं ७/१२७ कमलाछि रामशाह पथ
काठमाडौं
नेपाल ।

ज्वर

ज्वर साधारणतः तीन प्रकारके होतेहैं:— (१) नव ज्वर, (२) मध्यमप्रकारके ज्वर, (३) पुराने ज्वर अथवा विषम ज्वर ।

नव ज्वर दोप्रकारके होतेहैं। (१) मामुली तवर के, (२) कठिन और उग्र रूपके संक्रामक जैसे सन्निपात होने वाला।

(क) साधारण नव ज्वर आनेपर शरीर में वेदना होतीहै। और खूब जृम्भा होतीहै तो वात प्रधान ज्वर समझना चाहिए ।

(ख) आखोंमें जलन हात पाव में जलन, पेशाव में जलन दस्त ज्यादा व साथ बुखार आरंभ होतेही पित्त प्रधान ज्वर समझना चाहिए ।

(ग) अन्नखानेमें अरुचि वदनमें गुरुता, जुकाम, सर्दी शिरमें भारीपन इत्यादिकेसाथ ज्वर आया होतो श्लेश्म प्रधान ज्वर समझना चाहिए ।

साधारण व्यवस्था:— साधारण बुखारमें २।१ दिन उपवास करना अच्छा होताहै। अगर बुखार तीव्र नहीहै, जीभ साफहै, जीभ के वीच में मैला नही जमाहैतो आहार

हल्का देना चाहिए । दो एक दिनके बाद कोष्ठ साफ होनेपर लघुपथ्य खानेके लिए देना चाहिए । उष्णोदक साबूदाना, बार्लीजल, मुद्गयूष, च्यूराकामाँड, लाजाकामाँड इत्यादि पथ्य बुखारमें दिया जाना चाहिए। बालक, वृद्ध, गर्भिणी, दुर्ब्बल व्यक्ति के वात प्रकृति वाले व्यक्ति (Nervous) के लिए लंघन अर्थात् उपवासठीक नही होताहै । इन लोगोंका लघुपाक भोजन देना अच्छा होताहै। बहुत परिश्रमी. शोकग्रस्त, भयभीत, पुराने जीर्ण ज्वर रोगीको उपवास नही कराना चाहिए । ग्रीष्म ऋतुमें उपवास नही कराना चाहिए। ज्वर रोगीकि दीर्घकालतक लंघन कराके चिकित्सा करना अशास्त्रीय और अयुक्ति संगत है।

आयुर्वेद शास्त्रमें कहीं कहीं विशेष स्थानके अलावे सर्व्वत्र उपवास करनेकी व्यवस्था नही है । बल्कि यह बात बताया हैकि लंघन करानेमें शरीरका बल हानि नहोजाय ऐसा विचार कर ही ठीक ठीक लंघन कराना चाहिए ।

साधारण ज्वर बात प्रधान रहेतो विट्लवण थोडा हरड् १ दाना ३ पाव पानी थोडासा हिङ्शेष १ पाव मन्दोष्ण अवस्थामें दिनमें दोबार खालिपेटमें खिलाना चाहिए ।

पित्त ज्वरः— इसमें मुस्तक और हर सिंगारके त्वक् ये दोनो द्रव्य १ तोला पानी ३ पाव शेष १ पाव काढ़ेमें हिङ् विट्लवण थोडा २ मिलाकर देना चाहिए । केवल वात ज्वर में हर सिंगारके काढ़ेमें हिङ् विट्लवण मिलाके देना भीलाभ प्रद है।

सेफालिका:— हरसिंगार इस देवौषधिमें बात नाशकत्व एवं पित्त नाशकत्व शक्ति परिपूर्ण है । केवल चतुर वैद्य अनुपान और सहपानके योगसें फायदा उठाता है । पित्त ज्वर में सेफालिकाका पत्तेका रस ½ औंस शहद २५।२० बूंद मिलाकर दिनमें ३।४ बार खिलाना चाहिए ।

मुख नाक सें रक्तस्त्राव होनेवाले पित्त ज्वरमें वासक रस २ चम्मच शहद ॥ चंमच मिलाके दिनमें ३ बार

कफ ज्वर:– इसमें जुकामसंबधित खासीके पीडामें तुलसीके बीज, पत्ते, जड आदि सब अंगके स्वरस या काँढा में अनुपान शहद मिलाकर देना चाहिए। दालिचनी, तेजपात, ज्येठीमधु प्रत्येक । आना अत्युष्ण जलमें चाय जैसा बनाकर दिनमें ३।४ बार पिलाना चाहिए। साधारण कफ ज्वरसें अदरकका रस १।२ चम्मचसें गर्म पानी मिलाके बार बार पिलाना चाहिए।

साधारणत:— आयुर्वेदमें बुखारकी क्या अवस्था है। इस अवस्थाको समझनेको पद्धतिबतलाया गयाहै। जीभमें मैला खूब है मुँहमें पानी आता है। उल्टीहोनेका जैसा होताहै । तन्द्रा, अरूचि, पेटमें भारीपन अथवा आध्मान थोडासा प्रबलज्वर इत्यादि लक्षणोंसें बुखारका सामता दोष विद्यमान है ऐसा समझना चाहिए। ऐसी अवस्थासें मधुर कषैले तिक्तरस युक्त काढां चूर्ण खिलानेसें आमदोष बढताहै । अत: उक्त रसका प्रयोग बढी नही करना चाहिए अथवा कम प्रयोग करनेसें उक्तरस युक्त

औषधि आमदोष युक्त ज्वरको अधिक बढा देताहै । जब ज्वर हल्का होगया है और शरीर भी हल्का होगया हो मलका कुछ निसरण होगया हो, उस समय दोष परिपक्क हुवा समझना चाहिए, और त भी ज्यादा मात्रा वाला काष्ठौषधिका चूर्ण, वटी, क्वाथ, कषाय आदि देना उचित होताहै । आमदोष युक्त ज्वरमें आमका पाक करानेके लिए, उष्णोदक कालीमिर्च, पिप्पली, दालचिनी, आदि द्रव्यका रस या काढेके अनुपानमें मृत्युंजय, हिंगुलेश्वर, सौभाग्य वटी आदि रसौषधिद्रव्यकी मात्रा अल्प होनेसें ज्वर दोष, आम नाशक होकर शमन भी करता है । उक्त ज्वरका आम दोप हटनेके बाद दस्तावर विशुद्ध अराडीका तेल १।२ तोलाके मात्रासें अदरकके रसके साथ गर्म पानीसें खानेको देना चाहिए। अथवा आमलक्यादि चूर्ण ३।५।१० माशा केमात्रासें देनेसे ज्वर में बहुत फायदा होताहै ।

साधारणः गृहस्थीसें होने वालेद्रव्यः—

कफ नाशकः— तुलसी, पान, अदरक, सौंठ, कालीमिर्च, तेजपात इत्यादि

वात नाशकः— मिश्री, दूर्वा, आंवला, धनियाँ, गुलाफका फूल इत्यादि

पित्त नाशकः प्रावेक, हिङ्ग, नमक, मेथी, तुम्बरु, अजवायन इत्यादि

इन द्रव्यों में यथालाभ द्रव्यका संयोग करके प्रयोग करनेसें जिन दोषोंके प्रकोपसें ज्वर आताहै वह ज्वर छूट जाताहै ।

संक्रामक ज्वर या सान्निपातिक ज्वरः— (Insfectous Fever) ये ज्वर भिन्न भिन्न प्रकारके होतेहैं । बहुधा पहले २ उक्त ज्वर के लक्षणों स्पष्ट नही होतेहैं । अतः चिकित्सा करनेका तरीका ठीक नही होनेके कारण नव ज्वर भी सान्निपातिक ज्वर में परिणत होजाताहै । कभी कभी तो आरम्भसें ही सान्निपातिक रूपसें याने त्रिदोष प्रबल रूपसें ज्वर प्रकट होताहै । सान्निपातिक ज्वर पूर्वरूप आदि विभिन्न प्रकारके होतेहैं । इसमें पहलेसें ही शिरमें दर्द, प्रबल ज्वर, आफरा जीभ खूबमैला अधिक कमजोरी इत्यादि लक्षण और उपद्रवों के प्रकट होजानेसें शरीर के भीतर प्रदाह (Inflammation) होकर ज्वर आयाहै यह पता चलताहै । पहले प्रदाह होकर ज्वर आयाहै या ज्वर आ कर प्रदाह होगयाहै । यह पता लगानेके लिए डाक्टरी वा आयुर्वेदका सहारा लेना पड़ता है । भीतर प्रदाह अथवा बाहरी अंगमें प्रदाह होकर ज्वर आया होतो प्रदाह नाशक द्रव्य फिटकिरी, परवर, शिलाजीत ईशव गोल यवक्षार आदि सौम्य द्रव्यका प्रयोग तथा (Antiphlogistine) आलस, गेहुँ आदि द्रव्यका उपनाह (पुल्टिस्) का प्रयोग करना चाहिए।

डाक्टरी शास्त्रमें:— रोग निदान करनेका समय अथवा जीवाणुका पता न होने तक (Alkaline Mixture) समेतका प्रयोग करके चिकित्सा करना आयुर्वेद शास्त्रमें भी उपयुक्त है ।

प्रकृत प्रसंगमें कहा गया है कि एक दुसरा सान्निपातिक ज्वर आता है जिसको (Septiciamia)

या अभिन्यास ज्वर कहा जाताहै जिसमें प्रलाप ज्वरकी उत्तरोत्तर हठात् वृद्धि श्वासकी उत्तरोत्तर वृद्धि नाडीकी विशेष दूर्व्वलता आदि लक्षणोंका स्पष्ट होनेपर उपयुक्त कबिराजौंका आश्रय लेनेमें देरी नही करना चाहिए उत्तेजक संशोधन मृगमदासव मकरध्वज गोखुर आदि बार बार खिलाना चाहिए।

कभी कभी शिशुओंमें तीव्र ज्वर प्रलाप (Tax-iemia) आदिका लक्षणोंको दिखनेसें पेटका प्रवल दोष होकर आध्मान आदि होनेसें १।२ दफे दस्तलगाने के लिए अराडीके तेल १०।२० बूँदकी मात्रा अथवा अमलतासका १०।१५ टिकिया पानीमें घोलकर गर्म खिलानेसैं पेटका विष संशोधन होकर ज्वर उतर जाताहै।

सान्निपातिक ज्वरमें अतीसारका लक्षण देखनेसें दूधपथ्य नही देना चाहिए। अथवा अल्प मात्रामें सौंठसे सिद्ध दूध देना भी लाभदायक होताहै। अथवा दूधके बदलेमें दूधको फटाकर गुल्कोज मिलाकर पथ्य देना चाहिए। ठीक टीक समयमें आरारोट् वार्ली आदि पथ्य देते रहना चाहिए।

सान्निपातिक ज्वर (बात पित्त कफ तीनो दोषको एकत्र प्रकोप) का क्वाथः—

छोटी कटेरी, बडी कटेरी, सौंठ, धनियाँ देवदारू ये यथाप्राप्त २ तोला द्रव्य पानी २ पाव शेष ½ पाव खालि पेटमें दिनमें बार बार खाना चाहिए।

अष्टाङ्ग अवलेह क्वाथः— सौंठ, मिर्च, पिप्ला, दुरालभा, कायफलके त्वक्, कुठ, काकडाश्रृंगी कालाजीरा

ये द्रव्योंका चूर्णकर भी २॥।५ माशा मात्रमें लाभ होता है।

सान्निपातिक ज्वरमें पहले आमकफका नाश करनेका लक्ष्य होना चाहिए। कफपाक होनेके बाद मुख, गला साफ होताहै। उसकेबाद उत्क्लेश शान्त होताहै पीछे मारुत पित्त दोषके समान अवस्था राखनेकी क्रियापद्धति होनी चाहिए।

निष्ठीवनः— अदरकका रस सैंधानिमक, सौंठ कालीमिर्च, पिप्पल मिलाकर बार बार चूसना चाहिए और थूकना चाहिए।

इस निष्ठीवन क्रियासें मंन्या (गलेके वगलके शिराये) शिर तथा गलेमें सूखा रूकाहुवा कफ खिच आताहै यह अंग हल्का होताहै। यह क्रिया सान्निपातके रोगोके लिए उत्तम है। कास, दमा, तन्द्रा शरीरमें दर्द हुवा त्रिदोष ज्वरमें दशमूलका काँढा १ पावमें थोड़ासा पिप्पलका चूर्ण मिलाकर दिनमें ३।४ वार अल्प २ पिलाते रहना चाहिए। इससें सर्व्वप्रथम कफ प्रकोप नाश होकर बात पित्त अपने स्थानमें रहतेहै ज्वर क्रमिक तवरसें छुट् जाताहै।

सर्व्व साधारण सान्निपातिक ज्वरमें सहसा १०३, डिग्रीसें ज्वर उपर होनेपर पिपासा युक्त ज्वर शान्तिके लिए, नागरमोथा, पित्तपापडा, खस, लालचन्दन, सुगंध बाल, तथा सौंठ जलमें औंटाकर ठंडाकिया हुवा जल देना चाहिए। ए उक्त द्रव्यगर्मकर मिश्री या गुल्कोज मिलाकर यवक्षारका योग करके, वेगर योग किएभी बार बार पिलाना

चाहिए ।

शिरमें पानीका पट्टी रखकर बदलते रहना चाहिए। पेशाबसें ज्वरका दोष वा विष संशोधन करने के लिए, गोखुर खालि वा गुर्च (अमृता) मिलाकर काँढ़ा बनाकर बार बार पिलाते रहना चाहिए।

आन्त्रिक ज्वर (Typhoid Fever) इस रोगकी चिकित्सा करते समय होसियार होना चाहिए । विशेष इस रोगके उपद्रवोंको बचावट करना बल संरक्षण करना ज्वरके वेगको बढ्ने नही देना चाहिए।

दूध, वार्लीं हार्लिक, दूध, इत्यादि पथ्य देते रहना दवाओंसें दोष संशोधनके लिए, द्रोणपुष्पकासत्वमें इशब् गोल, फिटकिरी, शिलाजीत यवक्षारका योग मिलाके गोखुरके काढ़ेमें दिनमें ३ बार अथवा ४ बार देना चाहिए। ज्वरके लिए मृत्युनजय, संनिपातभैरव, स्वल्प कस्तूरी भैरव, मकरध्वज आदि योगकरके देना आवश्यकहै । दोसप्ताहके बाद ज्वर कम नही होनेपर सौभाग्यवटी ३।४ लाल हरसिंगारका पत्तेका रस १।१ चंमच और शहदके साथ ४-४ घंटेमें देनेसें प्रायः ज्वर उतरताहै । अतीसार उपद्रव देखने पर सिद्धप्राणेश्वरसें लाभ होताहै।

मूत्र खूनका स्त्राव देखनेपर मोति भस्म, शिलाजीत, अभ्रक भस्म वेदनाके रसकेसाथ देना चाहिए खाँसी होनेसें लक्ष्मी विलास रस पानके पत्तेका रसमें १ दाना पिप्पलका चूर्ण प्रक्षेपकरके मधु मिलाके देना चाहिए ।

इस रोगमें कमिकतासें ज्वर उतरताहै । रसका ख्यालकरके अवस्थानुसार धीरे २ लाजमंड, अन्नमराड

यूष आदि पथ्य देना अच्छा होताहैं । फलके लिए मोसमी, सुन्तरा, अंगूर, वेदाना आदि फल देसकतेहै । इस रोगीको संपूर्ण विश्राममें रखकर ज्वर उतरनेकी प्रती— त्ताकरके बलाधायक दवा और पथ्य देकर धीरे २ अन्न, मराड, यवागू विलेपी : चाटनेवाला पथ्य बढाना अच्छा होताहै । दीर्घ कब्जियत वाला रोगीके लिए तर्पणपथ्य देनेकी जरूरत होनेपर एक छटाक भर किशमिश दोसेर पानीमें पकाकर आधा सेर बाकिमें लाजा चूर्ण ४ तोला मिलाकर इस के पाक होनेके बाद शीतल करके थोडासा मिलाकर बार २ देना चाहिए ।

अतीसारके कष्ठ होनेसें दूध फटा हुआ पानीमें गुल्कोज मिलाकर देना चाहिए। च्यूडाके पानीमें गुल्कोज मिलाकर खानेको देना चाहिए । अनेकन दिनके ज्वरके बिमारीमें ज्वरका वेग कम होनेके बाद मुद्गयूष पथ्य देना चाहिए। मुद्गयूष वा मसूर यूषबनाते दो तोला गेडा मुंग, मसूर एकसेर पानीमें पकाकर १ पाव बाँकिमें थोडासा हलदी पिसाहुवामें थोडासा धनियाँ और जीरा और तेजपत्ताका चूर्ण मिलाकर अभिरूचिके अनुसार चिनीका या सैंधनमक मिलाकर खाना चाहिए । आयुर्वेद शास्त्रमें मात्रा निर्देशन करनेके आगे देश काल बल (रोगीका वा रोगका) रोगीको उमेर और अग्निबल इत्यादि विचार करके मात्रानुसार पथ्य देनेका विधान है। आन्त्रिक ज्वरसें अतीसारका कुछ लक्षण देखनेसें भी दूध पथ्य देनेको आवश्यक होनेपरभी पिप्पली सिद्ध दूधदेना आवश्यकहै ।

१ पाव दूधमें ३।१ तोला पिप्पली १ पाव भर पानी रखकर दूध मात्र वाकि रहनेसें दूध देनाही उत्तम है। इसीतरहसें शुराठी सिद्ध दूधमें मिश्री मिलाकर भी देसकतेहैं। डाक्टर वा वैद्य अपने बुद्धिके अनुसार चिनी या मिश्री या सैं धानमक मिलाकर खिलानेको उचित सल्लाह दे।

ज्वर पुराने होनेपर क्षीर वा मांस यूष वा उभय पथ्य होताहै। लेकिन दोनो एकसाथ न ही देना चाहिए। २।२ घण्टेमें अलग अगल कर देना चाहिए। ज्वरमें पर वरका फल त्रिदोष नाशक पथ्य एवं महोषधिहै।

श्लेष्मक ज्वर (Influnenza) इसमें सहसा जुकाम खाँसी, अत्यन्त अवसाद, तीव्र ज्वर आताहै। ज्वरके पूर्वावस्थामें शीतल अनुभव, कम्प, शिरोवदेना होतहै। ज्वर आनेका ३।४ रोजमें ही रोगी दुर्ब्बल और कृशकाय होताहै। कफ, विष और दोष अधिक होनेसें श्वसनक सन्निपातका लक्षण जैसा लक्षण देखनेमें आताहै। किसी किसीको उल्टी भी अधिक आताहै। आखिरमें कामला रोग तक होताहै। यहत्रि दोष रूप तीव्र ज्वर आने वाला संक्रामक होताहै। यह यदा कदा व्यापक रूपसें फैलताहै। इस रोगका दोष और कफ दोषसें श्वास सँस्थानक समग्र स्थान आक्रान्त करताहै। (Nervinetype) (वातिक सँस्थान) में आक्रान्त करनेसें सारे बदनमें दर्द होताहै। श्वास सँस्थानको आक्रमण करनेसें कफका दोष पीछेतक रहताहै। उदर अंतडीको आक्रान्त करनेसें (Gestro-intestinal type) में वमन और पायखाना तकलीफसें

होताहै । किसी किसीको हृदयमें बहुत दुर्व्बलता देखी जातीहै । इसरोगमें तुलसीवृत्त सर्व्वङ्गकाममें आताहै । तुलसी वृत्तका सेवन (आन्तरिक और वाह्य) सें कफ और श्लेष्मक ज्वरका विष उतरताहै ।

चिकित्साः— तुलसीके पत्तेका १·१ चाय चम्मच भर स्वरस अथवा काँढा २-२ औंस शहद मिलाकर ३·४ घंटेमें अटूट खाना चाहिए । पञ्चकोलवटी (पिप्पल, पिप्पल मूल चव्य, चिते, सौंठ) के गोली २-२ सैंधानमकके पानीके साथ मुंहमें बार बार रखना चाहिए, हरड़, वर्रे, पिप्पलका मधुके साथ गोली बनाके २-२ गोली दिनमें ६-८ बार मुंहमें रखना चाहिए । गर्म पानीमें नमक, अदरक मिलाकर कुल्लीकरना चाहिए । तुलसीका काँढ़ेका भाप नाकसें लेना चाहिए । नाकसें खूनका स्राव होनेसें मिश्री पानीमें शुद्ध फिट्किरीका महीन चूर्ण मिलाकर संुघना चाहिए । इस ज्वरमें विषयुक्त प्रवलकफमें दुर्गन्धता होनेसें दालचिनीके चूर्ण शुद्ध सुहागा सम भाग ३·३ लाल तुलसीके पत्तेका रस अथवा पानके पत्तेका रस अथवा अदरकके रसके साथ खानेका सफल प्रयोग है । आयुर्वेदोक्त मृत्युं ञ्जय, लक्ष्मी विलास, कफकेतु, कल्पतरू ये दवायें सर्व्वोत्तमहैं । इस ज्वरमें छातिके वीच के हड्डिके ऊपर बेदना होनेसे लहसुनको पानीमें उवालकर इसका शीत रसमें शहद मिलाकर दिनमें ३ बार खाना चाहिए । इससें कफके निस्सारणके साथ उत्तेजक होकर खून फायदा होताहै । श्लेस्मक ज्वरका विष फैलकर अवसाद और हृदय

विकारतक होनेसें चिरकालतफ खाँसी कृश काय होते जानेसें लहसुनको क्षीरपाक करके दूध नित्य सेवन करना चाहिए ।

श्वसनक (Pneumonia :— इसरोगमें सीनेके बगलमें दर्द, ज्वर, कास, श्वासके द्रुतगति, श्वासके समयमें नाकके दोनों छिद्रफूल जातेहैं। कभी २ कासमें खून भी देखा जाताहै । सहसा ज्वर बढकर प्रवलरूप लेताहै । सिरमें, सीनेमें पसीना खूब आताहै । प्रलाप आदि भी होताहै। साधारण ज्वरका ७-८ दिनमें दारुणमोक्ष (Crisis) होताहै । कभीतो ज्वर धीरे धीरे उतरताहै ।

चिकित्सा:— इसके चिकित्साके क्रिया पूर्व्वोक्त सन्निपातज्वरके समान है। इस रोगमें रोगीके वक्ष स्थलमें गेहूं वा आलसके आटेमें नमक अजवायन, मेथी, घी और तेल मिलाकर पुलिस उपनाह देना चाहिए। पुल्सि ठंढा होनेके वाद सेंकना चाहिए । सीनेको अच्छा तरह अंगूछा पोंछकर कपास भीतर रखकर गर्म कपड़ेसें ढकना चाहिए । हवादार कमरेंमें रोगीको रखना चाहिए। रोगीका उपचार सावधान होना चाहिए। जिसें रोगीको प्रत्यक्षरूपसें हवा नलगजाय । पथ्य खानेके लिए द्रवपदार्थ जैसा पेया अन्नका, वनाया हवा तरल पदार्थ, मण्ड अर्थात् चतुर्थांश गुण जलमें पकाया हुआ सिकथ रहित पेय द्रव्य पेया मण्ड वनाते संधानसक, कभी ग्लुकोज मिलाना चाहिए । अवस्थाके अनुसार उचित पथ्य, फलरस, अंगूर दाना, मौसमी आदि देसकते हैं।

औषधि:— वात दोष और कफदोष नाशकरने वाले द्रव्यों जैसा पिप्पल अदरक, कंटकारी कुठ, तुलसी, पान शिलाजीत आदिमें यथालाभ द्रव्यका योगकरके शहदके साथ सेवन करना चाहिए। कासमें खून देखनेसें वंशलोचनका चूर्ण दालिचनी, तेजपत्ताके योग ६-१० लालके मात्रा बराबर मन्दोष्ण जलसें खानेके लिए देना चाहिए। ज्वर उग्ररूपसें आनेपर हृदय फुस्फुस यन्त्रौंका बला धान करके ज्वर नाश करनेके लिए बृह कस्तूरीभैरव, मृतसंजीवनींसुरा बिशुद्ध कर्पूर, सौभाग्यवटीका योग करके सामान्य मात्रामें खिलाना चाहिए। पिशावसे ज्वर दोष संशोधनके लिए मकरवज्र वा गोखुरका काँढा २-३ बार दिनमें देना उचित होताहै। शिरमें पानीकी पट्टी देकर ज्वरको १०३, ड़िग्री होनेपर पट्टी देनेको बन्द करना चाहिए। इसरोगमें विशुद्ध कपूर ३।१ लाल मृगका शृंगका भष्म ४ लाल हर्रे, वर्रेका योग ४ लालसें मिलाकर तुलसीके पत्तेका रस और मधुके साथ ३ बार खिलानेसें कफ दोष ठीक होताहै।

कर्ण मूलिक शोथ ज्वर (Mumps) :— इसरोगमें कानके जरेमें सूजन होताहै। ज्वर आताहै। इसरोगकी चिकित्सा करते समय कफ और वायु नाश करनेका लक्ष्य होना चाहिए। बाह्य प्रयोग में रूक्षस्वेद, प्रस्तर स्वेद बालूको गर्म करके स्वेदन करनेके बाद धत्तुरेका पत्ता पीस करके सौंठ, बचका चूर्ण मूलसें लेपकरना चाहिए। छोटी कटेरी, सौंठ, गुर्चके काढेमें छोटी पिप्पलका चूर्ण मिलाकर दिनसें ३ बार खिलाना चाहिए। पेट साफ

नही होनेपर राजवृक्षकी १० टिकियां गर्म पानीमें पकाके पीना चाहिए । इसरोगमें लालास्राव करानेसें भी फायदा होताहै । तुम्बुरूका काढासें बार बार कुल्ला करना, तुम्बुरू मुंहमें रखकर फीक दानीमें थूकते ही रहना अच्छा होताहै ।

ए संक्रामक ज्वर रोगौंकी चिकित्सा पद्धतीयां है ।

अब अत्यन्त संक्रामक मसूरिका का वर्णन और चिकित्साका वर्णन है:—

इसरोगको तीन भेदहैं (१) बृहन्मसूरिका (Small pox) बोल चाल की भाषामें इस रोगका नाम शीतला माई या चेचक है । इस रोगकी प्रतिषेध चिकित्सा सर्व्वोत्तम है। भ्याकसिन् देना चाहिए। यह रोग फैलते समय वा ऋतुमें भ्याक्सिन देनेको नही भूलना चाहिए। इसरोगमें शीतकम्प, शिरपीडा, कटीभाग, पृष्ट प्रदेशमें वेदना तीव्र होती है। ज्वर, प्रलाप, मोह इत्यादि लक्षण देखजाताहै । इसरोगमें रक्तस्राव, रक्तातीसार और पानी जैसा पुरीष बार बार होताहै । अतीसार औरश्वसनक ज्वर आदि उपद्रव किसी किसी देखनेको आताहै। किसी किसीको कानमें और आँखोमें कुछ खराबी देखा जाताहै । यह खराबी चिर कालतक रहताहै ।

चिकित्सा:— इसरोगमें पित्त, श्लेष्मा, तथा विष (जीवाणु संवन्धित) के संशोधन करनेकी जरूरत पडतीहै। इस क्रियाके लिए रोगका आरम्भसे प्रथम ३-५ दिन तक पर्पटादिकाढेंका आभ्यन्तरिक प्रयोग करना चाहिए ।

पर्पटादिकाथः— पित्त पापडा (एक प्रकारका कड़ुवा तृण), निमका त्वक् अड्रूसेका पत्ता प्रत्येक ½-½-½ तोला १ सेर पानीमें पकाकर १ पाव शेष रखकर दिनमें थोड़ा थोड़ा सा करके पीतेरहना चाहिए। काढ़ेमें मिश्री मिलाकर खानेसें भी लाभ होताहै। सान्निपातिक (त्रिदोषजन्य) ज्वरके समानयह प्रबल रोग है। अतः कफ और विष, पित्त शमन काढ़ेसें ही होताहै। खानेमें कष्ट होकर या तिक्त रसके आश्वादनसें वमन होजायतो विष, पित्त, श्लेष्मा निकल जानेसें और भी अच्छा होताहै। कडुवे ब्राह्मीके पत्तेका रस १-२ छोटा चम्मच भर हरिद्रा चूर्ण ¼ तोला मिलाकर गर्म पानीसें दिनमें दो बार आवश्य खिलाना चाहिए। इससें कुछ मल भेद होताहै नुकसान कुछ नही होताहै। सारांश यह है कि उक्त क्रियासें उक्त रोगका विष और दोष बाहर निकलकर उक्त रोगमें पिडकाओंमें ज्यादा मवाद नही होताहै और रोगके उपद्रव नही आसक्ते हैं। पिडकों सुख्जातेहैं। इसके बाद खदिराष्टकके काढ़ेसें फायदा होताहै।

खदिराष्टक क्वाथः- खयरके काठ्, हर्रे, वर्रे, अमला, नीमके त्वक, पित्त पापडा, गुर्च, इसमें मिलानसें संमिलित द्रव्य १ तोला अथवा यथा लाभ द्रव्य १ तोला ३ पाव भर पानी शेष १ पाव मन्दोष्ण थोडा थोडा करके खिलाना चाहिए। रोगीके शय्यासें निमके पत्तेका चूर्ण और हल्दी छिट्ना चाहिए। इस दवा वाले शय्याके उपर सोना चाहिए बृहन्मसूरिकामें ज्वर नाशक और रक्तशोषक

महौषधि नही देना चाहिए। वृहन्मसूरिका पाकना आरम्भ होनेसें किसी किसीको वायु प्रबल होताहै । मसूरिकौं सूख जाने लगते हैं । अतएव मसूरिका रोगोंमें बृहण चिकित्सा हितकर होतीहै । शोषण क्रिया हितकर नही होताहै । वृंहण चिकित्साके लिए गुर्चके काढ़ेमें मिश्री मिलाकर दिनमें ३ बार खाना चाहिए । मुलेठीका टुकडा मुहमें रखना चाहिए कथ्थाकी गोली मुखमें बार बार रखना चाहिए। वेदाना खानेको देनाचाहिए सहसा मसूरिका पकानेकेलिए बदर (लाल वाला हड्डीदार) के चूर्ण या अवलेह पुराने गुडके मिश्रित दूधके साथ खिलाना चाहिए । ईक्षुमूलके चूर्णको गुड़के साथ खानेको देना चाहिए । मसूरिका औंसें मवाद बहुत होनेसें पञ्चवल्कल अर्थात् बर, गद, गूलर, पपिल, गजदराड सहोरा, पाकर, इन्ही पाचौं क्षीरिबृक्षौं के समुदाय क्षीरिबृक्ष पञ्चक समझना चाहिए । यहाँ कोई पारिश (गजदराड सहोरा) के स्थानसें शिरीष (सिरस) कोई वेतस (वेत) का पाठ मानतेहैं । यिनका वारीक चूर्ण करके इन चूर्ण मवादके उपर रखदेनेसें मवाद सुख जाताहै । मवाद आतेही बाहरसें कीडे देखनेको आतेहैं । अत बचादिधूपः— बच, गौकेघी, वंश,जे,अडूसा, कपासके बीज, ब्राहमी, तुलसी, अपामार्ग, लाक्षाके धूप देना चाहिए।

गला साफ नही होनेसें अष्टङ्गा वलेह शहदके साथ चाटना चाहिए । आँख दुखनेसें त्रिफला दारुह लदीका काथसें सदउष्ण अवस्थामें आँखको धोना चाहिए। जबतक आरोग्य संपन्न नही होताहैं तेल खानेको नही देना

चाहिए। मेरे कुलज अनुभव ज्ञानसें रुद्राक्ष पानीमें घिसकर दूध और शहदके साथ प्रत्यह नियमित खाने वालेको जनपद व्यापक रोगके समयसें भी नही होताहै यह (Priventive) (प्रतिषेधक) रोगकी दवाहै।

साधारणत- उक्त रोगके प्रतिषेधक उपायों को हलास करनेकी जरूरत पडेतो एक नुस्खा है बृहन्मसूरिकाके प्रतिषेधक योगः— तीते करेलेके पत्तेका रस १ तोलेमें हलदीका चूर्ण ¼ तोला प्रक्षेप देके उष्णोदकसें नित्य खाना चाहिए।

यद्यपि इस जमानेसें बृहन्मसूरिका निर्मूल जैसा होगया अब (Vaccination) का सफल प्रयोग देखनेको आयाहै तो भी आयुर्वेदपद्धतिसें (Qurative & Priv-entive) रोग निर्मूलक एवं प्रतिपेधक चिकित्सा लिखनेकी क्या जरूरत है। क्यों कि शायद जैसा टी ए, बी सी नही देना इसका सफल प्रयोग नहीहै कहकर वैज्ञानिकोंका विचार बदल गयाहै वैसा ही चेचकके प्रतिषेधक दवा प्रयोग करनेके पाश्चात्य वैज्ञानिकोंका विचार नही बदल्जायगा यह कोईनिश्चितही नही है।

लघुमसूरिका (Chicken Pox):- इस रोगमें साधारणत कुछ भी महौषध सेवन करनेकी जरूरत नहीहै। केवल पथ्य आहार और विश्वासमें रहना जरूरी है। इस रोगमें अति अल्प संख्या क्षुद्रगुटिके निकलतेहै। ३-५ दिनमें ही ज्वर कमहो जाताहै।

रोमान्तिका (Measles) :– यह रोग शिशु औं में खूब होताहै ज्यादा जुकाम होकर ४।६ दिनके भीतर ही मुंहमें और शरीरमें कुछ तनिक ऊँचा लाल फैलेहुवे बडे और छोटे दाग बाहर निकलतेहै । इसरोगमें श्वसनक ज्वर विभिन्न प्रकारके होताहै। किसी किसीको अतीसार होताहै ज्वर तीव्र होताहै । ज्वर तीव्र होनेपर सावधान होना जरूरीहै । प्रमादसें मिथ्या उपचार करनेसें वच्चेका मृत्यु होतीहै।

चिकित्साः— इसरोगके चिकित्सा करते समय कफ नाशक एवं वायु नाशक एवं वायुको अनुकूल रखनेका दृष्टिकोण होना चाहिए । कफका दोष ज्यादा देखनेसें तुलसी या पानका पत्तेका रस १-१ चम्मच भरमें थोड़ासा पिप्पलका चूर्ण और शहद मिलाकर दिनमें ३ बार चाटना चाहिए । वंशलोचनका चूर्ण ४·४ लाल और मुलैठीका ४-४ लाल मिलाकर प्रत्यह पानके चन्दनके साथ दिनमें ३-४ बार खाना। गरमें एक आदमीको हो जानेपर दूसरे बालकको भी न हो जाय ऐसे दृष्टिकोणसें संक्रमण बचाने केलिए रोगीको अलग रखना चाहिए। सर्व्वप्रकारके मसूरिका रोगमें पित्त और विष नाशक पेय होना चाहिए। इस क्रियामें श्याह जीरा अथवा मंगरेलाका काँढा बनाकर मन्दोष्ण करके बार बार पिलाना चाहिए । इससें तिक्त रस होनेसें कुछ उलटी होनेसें दूषित पित्त और कफके साथ साफ निकलेगा और रोग बढने नही पाएगा ।

विषम ज्वरः— यह ज्वर विषम रूपसें आताहै

अतः इसको विषम ज्वर नामदियाहै ये बहुत प्रकारके होतेहै । तीन सप्ताहसें अधिकदिन ज्वर रहनेसें साथमें प्लीहा बढनेसें, और अग्निमंद रहनेसें ज्वर मंद रहजानेसें जीर्ण ज्वर होताहै ।

जो कोई संक्रामक रोग (Infectous) में पीछे आरोग्य लाभ करनेमें देर करनेसें शरीर की दुर्व्वल स्थितिमें जीर्ण ज्वर होताहै । किसी किसीको आरम्भसें ही विषम ज्वर होताहै । कभी कभी सान्निपातिक रूपका भी विषम ज्वर होताहै । कभी तो अस्पष्ट लक्षण होजानेसें रोगका पृथक निर्णय करना कठिन होताहै । ऐसी मुसीबत आनेसें उपशय या अनुपशय (ज्वर कम करनेका या न करनेकी) दवाका प्रयोग करके देखने सें पत्ता चलता है । जैसा नेपाली कुईनाइन (कालो वासक) जिसको वनवासी लोग, कालावाकस् कहतेहै यह जड़ी बूटी नेपालके नागार्जुन वन तथा गोकर्ण वन कुञ्जमें वहुत मिलताहै । यह १ भाग सुदर्शन १ भाग चिरायता १ भाग यथालाभ द्रव्य १-२-३ माशेके मात्रामें कालीमिर्चके काढ़ेमें दिनमें दोवार खानेमें ज्वर कम होजाताहै । तभी विषम ज्वरका निर्णय होताहै । नहीतो दुसरा ज्वरका निर्णय होजाताहै । एलो-- प्याथिक चिकित्सा पद्धतिमें उपशयसें पत्ता लगानेका काम कुईनिन्सें होजाताहै । खूनकी परीक्षासें भी विषम ज्वरका निदान हो सकताहै । किन्तु आन्त्रिक ज्वरमें १ प्रथम सप्ताह पूरा होनेकी बादही रक्तमें उक्त रोगका जीवाणु स्फुटित होताहै । विषम ज्वरके विष प्रबल हो कर दो तीन सप्ताह

तक अबिराम ही रहनेसें सन्ततक (Remitent Fever) होताहै । इस ज्वरमें बकायन (महानिम्ब) का अन्त त्वक में हलके पीत वर्णका कडुवा रहताहै । इस ६ माशे दिनमें ३ बार खानेको देना चाहिए। अथवा ज्वरां कूश बटी हरसिंगारके पत्तेका रसके साथ खाना चाहिए। ज्वरांकूश बटी: - यह कालाअड्डूसा, मरिच, जवाखार ये तीन द्रव्यौंका योगसे बनताहैं । श्याहीजीराका चूर्ण २ माशा निर्गुराडी (नील सम्हालु) के पत्तेका रस २ चमचेके साथ या काँढ़के साथ खाना चाहिए

कुविराच (करंजा) बीजका मज्जा काला अड्डूसा, मरिचका योग १ माशेके मात्रासें दिन रातमें ४-४ घंटेसें देनेसें खूब अच्छा काम देताहै। इसके अतिरिक्त मुसाबर ४ रत्ती हरिताल ¼ लालका योग द्रोणपुष्पका रसके साथ खाना चाहिए।

विषम ज्वर नाशक सुदर्शन चूर्ण ज्वरांकुशवटी, निंवादि वटी आदि काष्टौषधिहै ।

इस दवाओं का योग देने वख्त सततक ज्वरमें घिउँआरके रसके साथ खाना चाहिए। यदि उक्त ज्वरौंमें प्लीहा वृद्धि होगइ होतो, आंकके पत्तेका रस २ तोला बिटूलवण ४ रत्तीके योग अनुपान और सह पानसें खाना चाहिए । पेटमें गुल्मका शिकायत होतो यवक्षार ५ रत्ती पिप्पल और श्याही जीरेके काँढ़के साथ खाना उत्तमहै ।

विषम ज्वर नाशक फलौंमें दाख, खजूर, बेदाना इत्यादि विषम ज्वर नाशक शाकोंसें अग्नि दग्ध वेंगन,

अड्स के फूल, तीते करेला, मेथिका शाक, सोनापाठा (नेपा-लीमें टटेलो) इसके फूलकी तरकारी प्रभृति द्रव्य अच्छा होताहै ।

विषके ज्वरमें बीमारको ज्यदा लंघन (उपवास) में रखना आवश्यक नही होताहै किन्तु ज्वर तीव्र अथवा ज्वर सन्तत (Remittent) के रूपमें होतो लघनमें रखना भी अच्छा होसकताहै नहीं तो पेय पीनेका खाद्य पदार्थ देना, मुद्गयूष आदमें १-२ दाना पिप्पलके चूर्ण रखके खाना अच्छा होताहै। कुछ ज्वर ऐसे होतेहैं जिसमें १-२ दिनके बाद ज्वर आताहै । इसमें तो भात खानेके लिए देना अच्छा होताहै। वस्तुतः पेटकी अवस्था विचार करना मल और दोषका सञ्चय कैसाहै यह जानना रोगी वलवान् है या दुर्व्वल है। लंघनमें रोगीको रखना चाहिए या लघुभोजनदेके रखना चाहिए इसमें वैद्यक बिराजोंका बिचार परनिर्भर करताहै । मुख्यतः विस्तरा शीशामें मुख देखनेसें शरीरकी अवस्था ज्ञान होताहै । वैसेंही रसना (जीभ) को देखनेसें पेटकी अवस्थाका पत्ता तथा ··· ··· ··· रोगीयौंका लंघन कराना या लघुभो जन करनेको देना इसका निर्णय होसकताहै । विषम ज्वर पुराने होनेपर शरीर रूक्ष होताहै और ज्वर नही छुटताहै ऐसी अवस्थामें जीर्ण ज्वर नाशक चिरायता, नीम इत्यादि भेषजौंका संयोग करके पकाया हुवा घृत प्रयोग करनेका शास्त्रीय विधानहै।

प्लीहा बृद्धि संयुक्त होनेसें आँकके पत्तेमें विट्लवण का योग १-१ माशा गोमूत्र २ चम्मचमें मिलाकर खाना

चाहिए । गोमूत्रसें प्लीहाके उपर स्वेदन (Fomen-tation) करना चाहिए । यकृद् वृद्धि (कलेजे बढना) संयुक्त विषम ज्वरमें और जीर्ण ज्वरमें हल्का जुलाव औषधि नित्यखानेको देना चाहिए । मुसव्वर ५-५ लाल हिराकसी २-२ लाल का योग लहसुनके स्वरस या काँढेसें नित्य खानेको देना चाहिउ । यह योग अच्छा काम देताहै । रोहितक (रोहेड) हर्रे, सौंठ, निशोथ ३।३ तोलेमें विशुद्ध नौसागरका चूर्ण ५ लाल मिलाके सबे रै और साम ठंडे जलके साथ खाना चाहिए । पेटके दायां तरफ कलेजाकी धारामें गोमूत्रका स्वेदन देना चाहिए । यदि अरुचि होतो सेंधानमकका काढ़ेका साथ अदरकके रस ।। आधा चम्मच मिलाके मुहमें थोडी देरतक हिलाते हिलाते निगलना चाहिए । उल्टी होनेसें गुर्चके सत्वके साथ अलैंचीका चूर्ण मिलाके खाना चाहिए । प्यास बढने पर लाजा-मण्डमें मिश्री मिलाकर मंदोष्ण अवस्थामें खाना चाहिए । कासके उपद्रवमें पिप्पल, बीहि, (छोटी कटेरी) भट कटैया, सुठके काथमें ठंडा होनेके बाद शहद मिलाके खाना चाहिए ।

आयुर्वेदमें नीमका त्वक्, कुवेराच (लता करन्ज) निर्गुराडीके पत्ते सप्तपर्ण (छति वन) इत्यादि विषम ज्वर नाशक जडी बूटी या है । यें बूटीयाँ सब समान भाग २ तोला ४ पाव भर पानीसें पकावे जब १ पाव शेष रहजाय तव नित्य खानेसें १-२ घंटा पहले खाना चाहिए । ज्वरकी प्रबल अवस्थामें अथवा ज्वर कम हुवे अवस्थामें विषम ज्वरमें अपामार्गके पत्तेका रस २ तोलेके मात्रामें

४-४ घण्टेके बाद खानेसें ४-४ दिनमें आनेवाले बिषम ज्वर बिलकूल छुट छुट् जाताहै । जीर्ण ज्वरमें खूनकी कमी देखने पर सप्तपर्णाका चूर्ण ३-४ माशे गोमूत्र २ चम्मच भरमें मिलाकर खाना चाहिए।

विषम ज्वरके अतिरिक्त और प्रकारके पुराने ज्वर साधारणतः शरीरके दुर्व्रलता खराबी खूनकी कमी प्रमेहके दोष, कफकी प्रवलता पित्तके विकार अथवा अन्य जरियेसें भी पुराने ज्वरकी उत्पत्ति होती रहतीहै। आमावस्या पूर्णिमा आदि तिथियौंमें शीत होकर कम्प होकर एक प्रकारका बुखार आताहै । इसमें हाथ और पैर अथवा अराडकोष फुल्जाताहै ।

यक्ष्मा आदि रोगोंमें लक्षण रूपसें और पुरातन रूपसें ज्वर आता रहताहैं। ऐसी अवस्थामें अरुचि अथवा अग्निमंद होनेसें भी नही खाना चाहिए। साबूदाना, बार्ली, अष्टमराडप, दूध, मूगके रस, पाउरोटी बिस्कुट, और अवस्था—विशेपमें अन्न पथ्य आदि भिन्न २ पथ्य देते रहना ही उतम होताहै।

क्षय संवन्धित ज्वरः- इसमें तो लंघन या अपतर्पण कराना सर्व्वथा निषिद्धहै । तर्पण पौष्टिक आहार मांस, मछली, गोधूम आदि समयमें अन्न आदि पथ्यौंके साथ देनाही श्रेयहै । अन्य प्रकारका बृंहण तथा पोषण करनेका आहार, दूधका प्रकारके होतेहै । संपूर्ण भिटामिन् हुवा आयुर्वेदिक अष्टवर्ग योग खाना चाहिए । दूध सर्व्वर-सायन है। दूधके प्रकारसें बकरीका दूध होतो सर्व्वोत्तमहै।

अतिसार (Diarrhoea) :— किसी भी कारणसें हो बार बार पतलेमल (Stool) गुद द्वारसें निकल–जानेसें अतीसार रोग होताहैं । चिकित्सा:— यह रोग दो प्रकारका होताहै । (१) साम (२) निराम । अजीर्णसें अपरिपक मल निकलनेसें साम अतिसार होताहैं प्रथम अबस्थामें साम और बादकी अवस्थामें निराम होताहै । कालातीसार (कालरा) हैजा रोगमें एक प्रकारके विशेष जीवणु उदर गत होनेपर अतीसार होताहै यह भयङ्कर होताहै ।

रक्तातीसार, प्रवाहिका आदि रोगमें अतीसार देखनेसें तत्तत्प्रसंगमें चिकित्साका उल्लेख किया जायगा ।

साधारण अतीसारका सामावस्थामें लंघनमें रखकर वा रोगी दुर्ब्बल होनेसें लघुभोजन कराकर-धनिया, सौंठ, नागर मोथा, सुगन्धवाला, वेलका गूदा यहधान्य पंचक कहा जाताहै । यह मिलाकर २ तोला काढे पकाकर दिनमें ३-४ बार खाना चाहिए । . अथवा पिप्पल पिपलके जरा, चितेका जरा, सौंठ, अतिरस, हर्रे, सैंधनक सब्रै समेत २ तोलाके १॥ पाव पानीमें पकाके १ पाव बाकिमें भुनाहुवा हिङ्का चूर्ण २ लाल मिलाकर खानेसें २-१ बार दस्त होकर पेटका आम दोष और पेटका दर्दका कष्ट जाताहै । आयुर्वेदोक्त सिद्धप्राणेश्वर २-३ रत्ती ३-४ घंटेमें गर्मपानीसें खाना भी सर्व्वोत्तम होताहै ।

पक अतीसारमें वेलका गूदा, धायके फूल, सौंठ मोचरस इन सबका काढ़े पकाकर ३ तोला भर चीनी मिलाकर खाना चाहिए ।

पक्क अतिसारसें कच्चे वेलको आगमें जलाकर प्राप्त हुवा राख ½ तोला चिनी और गर्म पानीके साथ खाना चाहिए ।

रक्त प्रवाहिका या प्रवाहिकामें साधारणतः नीचे पेट या (Lower abdomen) में तोद अर्थात् चुभने जैसी अथवा काटने जैसी (GriPing) वेदना होतीहै । बार बार सादा गुलाफी रङ्का आंव युक्त मल वडी आवाजके साथ गिरतहै । मल त्यागते समय प्रवाहन अर्थात् कुंथन करना पडताहै । अतएव इस रोगका नाम प्रवाहिका रहाहै ।

खूनमलके साथ दीखने वाली प्रवाहिकामें गुद द्वारसें ऊपरका बड़ी आतडीमें च्रत होताहै । आवके साथ खून अथवा पूय निकलतहै । साधारणत, किसी किसीको कई दिन तक कोष्ठ बद्धता होकर आमाशय या प्रवाहिका रोग होताहै । किसी किसीको प्रथमत साधारण अतीसारका जैसा लच्चण होकर वादमें प्रवाहिका केल च्रण देखनेमें आताहै ।

चिकित्सा:— इस रोगमें एक दिनसें ज्यादा उपवास देना नही चहिए । जीम साफ होनेसें पहलेसेंही वकरीका दूध, अन्न मण्ड, आरारोट् आदि पथ्य देसकतेहै । सर्व्व प्रथम आंव मलमें आनेको जैसा शंका होनेका साथ पेटमें स्थान स्थानमें दर्द होनेसें अथवा स्थानीय पेटमें दर्द होनेसें, जिसको पीडाके साथ थोड़ा २ वंधाहुवा दस्त उतरताहै । उसे कुछ गरम गरम हर्रे, तथा छोटी पिप्पलको पानीमें

पीसा हुवा कल्क देकर ऊपरसें गर्म पानी खिलाके विरेचन कराना चाहिए। जिसको अविपक्क आहारसें बढ़े हुवे दोष एकके होकर अतीसार अथवा प्रवाहिका उत्पन्न कर देतेहै। उनदोषौंका विरेचन द्वारा निकालही देना चाहिए। आँव-दोषयुक्त रोगीको प्रथम दस्त बन्द करनेवाली औषधि नही देना चाहिए। जिसका धातु व बल क्षीण होगया है दस्त बहुत आचुकेहै। फिर भी दोष बढ़े हुए हैं और आँव भी है। तो भी संग्राही औषधि देना चाहिए। केवल पाचनसें मृत्यु हो सकताहै।

सर्व्व प्रथम दस्त ठीकरनेका क्रिया तथा औषधि देनेके बाद सौंफ, जीरा, भुना हुवा मिश्रीके साथ १ तोलेके खुराकमें दिनमें २-३ खुराक पानीसें देना चाहिए। इसके बाद धान्य पंचक चूर्ण दिनमें ४-४ घटेमें खिलाना चाहिए। शीत रस ४-४ गोली दिनमें ३-४ बार खिलाना चाहिए। पानी उवालकर बार बार पीना कुडेकी छालके काँढा कच्चे वेलका गूदा आमकी गुठलीका काथ कुटजावलेह, विल्वका चूर्ण यथा लीभ द्रव्य उपयुक्त मात्रा १-२-३ दवाओंका योग करके दिनमें ३ बार देना उतमहै।

(Dyspepsia and Indijession) (अग्नि ः अजीर्ण) अपच:—

नयें अजीर्ण रोगमें एक वा आध दिन उपवास करना चाहिए। बादमें लघु (हल्का) पथ्य खाना चाहिए। पुराने अजीर्ण रोगमें नियमित पथ्य सेवन करना चाहिए। विशेष करके अजीर्ण रोगीयोंको लोभसें कुपथ्य सेवन

करनेकी प्रवृत्ति बढतीहै । पुराने अजीर्णमें ज्यादा खानेकी मात्रा कम करना ठीक नही होताहै। इसीसें रोगी सहजही दुर्व्बल हो जाताहै। पुराने अजीर्ण रोगमें चावलका भात वसाहीन, मांस रस, मूग, और मसुरकी दाल थोडी शाक पातकी तरकारी, थोड़ासा दूध, तक्र, दहिके पानी मूलीके भाँगके वीज, कागती निम्बूका आचार अच्छा होताहै। किसी किसीको दूध सह्य नही होताहै। अत जिनको दूध सह्य नही होताहै। उनको दूधमें लाजाका मांड् पिलाना चाहिए। नागर मोथेका चूर्ण २-३ माशा चूर्ण प्रक्षेप देकर खाना चाहिए। इस रोगमें अम्ल और मसालेदार तेल, घी, वहुत मिलाया हुवा तरकारी लाभ दायक नही होताहै। नये अजीर्ण रोगमें नींबूका रस और अदरकका रस समान भाग शीशीमें रखकर छोडनेसें लाल रङ् रासायनिक परिवर्त्तन होनेसें भी गुण देनेमें प्रवल शक्ति संपन्न होताहै। इस लाल रसमें थोडासा सैंधा नमक डालनेसें तो उम्दा स्वादिष्ठ रस होताहै। इसका मात्रा १०-१२ बूंद है।

(१) नागर मोथा ॥ तोलेमें कालीमिर्चका दाना ५-७ पीसकर गर्म पानीसें खाना चाहिए।

(२) थोडा भुना हुवा हिङ् १-२ लाल विट्लवण ६ लाल आधाछटाक अजवायनका काँढा पानीसें खाना चाहिए।

३ अम्ल ड्कार आने वाले अजीर्ण रोगमें धनिया, गुलाफका फूल, सौफ पकाकर ठंडा जल पीना उत्तम होताहै।

जिसके भोजन करतेही अन्न विदग्ध होताहै हृदय, कोष्ठ और गलेमें जलन होतीहै । वह मुनका मिश्री और बडी हर्रेका चूर्ण शहदसें चाटकर सुखी होताहै । यह योगहै शास्त्रोक्त एवं अनुभूत होनेसें आप लोगोंको समक्ष राखता हूं। वह इस प्रकारका है।

जे १ सेर पानी ४ सेरमें सड़ाकर इसी जलमें १ पाव हर्रेका पाक करना पानी सूखजानेसें चूर्ण करना चाहिए। छोटी पिप्पल, विट्लवण, घीमें भुनी हुई हींगका चूर्ण मिलाकर फाकनेसें सधूम डकार और अजीर्णको नाशकरके शीघ्रही भूख उत्पन्न करताहै । यह नेपाल आयुर्वेदिक हश्पिटलमें लेखकोंने सहस्रशः अनुभव कियाहै । खाया हुवा भोजन न पचकर पेटके उपरके भागमें ही रह जानेके कारण उत्पन्न अजीर्णमें तत्काल फायदाके लिए कुछ वमन कराना श्रेय होताहै ।

यदि स्निग्ध तथा बलवान मनुष्यको भोजनके समय अजीर्णकी शंका होतो पहले सौंठ और हर्रेका चूर्ण ३ माशातक खाकर थोड़ा पानी पीकर हल्का पथ्य देवे। यदि आँवके कारण अजीर्ण और अग्निमंद होतो पिपल, सौंठ, कालामीर्च युक्त सैंधानमक युक्त मट्ठेके साथ भात खाना चाहिए। अग्निमंद संयुक्त अजीर्णमें हर्रे और सोंठका टुकडा चिपाकर दिनमें ३ बार खाना चाहिए। यह शास्त्रीय विधान है। अग्निके कमीसें अजीर्ण अर्थात् अग्निमंद संयुक्त अजीर्णमें श्याहीजिरे, हिङ्, लवण (विट्) सय भाग हर्रेका चूर्ण डबल भाग मिलाकर थोडासा

बार बार खाना । हिंग्वष्टक चूर्ण २ मासेमें अराडीका तेल १-२ तोला ४ औंस पानी एक साथ खानेसें पेट फुलना पेट दुखना नष्ट होताहै। यह वाताजीर्णकी दवाहै ।

साधारण अजीर्ण रोगमें लवंग, सोंठ, मरिच, मुनाहुवा सुहागा सम भाग मिलाके २ माशा खुराकमें आहारके बाद खानेसें अजीर्ण नष्ट होताहै । क्षुधावढतीहै। अजीर्ण रोगमें याद करना जरूरीहै कि अजीर्ण दो प्रकारके हैं । (१) कोष्ठ बद्धता ज्यादा होनेवाला एक प्रकारका होताहै। (२) दूसरा प्रकारमें अतीसारका भाव ज्यादा होताहै पहले प्रकारमें हर्रे मिश्रित योग देना लाभ प्रद होताहै दुसरे प्रकारमें हिग्वष्टक, लवंगादि चूर्ण आदि देना ठीक है।

साधारण अजीर्ण रोगमें ३-६ औंस गर्म पानी आहारके २ घंटे पहले १० मिनट् समय लगाके धीरे २ पान करना चाहिए। ऐसा १०-१५ रोज अभ्यास करनेसें पुराने अजीर्ण रोग अच्छा होताहै । अरुचि, अग्निसंद आदि होनेसें भोजनसें पहले सैंधा नमक अदरकके टुकडेके साथ मुंहमें हिलाते २ रखना चाहिए । कभी २ बात प्रबल अग्मिदमें हिंग्वष्टक चूर्ण घी पिघलाके पहले ग्रास भोजनमें खाना चाहिए। पंच ग्रास भोजनमें घीके साथ भोजनकरके पिछे यथेष्ट भोजन करना यह शास्त्रोक्त विधान है। तथा अग्निसंद और अरूचिमें लाभ प्रदहै । हिंग्वष्टक चूर्णके बदलेमें केवल असली हिङ् शुद्ध करके उसका चूर्ण जराके योग पहले भोजनके गासमें गोघृतके साथ मिश्रित करके गर्म रहते ही खाना चाहिए । खानेके

बाद वायु बढना, उल्टी सीधी डकारें आने लगती है तो अजवायनका चूर्ण ३ माशा खानेका सोड़ा सज्जीक्षार दो माशेकी फाँकी लेकर ऊपरसें दो चार घुँट गर्म जल पीना सर्व्वोत्तम होताहै । इस नियमको कुछ दिन करते रहनेसें पुराना अजीर्ण नष्ट हो जाताहै ।

अम्लपित्त शूल अथवा अम्ल शूलः—

खाया हुवा पाक नही होना बैठनेसें भी थकावट मालूम होना, उक्लेश, तीता खट्टा ड़कार आना, शरीरमें बोझापन होना, गले और हृदय प्रदेशके कुछ नीचे दाह होना और अरुचि ये अम्लपित्तके लक्षण हैं।

चिकित्सा:— इस रोगमें अजीर्ण नाशक तीव्र अग्नि वर्द्धक महौषधि सेवन करनेसें अम्लपित्तकी पीडा शान्त न होकर अधिक बढ़कर आताहै । इसमें पित्त नाशक द्रव्योंके साथ अनुष्ण वा शीत वीर्य लवंग आदि द्रव्य और कुछ वायुको अधो नयन करने वाला हरीतकी कालाजीरा (स्याही जीरा) गुलाबके फूल, सौंठ आदि द्रव्योंका औषध रूपमें फायदामंद होताहै ।

धनियाँ, सौंफ, गुलावके फूल, हर्रे सबसमान मात्रामें लेके खुराक १ तोला मंदोष्ण जलसें सेवन करना चाहिए।

इसरोगकी पीडाके लिए वायुको अधोनयन करना यह सर्व्वोत्तम है । अतः हरीतकी और सौंठके योग (हर्रे २ भाग सौंठ १ भाग) करके २-२ मापाके खुराक मिश्रीके मन्दोष्ण काढेके साथ खाना चाहिए।

(२) पानी वाले नरियलके मुंहमें छिद्र करके इसके भीतर अजवायन औ सैंधानमक रखकर भरदेना पीछे मुख बन्ध नरियलके उपर मिट्टी और कफसें लेपकरके नरियलके अग्नि दग्ध करना शीतल होने वाद कपडे और मिट्टी फेक देनेसें पश्चात् समस्त नरियलको एक साथ चूर्ण करके १२-१५ रत्तीके खुराक खानेके बाद दिनके ३ दफे खानेसें गले और छाती जलना आदि उपसर्ग जल्दी अच्छा होतेहै ।

कोष्ठ वद्धता अर्शरोग (Constipation and Piles (Dry & Bleeding) :—

चिकित्सा:— अडीको तेल २ तोला वा राजवृक्ष १२-२० चकि अपने पेटके अवस्था देख करके मात्रा अनुसार गर्म दूधके साथ खाना अच्छा होताहै ।

साधारणत सदा वैठरहने वालेको गुरुपाक द्रव्य, अत्यन्त स्नेह वा अत्यन्त रूक्ष, अन्न खानेसें प्रचण्ड धूपमें ज्यादे पैदल खूब घुमनेसें अर्शो रोग होताहै । मदिरापानके अभ्यास वालेको भी अर्श होताहै । अतएव उक्त रोगका निदान छोडना चाहिए । उक्त दोनो रोगकी चिकित्सा एकही प्रकारकी होताहै । अपना वायु खुलानेका अग्नि ठीक रखनेकी क्रिया अच्छी होतीहै । यकृद्यन्त्रका ठीक ठीक क्रिया चलानेका पद्धति राखना चाहिए। नित्य पेट साफ करनेके लिए, खजूर ३ तोले किसमिस १ तोला प्रत्यह खालि पेटमें गर्म दूधके साथ खाना चाहिए अर्श रोगका योग (फलवद्) निम्नलिखित हैं ।

(१) गुल कन्द, हर्रे मुब्बा, खूब पाका पपीता, बेलके शर्ब्वत प्रत्येक सुवह खाना चाहिए।

(२) गुडकल्प (हर्रे और गुड) पकाकर गोली ½ तोला रोज गर्म दूध या पानीसें खाना चाहिए।

इससें अर्श रोगका नाश होताहै। तरकारी चौलाईकाशाक, गोल बैगन, पुनर्नवा, वेथुके, राईका और मुरहीका शाक, रसदार खानाके नियमित सेवन करना चाहिए अशको हितकर होताहै। शूरणका अचार, आँवलेको चटनी, सैंधान मक मिलाया हुवा साथ साथ भोजनमें खातेरहना चाहिए।

अर्श रोगको दो प्रकारका होताहै (१) खून वाला (२) खून रहित वाला।

अर्श रोगको रक्त स्रावमें गूलरके निर्यास अथवा गूलरके काँढासें गुदद्वार साफ करना। गूलरके निर्याससें मोचरस (सेमलका निर्यास) खाना चाहिए। फिट्किरी ३ रत्ती सालधूप १ माशा × सेमलका निर्यास पानीसें खाना चाहिए। दिनमें एक वार त्रिफलेके पानी १ पाव भर पीना चाहिए।

इसरोगमें निम्नलिखित मुष्टि योग सेवन करना अच्छा होताहै:—

(१) गुलकन्द (गुलाब फूल मिश्रीमें पाककिया हुवा) १ तोला परिमाण नित्यरातको सोते समयमें खाना चाहिए।

(२) हर्रे गोघृतमें भुजकर इसका चूर्णमें विट्लवण ¼ भाग मिलाकर ½ तोलेकी मात्रा रोजही सेवन करना चाहिए ।

(३) कालेतिल १ तोला पिसके पीसा हुवा में मख्खन और मिश्रीसें या गर्म पानीमें जीरेका और सैंधा नमकका चूर्ण मिलाकर दिनमें अधिक परिमाण नित्य खाना अच्छा होताहै ।

(४) अर्श रोगमें वेदना (टन् टन् पीड़ा) होनेका प्रकारमें गेहूंका आटेकी पुल्सिमें भांग पिसा हुवा मिलाकर गरम करके सेंकना इससें खून मस्सेमें जमा होकर रक्तस्राव होनेका धीरे धीरे डरनही होताहै ।

(५) ऋतु हरीतकीः— इसके विधि अनुसार सेवन करनेसें अर्श और कोष्ठबद्धनामें विशेष उपकार करताहै ।

ऋतु हरीतकी विधिः— प्रत्यह पकाहुवा हर्रे १ ठो वर्षाकालमें थोड़ासा सैंधा नमक मिलाकर, शरत्कालमें चिनीके साथ, हेमन्त ऋतुमें सोंठके साथ, शिशिर ऋतुमें पिप्पलके चूर्ण थोडाका साथ, बसन्त कालमें शहदके साथ ग्रीष्म ऋतुमें पुराने गुड़ वा शख्खरके साथ खाना । एक हर्रेके बदलेसें ¼ तोला हर्रेको चूर्ण लेनेसें भी होताहै ।

गर्मी प्रकृतिके व्यक्ति यौं के लिए सबेरै ठंडे पानीमें कागतिका रस मिलाकर खाना । बात श्लेष्म प्रधान (ठंडा प्रकृतिके लोगोंके) लिए प्रत्यह गर्म पानीमें निम्बुके रस मिलाकर खालि पेटमें खाना बहुत अच्छा होतहै । इससें यकृद् यन्त्रठीक क्रिया करेगा, अपामागका मञ्जरी फटनेसें

एक बीज निकलताहै । यह रक्तार्श अर्थात् खून आने वाला अर्श रोगका अमोघ औषधिहै । इसकी खुराक ½ तोलाका है । यह खुराक मोटासा चावल धोवा जलके अनुपानसें खाना ।

कुड़ेकी छाल २ तोला २ पाव पानीमें पकाकर आधा पाव शेषकर आधा पावके खुराक सवेरे शाम खालि पेटमें पीनेसें अमोघ फल प्राप्त होताहै ।

कृमिरोग:— कृमि (Worms) बहुत प्रकारके हैं। तो भी वढे कृमि गराडुपदके आकारके कृमि, चूर्ण कृमि, फिते जैसा कृमि, हुक् जैसा कृमि, कृमियाँ साधारणत: देखे जातेहैं गराडूपद कृमि सबोंको होताहै इस कृमिके दोषमें लड़के लोग निद्रावस्थामें अपने दाँतको काटतेहैं उल्टी जैसा रोगीको अनुभव होताहैं, वान्ता भी होताहैं मुखमें भरा हुवा पानी होताहै । नाकमें कराड्डात, पेटमें दर्द, दुर्व्वल परिपाक शक्ति होताहै।

कृमि रोगकी चिकित्सा निम्न लिखित है:—

(१) चार आने भरका खुराकमें पलाशके बीज (ढाकके बीज) हिङ्, कपूरको कॉढाके साथ खाना ।

(२) वायु विडंगके चूर्ण ५-१० माशेकी मात्रा करके उष्णोदकसें खाना ।

(३) चूर्ण कृमिके वास्ते प्याजके रस २ तोला साबुन घोलाहुवा पानीमें मिलाकर गुदद्वारसें पचकादेना चाहिए ।

(४) प्रथम पुराने गुड १ तोला खाकर मिर्च,

अजवायनका चूर्ण ४-८ रत्ती बासीपानीके साथ खानेसें ७ सात दिनतकमें कृमि समूहको गिरा देताहै ।

विशेष द्रष्टव्य:— ऊपर लिखे ये मुष्टि योग सेवन करते ही कृमि बाहर नही आने पर आधा छटाक अथवा उम्रका अनुसार मात्रा ठीक करके अंडीके तेल छटाक छटाक गर्म पानीसें खानेसें जीवित मराहुवा कृमि आसानीसें आजाताहै ।

कास रोग (खाँसी):— यह रोग गलेको या छातिकी खराबीसें होताहै गलेकी भीतरकी खराबीमें टंसील बढ़ना गलेसें छोटा २ सा दानेदार क्षत आदि और गलेके भीतर शोथ होना, गलेके भींतर लालहोना या कफ भराहुवा जैसा आर्द्र होना इत्यादि । साधारण ठंडीसें अजीर्ण रोग होनेसें भी खाँसी देखी जातीहै । विशेषतः श्वासयन्त्र वा सँस्थानके शोथ, कफ छातीमें खूब सञ्चय होना इत्यादि कारणसें खाँसी होताहै । खाँसी होनेसें कारणोंका अन्वेषण करके चिकित्सा करना चाहिए । अर्थात् गलेका दोष होनेसें किस कारणसें हुवा इसको पत्तालगाना । ठंडी लगजानेसें हुवा की, पेटकी खराबीसें हुवा क्या ? इसका कारण पत्ता लगाना चाहिए । पत्ता लगानेके बादही चिकित्सा करनीं चाहिए । खाँसी कफ ज्यादा बढनेसें हुवा क्या ? सुख्खी खाँसी है कि, इसका खूब विचार करना चाहिए ।

खाँसीकी निम्न लिखित औषधियां है:—

(१) साधारणतः जुकाममें खाँसी होनेसें तुलसीके पत्तेका रस गर्म पानीसें खाना ।

(२) पुराने ज्वरमें छातीमें दर्द और खाँसी होनेसें तुलसीके पत्तेके रसमें मिश्री वा शहद मिलाके खाना चाहिए। मात्रा २ तोलाका करनेसें इस रोगमें खूब फायदा होताहै।

(३) प्लुरिसी (उरस्तोय रोग) संवन्धित काससें तुलसीका वीज ३ माशे की मात्रामें शहदके साथ खाना चाहिए।

(४) वातिककास (हूपिङ् कफ) के खाँसीमें तुलसीका बीज ३ माशा कुठ १ माशा, कालामिर्च १ माशा मिलाके शहदके साथ दिनमें ३ बार खाना चाहिए।

(५) साधारणतः जुकाममें तुलसीका चूर्ण नस लेना चाहिए।

(६) सर्दीसें ही कास होनेसें अदरकके रसमें पुराना घी मिलाके गर्म गर्म छातिमें मालिस करना चाहिए।

(७) सर्दीसें हीं संक्रमण होके खाँसीं होनेसें अत्युष्ण जलमें थोड़ासा सरल तेल (तापिनका तेल) मिलाके वाष्प नाकसे लेना चाहिए।

(८) बर्रेका वीज १ तोला शहद ३ तोला मिलाके गोली बनाना थोड़ासा २ चूषना चाहिए।

(९) छातिमें और गलेमें कफ वृद्धी होकर संचय होनेसे दमा और कास आनेसे १। १ माशा पिपलीचूर्णप्रक्षेप करके श्रंग्यादि काँढा अथवा कर्कटश्रृंगी, कुठ, त्रिकटु, कंटकारी, का काँढा दिनमें ३ बार खाना चाहिए।

(१०) नयें जुकाममें खांसी देखनेसें ६।७ बार उष्णोदकपीना चाहीए। जुकाममें खूबगर्म वाला कपडेसें सारे वदनको ढाक कर चूपहोकर दिन भर वैठना सबसें अच्छीचिकित्सापद्धतीहै।

२ श्वासरोग (दमा) :— साधारणतः छातीमें शीत लगजानेसें श्वास लेते समय कष्ठ होकर श्वास रोग पैदा होताहै। यह रोग वाल्य, बृद्ध, युवा, तीनो अवस्थामें हो सकताहै। विशेष करके वृद्धावस्थामें एक प्रकारका श्वास रोग प्रायः हृदय की खरावीसें होताहै। सिगरेट, बिडी आदि सेवनकरने वालेको श्वासरोग अधिक वढी होता हैं। इस कारण बहुत दिनसे कासरोग की उपेक्षा करनाहै।

सभी किष्मके श्वास रोगमें ज्यादा गर्मी करना उचित नही होताहै। अप्रत्यक्ष रूपसें हवालेना चाहिए। खिडकी, और दरवाजे बिलकुल वन्द करना भी ज्यादा फायदा नही होताहै। शीतलता थोडा और सरल होना चाहिए यद्यपि श्वास रोग प्रधानतः श्वास नलिका और श्वासयन्त्रौंका आश्रय करके होताहै। तथापि साधारणतः अथवा मुख्य रूपसें पाकस्थली वढी अतडीमें दोष होना तथा शोषण कार्य ज्यादा होकर मल मोटा रहना आदिसें भी श्वास रोग होताहै। ऐसे दशामें वाहरसें पेटमें सन्द स्वेददेना, मल वाहर निकालनेके लिए तथा स्नेहन करनेके लिए रेडीका तेल ठीक ठीक मात्रामें नित्य खाना अच्छा होताहै। इसरोगकी चिकित्सा करते रातमें सोते समय पेट भारी होकर हृदयमें चाप न होजाय निद्रामें व्याघात

न होजाय अतएव १ रातमें सोनेको ३ घंटे पहले लावा दूध, पाउरोटी, फूलका दूध आदि उचित पथ्य देकर रखना चाहिए। श्वास रोगकी औषधि निम्न प्रकारकी है। यथा:-१ धतूरेका फल आदि पांञ्चगको कुट कर चूर्ण बनाकर रखना इसको थोडी सी आँगमें रखकर धूवांलेना अथवा कागजमें भीतर रखकर सिगरेट् जैसा बनाकर धूवालेना चाहिए। इससें प्रवल श्वास जल्दी शान्त होताहै।

(२) मयूर पुच्छ मिट्टीके भीतर रखकर मुख बन्ध कर कमर मिट्टी करके पुटदेनेसें जो भष्म तैयार होताहै। इस भष्मसें श्वस रोगसें फायदा होताहै इसकी मात्रा ८ गेन् इसका सहपान पिप्पलका चूर्ण औ सहद अथवा तुलसीका काँढा या स्वास होना अच्छा होताहै।

(३) एक दो वर्षके पुराने गुड १ तोला अच्छा सरसोंके तेलमें मिलाकर नियमित रूपसें संध्याकालमें २१ रोज सेवन करनेसें पुराना दमा रोग अच्छा होताहै।

(४) अडूसाके पत्तेको बिडी जैसा बनाके धूम्रपान करनेसें श्वास रोगमें फायदा होताहै।

(५) आँकके जडको चूर्ण बनाना इसी चूर्णको दूधसें भावनादेना अच्छा होत है। पीछे धूपमें सुखाना पीछे सिगरेट् जैसा बनाकर धूवालेनेसें अत्यत्त श्वास रोगका कष्ठ दूर होत है।

(६) (Cochroach) इसको नेपाली भाषासें "साङ्ग्लो" कहतेहै इसका काँढा बनाकर मृत सञ्जी बनी सुराके साथ समांश भागसें मिलाना १०-८ बूंदके खुराकमें

नित्य गर्म दूधके साथ खाना चाहिए। इससें रातको दमा उठकर निद्राको व्याघात नही होताहै। तमक श्वास रो.की एक असोघ औषधि है जोकि मैने बंगालमें शिक्षा प.ईथी।

रक्त पित्त रोग (Haemtemses) इस रोगमें दूषित याने प्रकुपित्त पित्त रक्त वाहीस्रो तों के मुहमें रहकर रक्तको दूषित करता हैं। मनुष्योंके मुख नासा तथा पायखानाका रास्ता, पेशाबका रास्ता, आदिसें खून बहताहै। बीमार आदमी दुर्व्वल होनेसें फौरन खून बन्द करना अत्यावश्यक हैं।

इस रोगकी औषधि (१) अडूसाके पत्तेके स्वरसमें शहद मिलाकर अथवा मिश्रीके चासनी मिलाके खाना अमोघ औषधि होताहै।

इससें खाँसी सहित श्वास रोगमें फायदा होताहै।

द्रष्टव्य :— अडूसोके पत्तेको महीन करके कपडेमें निचोडनेपर रस आताहैं। अडूसाके पत्तेको पानीमें रखकर उबाँलनेसें भी रस आताहैं किन्तु गुणमें पूर्वोक्त स्वरससें कमी होतीहै। रक्त पित्त रोग होते रहने वाले रोगीमें क्षयातु वन्ध अर्थात् क्षय संबन्धित नही होगा यह कहनाही पडता है। क्षय संबन्धित रक्त पित्तके अलावा केवल रक्त पित्त रोग भी होताहै अतः क्षय संबन्धित रोग रोग हो या न हो अडूसेका अवलेह सवेरै और साम नित्य दूधसें खाना उत्तमहै अडूसेका सेवन करते समय मिश्रीके साथ सेवन करना श्रेयहै। कास, और, शरीरक्षीण, रक्त-

पित्त ये तीन लक्षण संयुक्त होनेसें अडूसेका अवलेह सवेरै और साम नित्य दूधसें खाना उत्तम है।

(२) इस रोगमें दूर्वा (दूव) वढी दवाहै। साधारणतः नीलवर्ण और श्वेतवर्णके दुर्वा प्रयोगमें आतेहै। व्यवहारमें नीलवर्णका प्रयोग होताहैं। तोभी श्वेतदुर्वाका गुण प्रशस्तहै। उक्त रोगमें रक्त रोधनके के वास्ते दुर्वा महौषधहै। रक्त पित्त रोगमें दुर्वाका रस १ चमच भरमें शहद वा चीनी मिलाकर खिलाना अच्छा होताहै। रक्त शोधनके लिएभी चीनी और दुर्वा सक्षमहै। अतः इसका स्वरस १-१ चमच भर ३ ३ घंटेके वाद देतेरहना। नाकसें रक्तस्राव होनेवाले रक्तपित्तमें दुर्वाके रस नस लेनेसें शीघ्र उक्त रक्तस्रावबन्ध होताहै।

वमनमें खून आनेवाले और योनिसें खून आनेवाले रक्त पित्त रोगमें दुर्वाके रस १ तोलेमें कुछ चीनी मिलाके दिनमें ३-४ वार खाना चाहिए। मात्रा दुर्वाके रस पूर्ण वयमें चमच तक करना अच्छी होतीहै। सेमलके फूलकी तरकारी वनाकर खाना होताहै। घीमें पकानेसें यह पौष्टिक होताहै। इस फूलकारस १-२-३ चमच शहदकेसाथ खाना चाहिए। फूलका चूर्ण ¼ ¼ तोलाके खुराक मिश्री पानीकेसाथ खाना चाहिए। रक्तपित्त आदि रोगमें फायदा देताहै। नाकसें खून गिरनेवाले रक्तपित्त रोगमें चीनी मिलायाहुवा पानी नाकसें लेना चाहिए। रक्तपित्तमें वेदानेका फूलकारस नाकसें लेना चाहिए।

पथ्य:—नमक नहींखाना नरियलका पानी पीना, पपीता, वेदानाईख, फलौंका रससे वमनकराना बेथूकाशाक, मेथि चौलाई, पालक, मटरका शाक अच्छे होतेहें।

राजयूक्ष्मा रोग:–इस रोगमें शरीरका एलिमेन्ट तत्व (रस रक्तादि धातु) क्षीण होताहै। ज्वर कास रक्तपित्त सयुक्त फेफडेगा खराबीका लक्षण देखनेमें आताहै। अनुलोम, प्रतिलोमको भेदसें दो प्रकारका क्षय होताहै। अनुलोममें रसरक्त, माँस आदि क्रमसें क्षीण होजाताहै। प्रतिलोममें धातु शुक्र) क्षीण होनेसें मज्जा क्षीण होनेसें अस्थि इत्यादि क्षीण होताहै।

साधारण क्षय कहनेसें शरीरका तत्वका ह्रास होना सम्भाजाताहै। क्षयरोग शरीरका अंतडी आदि यन्त्रमें होताहै। विभिन्न क्षयका नाम अलग अलग होताहै।

चिकित्सा: – हरप्रकारके क्षयमें लक्ष्य एकही होताहै। शरीरमें क्षय नही होने देना। क्षयका निदान छोड़ना अर्थात् सेवननही करना। पेटका अग्निवर्द्धक तथा धातु (सप्तधातुऔकापाक करनेका (Enzime) तथा पञ्च महाभूतका पाक करनेका त्रयोदशविध अग्निकाठीकठीक पाक करनेका आहार विहार, सुपाच्य पौष्टिक आहार मितविहार स्थिर कायम रखना चाहिए। उपद्रवौंको देखनेसें उनका निराकरण करना सबसें अच्छी चिकित्साकी प्रक्रियाहै।

औषधियां – फेफड़ेको क्षयरोगमें अडूसाके सत्वदूधमें फाइदा मन्दहै।

(१) अडूसाके पत्तेकारस १-२ चंमचभर शाहद और पीप्पलीका चूर्ण मिलाकर नित्यचिरकालतक खाना इससें मुखसें निकलाहुवा खून आनेवाला क्षय और रक्तस्राव रहित क्षयरोग दोनो क्षयमें आरोग्य लाभ होताहै ।

(२) वलाका पत्तेकारस २-३ तोला दूंधसें खाना चाहिए। सेमलकी जडोंका काँढा दूथसें खाना उत्तमहै। सफेदमुपली अथवा कालेमुपली घीमें छानकर चूर्णबनाकर १-१ तोला खाना उत्तम है।
अश्वगंधका चूर्ण ५ मासे मिश्री मिलाके पानीकेसाथ खाना चाहिए। फुस्फुस क्षयका यह प्रत्येक योग अचूकहै।

(३) शिलाजीत १-२ माशे नियमित सवेरे और शाम दूधसें बहुत दिन तक सेवन करना अव्यर्थ होंताहै।

(४) अश्वगंध चूर्ण १ तोला सफेद मुपली ४ माशा योग करके नीरोगी गौके दूधसें खानेकावाद खाना चाहिए। खानेके पहले अग्नि वर्द्धक दवाभी खाते रहना चाहिए। दिनमें दो वार सितोपलादी १-१ माशा सुंगाभष्म २-२ लाल योग करके खाते रहनाभी चाहिए।

(५) बहुत दिनोंसें पुरीप संबन्धित विकार होकर अंतडीके विकारोंमें तथा क्षय विहीन अन्त्र विकारमें ग्रहणीरोग नियन्त्रण करतेही वृहण पौष्टिक महौपधि

खाना चाहिए। इसमें सेमलके फूलके रस या कांदेमें बकरीके दूधमें पकाकर खानेसें बहुत लाभ होताहै।

(६) आन्त्रिक क्षयमें कच्चावेलका चूर्ण ३ तोलाके खुराक बकरीके दूधमें अथवा उष्णोदकसें रोजही खाते रहना चाहिए।

(७) ग्रहणी आन्त्रिक क्षय रोगमें चितेकामुनाका तरकारी, कच्चाकेला, मुसूरकीदालसें, बकरीका दूध आदि पथ्योंको देकर पिप्परमेन्टके पत्तेका रस ३-३ तोलामें जीरेका चर्ण २ माशा मिलाकर दिंके ३ वार खाना चाहिए।

(८) बेलके पत्तेकारस १ चंमचभरमें चतुर्थांश शहद मिलाकर दिनमें ३ वार खानेका २१ रोजका कोर्श पूराकरनेसें और साथही अन्त्रौका पोषक मूघलीं घीमें भूनकर बकरीके दूधसें या गौका दूधसें खानेसें अवश्य उम्दाफल मिलाताहै।

अरूचि (Loss of Appetite)

यह रोग विभिन्न कारणसें होताहै। इसका उपज करनेवाले दोषोंका नाशकरना आवश्यक होताहै।

साधारणत गर्भिणीमें गर्भका दोपसें तथा रोगोंमें रोगका कारणसें यह रोग होताहै।

चिकित्सा:- साधारणत: अरोचकके चिकित्सा करते मनके अनुकूल तथा प्रफुल्लता संपादन करनेवाला पथ्यौषकि सेवन करना चाहिए।

मुख्यत: पेटका तथा धात्वग्नि प्रदीपन करनेवाला

खाना खाना चाहिए। जीभ सफारखना, गलेकाभी तरकाकफ फेकना श्रेयहै। इसमें अरूचिहट जाताहै।

योग (महौषधियां):—

(१) प्रत्यह दिनरातको भोजनके पहले अदरकके टुकडे तथा सैंधानमकका चूर्ण एकसाथ चबाकर खाना गर्मपानी ३-४ औंस पीना चाहिए।

(२) शहद, विट्लवण, खट्टादारिमका रस मिलाके खालिपेटमें नित्य चटनी बनाके चाटना चाहिए।

(३) कागती निम्बूका रस+अदरकके रस समान भाग मिलाके शीशीमें कर्क बन्दकरके रखना चाहिए। इसके रासायनिक संयोगसें लालरस होताहै। इसीमें थोडा विट्लवण मिलाके रखना चाहिए। खालि पेटसें ३० १५ बूंद जीभमें रखकर गर्मपानी १ घुंट पीलेना आवश्यहै।

(४) अबीलोण (चांगेरी) का स्वरस १ तोलामें शहद थोडासा मिलाकर दिनमें ३ वार चाटनेसें अरूचि-छुट् जायगी। अरूचि रोगका महौषधि चरकोक्तयमानी षाडव सर्वोत्तमहै।

छर्दि (Vomiting):— वमन विभिन्न रोगके कारणसें होताहै। जिनजिननिदान सेवन करनेसें हुवा है। उनउन निदानको हटानेसें वमन शान्त होजाताहै। सहसा वमन होनेसें आमाशयमें दोप कम करनेकेलिए कुछउपाय करना चाहिए।

साधारणतः उल्टी होनेके समयसें दोपकम करनेके

लिए कुछ उपाय करना हए। जैसा वमन नाशक अलैंची (बडी और छोटी) आंवलेका वीज भीतरका, बेदाना इत्यादी खाना चाहिए।

औषधियां:—

(१) पिपलके त्वक् भस्म पानीमें घोलकर थोडा २ चंमचसें खातेरहनेसें छर्दि छुट् जायगी।

(२) दुगुने धनियाँ आधा हर्रे भिजाया हुवा पानी १-२ चंमचभर खाते रहना चाहिए।

(३) पद्मक (पद्माख) के पत्ते कारससें धनियांका चूर्ण मिलाकर यह अनूपम योगहै।

तृष्णा रोग चिकित्सा -

प्यास ज्यादा लगजानेका विभिन्न कारणोंसें होताहै। अतएव वेकारण हटाना चाहिए।

साधारणसें वायुसें प्यास होनेपर गर्मपानी १-२-३ घुंट पीलेना चाहिए। गुर्चकेरस २-२ चमच पीलेना। दहीमें थोडासा पुराना गुंड मिलाकर खाना उत्तमहै।

पित्तके प्रकोपसें हुये प्यासमें पद्माखके पत्तेका रस १-१ चमच पर श्रीखण्ड चदन मिलाके पीलेना चाहिए।

वरके अंकुर, नीलकमल, मुनक्का इनका कांढा वनाकर खाना चाहिए। इन द्रव्यौंका प्रत्येक कोई एक द्रव्य मुहमें रखतेही रखनेसें तृष्णा कम होतीहै।

मूर्च्छा:—

यह रोग मनोवाहीस्रोत (शरीरका भीतरका स्रोत,

चक्षुरादि बाह्येन्द्रिय शिरा, धमनी आदि तथा नाडीके आश्रयके इन्द्रियस्थानके केन्द्र किंवा संज्ञावाही नाडी आदिमें जब मिथ्या अनेकन आहार विहारसें प्रकुपित रोग उत्पादक दोषके आश्रित होताहै । किंवा त्रिदोषमें आच्छादन करताहै। तब सुख और दुःखका अनुभव नहीं होत है। ऐसी पीडाको मूर्च्छा कहतेहैं। आयुर्वेदके मतमें मात्र मनोवाही स्रोत माना गयाहै। एलोप्याथिक मतमें मनोवाहीस्रोतका कथनहै नहीहै। यह आयुर्वेद शास्त्रके विशेषताहै।

इस रोगके मोहावस्थामें चिकित्सा करते निदानका इयत्ता लगाकर मूर्च्छासें रोगीको स्वस्थ करनेका प्रयत्नकरना सबसें अच्छा होताहै। वातपित्त कफका प्रकोप होनेसें मूर्च्छा होवेतो उक्त दोषके नाश करनेमें दृष्टिकोण देना अच्छाहै। खूनके गन्ध सुंघनेसें या खून देखनेसें मूर्च्छा होवेतो शीतल क्रियाकरना । मद्यपानसें मूर्च्छा होनेसें उदरस्थ मद्य वा विष पदार्थके वमन कराके रोगीको स्वस्थलाभ पर्यन्त नीद आनेको देना अच्छाहै।

चिकित्सा:—

(१) अनेक समय नस देनेसें भी मूर्च्छा खुल्ताहै। नस्य द्रव्योंमें सैंधानमक कालीमिर्च, पिपली, वच इनसब द्रव्योंमें यथालाभ द्रव्यको पीसके नसलेना चाहिए।

(२) कायफलकेत्वक्के चूर्णका नसलेना चाहिए।

(३) कपिला गौके ताजा उष्णगोमूत्रके नस लेनेसें अपस्मारजन्य मच्छा खुलतीहै। यह गुरू परंपरा आयाहुवा योगहै।

(४) गर्भिणी वा प्रसूतिका अवस्थामें मूच्छा होनेसें पसीना बाहर निकाल्नेका फल और विरेचन क्रियासें भी मूच्छा हट्ताहै। ऐसीदशामें विरेचन देनेके लिए जयपालके तेल २ बुंद जीभके उपर रखना चाहिए। इससें कोष्ठसें उक्त रोगका विपयका नाश होताहै।

(५) सन्यासके मूच्छा होनेसें प्रकृतिके उपर भावीफल ज्यादासें ज्यादा निर्णय होताहै।

(६) सादा प्याजकारस सुंघाना यदि योषा पस्मारसें मूच्छा हुवातो छुट् जाताहै।

(७) मस्तिकमें रक्तस्राव होकर मूच्छा हुवातो विश्राम तथा शान्ति ज्यादा आवश्यक होताहै।

(८) शिरमें उष्णता अधिकहै तो शिरमें वर्फ और पानी पट्टी देतेरहना फायदा मंदहै।

(९) रोगीके ओष्ठ और आँखमें शीतल जलसें पोछना। रोगीके हिलाकर चित्कार शब्दसें रोगीके, सामने हल्ला नही करना चाहिए।

(१०) मूच्छाकी स्थिति दीर्घकाल होनेसें शतावरीके मूलके काँढ़ेमें दूध मिलाकर स्नेहवस्ति (एनिमा) नित्य देना उतम है।

(११) मूर्च्छाकी अवस्थामें ठंडी पानी अथवा गुलाब

जल मुंहमें प्रक्षप करना चाहिए ।

(१२) नौसागर ६ मासे सूखेचूना ६ मासे योगकर एक शिशीमें रखना चाहिए। आवश्यक अनुसार १०-१५ मिनटके अन्तर ३-४ वार सुंधाना चाहिए । किन्तु इस तीव्र औषधिका आघ्राण अधिक समय तक नही देना ।

(१३ श.हद, सेंधा नमक, मन शिला, मरिच इन चार चीजोंको पीसकर अञ्जन लगानेसें मूर्च्छा हट जातीहै ।

(१४) मूर्च्छा वाले रोगीमें सर्व्व प्रथम मूर्च्छा हटानेका यत्न करना सर्व्वोतमहै । मूर्च्छा खुलनेके बाद इसका करण पत्ता लगाकर रोग हटाना आवश्यक है । लेखकका देखा हुवा मूर्च्छा खुलानेके सफल योग ईस— प्रकारका है ।

(क) मरिचकेचूर्ण और तुलसीका पत्तेका रसमें पिसकर नाकके भीतर डालना चाहिए ।

(ख) दुसरा योग हे कायफलके त्वक्के चूर्णको नस्य लेनेके विधिसें वेमारीको पीछे पृष्ट प्रदेश रखनेका आसनसें सिधा सुवाकर नाकके छिद्रसें नस लेना चाहिए। दूसरा छिद्रबन्धकर थोड़ीदेर दुसरे छिद्रसें नस्य लेना, फिर दूसरे छिद्र वन्धन करना थोडीदेर दुसरे छिद्रसें नस्यलेना, फिर इसरा छिद्र वन्धन करना थोडीदेर दूसरे छिद्रसें नस्यलेना चाहिए । इसीक्रियासें मूर्च्छा खुल जायगी ।

अपस्मार, मृगी, उन्माद रोगः– (Apilepsy and Iasanity) व्यवहारमें अपस्मार रोगको मृगी रोग उम्मादको

पागल रोग कहते हैं। उनदोनोरोगकी चिकित्साकरते किस जरिएसें रोग पैदा हुवा है। उत्तेजक कारण पूर्व वर्त्ती कारणके विचार करके निदानोंका सर्व्वथा त्याग करना सर्व्वोत्तम चिकित्साहै। आयुर्वेदके मत के रोगउद्भवके सिद्धां त्तत्रिदोषके प्रकोप है। अतः इन दोषोंके शमन रोग निर्मूल होताहै। मूर्च्छाकी अवस्था हटजायतो प्रायः उक्त दोनो रोगकी चिकित्सा मिलती जुलती है। उक्त दोनो रोगकी सामान्य चिकित्सा निम्न लिखित प्रकारकी है।

(१) रोगीके मन, बुद्धि स्मृतिको साफ रखना चाहिए। (२) ब्राह्मीके स्वरस १-२ छोटे चंमच भरके खुराकमें कुठके चूर्ण ४ रत्ती मिलाके शहद वा दूध मिश्रीके साथ नित्य बहुत दिनों तक खाते रहना चाहिए। (३) ब्राह्मीके स्वरस १ सेरमें तिलका तेल १ पाउ मिलाके पकाना तेल बाँकिसें उतारना यह तेल नित्य मालिस करना चाहिए। (४) गायके घी खूब पुराना नित्य अनेक दिन खिलाना चाहिए। (५) अपामार्गके मूलके चूर्णसें मरिचका चूर्ण मिलाकर नस देनेसें मूर्च्छा खुलती है।

(६) उक्त दोनों रोगसें आरोग्य प्राप्तिके लिए जटामसी १ छटाक पानीसें भिगोकर दुसरे दिन कपडेसें छानकर मिश्री पानीके साथ नित्य खाना चाहिए। (१०) स्त्रीजातियोंके रक्तके खराबीसें अपस्मार (मृगी) होनेसें घिउ आरके रससें जटामसी और इलाएचीके चूर्ण मिलाकर नित्य सवेरे और साम १-२ महिना तक अटूट खानेसें वहुत फायदा होताहै।

वात व्याधि (Nervines diseases):— वात व्याधि कहनेका अर्थ है वे रोग वायु प्रकोप होकर याने घट बढ होकर जो रोग पैदा होतेहै। वायुके रोग (वात-व्याधि) शास्त्रमता नुसार अस्सी प्रकार होतेहैं। शरीरके एक अंग वा एक मरतवा अनेक अंगका आश्रयकरके वात व्याधि होताहै। यह रोग कफसें वायुको ढकनेसें अथवा पित्तसें संयुक्त वायु होनेसें होताहै। अथवा केवल (स्वतन्त्र) वायु मात्रका रोग होताहै। जैसे:— वक्त उद्धर्ष (ब्लड्प्रेसर) का रोग इसमें पित्त सावरण होताहै। अत: इसमें पित्त सावरण होताहै। एकङ्ग पत्ताघात आदिमें केवल स्वतन्त्र वायु प्रकोप ह्रास और वृद्धि होताहै। उरूस्तम्भ आदिमें कफके आवरण हुवा वात व्याधि होताहै। यद्यपि दोषौंका संयुक्त वात व्याधिसें उक्त दोषानुसार भी औषधिका प्रयोग करना ही पडताहै। तथापि साधारणतौरसें वात व्याधिकी चिकित्सा करते स्नेहन, छर्दन, स्वेदन, डूस देना, नस देना, लेह (चाटना) स्निग्ध, विरेचन अत्यावश्यक देनाही पडता है। स्निग्ध, लवण, अम्ल, मधुर, तथा पौष्टिक आहार इत्यादि शास्त्रीय तौरसें बतायाहै कि वैद्य देखकर सोच विचार कर कौनसी क्रिया ठीक होताहै। उसे त्र सोही क्रिया करनी चाहिए।

वात व्याधिकी चिकित्सा करते समय उपयोगी सिद्ध हुवा मेरे अनुभवके योग:—

(१) लहसुनका कंद पानीमें पिसकर तिलका तेल गर्म करके मिलाना शीतल होनेपर चाटते रहना चाहिए।

इससें एकाङ्ग बातमें फायदा होताहै यह २ महिना तकका कोर्स पूरा करना ।

(२) लहसुन और गोघृतका योग सिद्ध करके यह खाना चाहिए। यह दीर्घकाल तक सेवन करसें हानि नही होताहै।

(३ मुद्धकी चाल विगडी हुई एकाङ्ग बातमें और लहसुनके कदसें सिद्ध क्रिया हुवा दूध नित्य खाना अर्द्धाङ्ग बातमें फायदा होताहै ।

(४) "बीरबहुटी नामक" एक कीडा जिसको सँस्कृतमें इन्द्र गोप नामसें प्रसिद्ध है । इसका चूर्ण पानके पत्तेका रसमें पिंसकर खाना पीछे दूध पीना सर्व्वोपरि श्रेयहैं । लेखकने स्वतः रोगियौंसें खिलाकर अनुभव कियाहै।

(५) मुर्गीके मांस, माषके बीज, बलुके पत्ते, अश्वगन्धा, इनद्रव्योंको तेलमें पाक विधिसें पकाकर नित्य मालिस करना शतावर और ब्राह्मीका तेल दोनो एक साथ पकाकर शिरमें मालिस करना चाहिए ।

(६) मांस बातमें Mouscular Rheumatism में वन्य करीष भस्मसें मर्दन करना । सिन्धूर मधुमें मिलाकर मोटे कपडेमें रखकर लगाना उसके उपर प्लास्टर लगाना चाहिए ।

(७) नयाँ गोमूत्र गर्म करके कानके भीतर बूँद २ डालना कानका दर्द बात व्याधि अच्छा होताहै।

आधा कपाल दुखना (अर्द्धावभेदक) बातव्याधिमें – नव सादर+और हलदी मिलाके योग १०-१५ रोज नित्य

सवेरै श्रौर सामको खाना चाहिए।

(१) इसका योगका आघ्राणलेना भी चाहिए।

(२) कबूतरके मलमें कुष्ठ (कुठदवा) पिंसकर जिधर शिरमें दर्दहै उधर लगाना ७ रोजमें आराम होताहै।

(३) गर्मीहोकर कपालमें दर्द होनेसें वहदर्द आंखमेंभी दर्द होनेसें, दर्द मिटानेकेलिए गौके घीमें पानी मिलाकर खूब फिरना पीछे कपालमें घिशना चाहिए।

गृध्रसी वातमें:—

औषधि:—

(१) ऐरण्डतेल खानेमें श्रौर मालिसमें प्रयोग करना फायदा होताहै। विशेष त्रिफलाके काँढे (मन्दोष्ण) में उक्त तेल ½ श्रौंसतक २४ घंटेमें १ वार खाना चाहिए। विशेष दशमूलके मन्दोष्ण कढ़ेसें भी उक्त तेलका योग अच्छा होताहै।

(२) संभालूका पत्तेसें सेकना चाहिए।

नाडी दुर्ब्बलता संयुक्त वात व्याधि (Newresth-enca) में (१) मापका जडके काढेमें वलाका चूर्ण ½ तोला मिलाकर खाना चाहिए। (२) अश्वगंधका चूर्ण ४ मापा दिनमें दो बार दूधसें खाना चाहिए। (३) ब्राह्मी (तीते ब्राह्मी) के रस २-४ ड्रामतक शहदके साथ खाली पेटमें खाना अमोघफलदायी है। (४) शतावरके स्वरस

नित्य नियमित दिनमें दो बार खाना चाहिए ।

ग्रन्थि बात या संधिवात (Gowt) : –

यह रोग भी बात व्याधिमें अन्तर्गत होनेपर भी विशेष आमिषाशी लोगोंमें प्राय देखनेसें इस रोगकी चिकित्सा पुनः उलिखित हुवा: —

यह इस प्रकारका है । (१) हर्रासँभालूके त्वक्के काढेमें यवक्षार सु. नवसागरका योग ३-१ माशे तक दिनमें ३ बार खाना चाहिए ।

(२) गुरूच, गोक्षुरका योग समभाग ४ माशेका चूर्ण रेडीका तेल ½ आउँस और गर्म पानीके साथ सबेरै और साम खाली पेटमें खाना चाहिए ।

(मूत्रसें विषैली पदार्थ निस्सारण करानेकेलिए और मलसें विष दोष निस्सारकरानेके राजवृक्ष (अमलतास) का दूध १२-१५ चक्कि गोक्षर गुरूचके साथ १ सेर पानीमें धिरेधिरे पकाकर १ पाव शेपमें रेडीकेतेल ३-४ ड्राम मिलाकर नित्य वा १-२ रोजके अन्तर खाना चाहिए ।

(४) पद्मचालका मूल ५ माशेके खुराकमें यवक्षार ½ माशे मिलाकर गर्म पानीसें ७ रोज खाना अच्छा लाभ होताहै ।

(५) वेदनामें स्थानीय उष्ण परिषेक सर्व्वोत्कृष्टहै ।

(६) आमिषांश खानेकाहै तो कम करना सर्व्वोपरि श्रेयहै ।

वातरक्त इस रोगमें स्पर्शासह (Tenderness)

शोथ. वेदना, अंगुली आदिका संकोच आदि देखनेमें औषधि:—

(१) गेहूंका आंटा, बकरीका दूध, एरराड वीजका कल्क लेपकरना चाहिए।

(२) कालातिल पीसकर दूधमें पकाकर स्थानीय व्रण शरीरमें लेप करना श्रेयहै।

(३) मोम, सर्जरस, अनन्त मूलमें पकाया हुवा तेल, पिराड़तेलसें नित्य अभ्यंग वदनसें मालिस करना चाहिए।

(४) कुष्ठ रोगियौंको हितकर अन्य और पान दवा वासरक्त रोगीयोंकोभी हितकारक होताहै।

(५) विरेचन लगानेकेलिए त्रिफला, कटुकीका सम भाग ५ माशा रोज सवेरै ठंडी पानीसें पीना चाहिए।

(६) गुर्चका स्वरसमें मजीठके चूर्ण ५माशा मिलाकर आधिकदिनतक आन्तरिक सेवन करनेसें वातरक्त रोग नष्ठ होताहै।

(७) क्षति वनको अतर छालका क्काथ वनाना उसमें गोमूत्र सम भाग मिलाकर गोलीवनाना अधिक दिनतक २-२ माशा नित्य पानिसें खाना चाहिए।

आमवाज (Reumatism) इस रोगमें आम सञ्चय होकर इसके जरिए वात (कटी पृष्ट, जानु, संधि आदि) स्थानोंमें प्रकोप होताहै। दोषौंसें दूषित अन्नके रससें शरीरको स्त्रोतोंका अभिष्यंदी करताहै। यहविज्वर और पुरानाभी होताहैं।

ज्वरावस्थामें आम वातिक ज्वर (Aeute Rheumatism) में हृदयको पकड़ लेताहै। इस ज्वरका विष दोषौंसें हृदय विकृत होताहै। अतः संपूर्ण विश्राममें दूध आदि पथ्यौंका समुचित व्यवस्थाकर शुद्ध कुचिला, शुद्ध वत्सनाभविष, चंद्रोदय, श्रंगपुट, गुगुलु आदिका योग करने रास्ना सप्तक, रास्ना पंचक, पिप्पल, दशमूल आदिका कांढा खाना चाहिए।

(१) विज्वर अवस्थामें या सज्वर अवस्थामें रूक्ष पोटलीमें नमक आदि द्रव्य रखकर वेदना युक्त अंगौंमें स्वेदन करना चाहिए।

(२) रास्ना, गुर्च, अमल तासका गूदा, देवदारू, गोखरू, एरराड़के छालका ३-४-५ माशेका खुराक दहीके पानीके साथ चिरकालतक सेवन करना चाहिए।

(३) मृतसंजीवनी सुरा १६ औसमें लहसुन या गोरखमुराड़ी कुटकर ५ तोला मिलाना चाहिए। मुख बन्धकरके ७ दिन रखनेके बाद २-२ ड्रामका खुराक भोजनकेबाद अधिक दिन तक पानीसें खाना चाहिए।

(४) एरराड़के जडका चूर्ण ५ माशे २-३-४ ग्राम रेडीकातेल गर्म पानीकेसाथ नित्य खाते रहना चाहिए। इससें उक्तरोगमें खूब फायदा होताहै।

शूलः - यह रोग वहुत प्रकारका होताहै साधारण शूल कहनेसें शूलसें वेधकरनेसें जैसा व्यथा होतीहै। वैसी व्यथा होतीहै।

यह शूल असाधारण नाम नहीहै। जैसे शूल वेदना।

उदरका शूल:—इसकी चिकित्सा वमनसें कईशूल तत्क्षण जातेहैं। कभी २ निम्न उदरमें अतडीमें मल सञ्चय हुवा शूलमें विरेचनसें फलवर्ति (सपोजिटरी) सें अच्छा होताहै।

उदरमें अतडीमें शूल होताहै। उसमें स्वेदन, क्षार चूर्ण आदिसें फलवत्काम करता है। स्निग्ध हिङ् आदि संयुक्त मसलेदार मापके खिचड़ी अच्छा होताहै। बल्कि मात्रामें ज्यादा साधारण शूल रोगींके लिए:- थोडा मात्रा करके बराबर खानेको देना। इससें बाहर शूल स्थानमें खूब स्वेदन करना चाहिए। विभिन्न शूलमें विभिन्न क्रिया करनी चाहिए:—

(१) अजीर्णके शूलमें अजीर्ण रोगकी महौषधि देनेसें भी काम तय होताहै। (२) अम्लपित्त शूलमें अम्लपित्तके प्रकरणमें लिखा गयाहै। (३) मलावरोध संयुक्त शूलमें विष्ठब्धाजीर्णकी चिकित्सा करनी चाहिए। आगे हिंग्वादि चूर्ण लिखागया था इसका प्रयोगमें थोडासा रेड़ीका तेल २-३ ड्राम भी गर्म पानीसें एक साथ खाना चाहिए। (४) विदग्धअजीर्ण होकर शूल होनेसें भी कुछ पेट साफ करना भी उचितही होताहै। (५) अम्लपित्त संबन्धित अतडीके वायुसें हुवा शूलमें शंखादि (शंख, कालानमक, भुनीहिङ्, व,त्रिकटु चूर्ण × धनियाँ) मिलाकर

सम भाग गर्म पानीसें खाना चाहिए। (६) हृदय संबन्धित शूलमें संपुटमें बन्द कर गज पुटमें भस्मकिया हुवा शृंग भस्म अनुपानके भिन्न २ योगसें ४-४ घंटेमें देनेसें संतोष जनक अच्छा होताहै । इसमें रससिदूर या मकरध्वजका योग होतो और अच्छा होताहै । (७) यकृत्प्रदेशमें शूल होतो सौभाग्य भस्म, स्फुटिका भस्म और नवसादर (शुद्ध किया हुवा) योग करके मिश्रीके साथ पानी २ औंससें खाना चाहिए । यकृद्दारी रोगमें शूल होताहै । यकृद् दारीनाम इससें हुवा कि यकृतः प्रदेशे दारयितु मुपद्रव बशात् शरीरं विकारयितुंशींलमस्य यकृद् दारी । उचित मात्रामें त्रिफला, यवानी, नृसार, सौभाग्य, अर्कलवण पीसके कल्कके रूपमें नित्य खातेरहना अव्यर्थ है ।

पित्तश्मरी शूल (Gall stone colic) पित्तनलिकामें पित्त रोचना होनेसें शूल होताहै । यह शूलसें आराम पानेके लिए अश्मरीको बाहर निकालना सर्वोत्तम है । अभी तक पाश्चात्य चिकित्सामें पित्ताश्मरीको बिलीन करने की किसी औषधिका पता नही लगाहै । और नाई कोई ऐसी वस्तु ज्ञातहै । जो इसको उत्पत्ति रोकसके, पीडा शान्तिके लिए लाक्षणिक चिकित्सा करने की चिकित्सा करनी चाहिए । पित्ताशय शोथ होकर शूल होनेसें स्थानिक स्वेद और हल्का जुलाफ देते रहना चाहिए ।

निम्न लिखित सफल प्रयोग है

(१) आयुर्वेद वताताहै पाषाण भेद पाषाण भेदही

है । अतः पाषाण भेदका पत्ताका रस ½-१ औंस गोमूत्रके साथ खाना यह राम बाण दवाहै । पित्तशूलमें नृसार, सौभाग्य, फिट्किरी भस्म कुमारीका सत्व, गोमूत्रके सत्व पाषाण भेदका रस वा काँढ़ेका साथ नित्यहीसे वनकरेगा और मस्तु तक्र आदि खूब खाकर अनेकदिन यथोचित व्यायाम करेगा तो अवश्यही संतोष प्रद होगा । पथ्यमें कुलत्थीका दालके रस नियमित खातेरहना श्रेयहै ।

(२) अपामार्गका क्षार अपामार्गके पत्तेके रसके साथ चिरकाल तक खानेसें निश्चय अमोघफल देताहै । यह लेखकने आयुर्वेदिक हस्पिटलमें अपने हाथसें दवा निर्माण कर रोगीयोंका खिलाकर सफल दिखायाहै ।

(३) वरुण क्षार देखनेमें वराँस कपूर जैसा होताहै । यह सर्व्वोत्तमहै । वृक्काश्मरी शूल, पित्ताश्मरी शूलमें दोनोंमें खूब फायदा होताहै । नेपाल आयुर्वेदिक हस्पिटलमें मैने वनाकर चिरकाल तक रोगीयों (वहिरंग अन्तरंग विभागके रोगीयौं) में प्रयोग करके फलवत् हुवाहै । यह दवासें (Renal and Billiory Colic) (वृक्काश्मरी तथा पित्ता–श्मरी) में केवल वेदना नाशक मात्र नही किन्तु मात्रा पथ्य मिलाकर चिरकाल तक आन्तरिक प्रयोग करनेसें जडसें उक्त रोग नाश नही होगा, या होगा ईससें तनिक भी संदेहका गुजईस नही होगा जरूर फायदा होगा होगा क्षणीक वेदना नाशक तथा अन्य महौषधि यथावश्यक देतेरहना भीउत्तमहै । यथा अहिफेन, गांजा, भांग, चरेस

ए द्रव्योंसे नाडीमूलका चैतन्य नाशहोकर के वेदना नांश करताहै ।

शूल रोगके चिकित्सा दो प्रकारका भी होताहै । (१) रोगा क्रमणाऽऽवस्थाकी चिकित्सा (२) शूलविरामा वस्थाकी चिकित्सा । महौषधियोंका प्रयोगसें आक्षेप या वेदना नाश होनेपर भी शूल होनेका प्रधान निदान पता लगाकर उसको हटाना चाहिए। द्वितीय चिकित्साके सफलताका समय सापेक्ष होताहै । अतः पुनराक्रमणकालतक निदान दूरीकरणका प्रतीक्षा करनी चाहिए ।

विभिन्न प्रकारके शूल रोगके महौषधियाँ (खानेका)

(१) कोष्ठ बद्धता जनित शूलके लिए रेडीका तेल ३-१ औंस अदरकके रस १ चम्मच ५-६ औंस गर्म पानीसें खाना चाहिए ।

(२) प्रवाहिका जनित शूलसें सौंफ, हर्रे, सौंठ, सैंधव, अमलेका योग ४ माशे तक दिनमें १-२ ३ बार खाना हाहिए।

(३) अजीर्ण जनित शूलमें घीगें भुना हुवा हिङ्का चूर्ण २-२ लाल, पिप्परमेंटका पत्तेका रस १-१ औंससें मिलाकर कालानमकके काँढ़का साथ खाना चाहिए ।

(४) अन्त्रावरोध जनित शूलमें ऐरराड तेल संयुक्त गर्म पानीका गुदद्वारसें स्नेह वस्ति देना चाहिए ।

(५) रज, कष्ट शूलमें ओलट् कंवल (Abroama Agust) का जडके रस या काथ या घृत कुमारीका

सत्व हिङ चूर्ण, कालानमकके साथ गर्म पानी अनुपानसें खाना चाहिए । साथही तार्पिनका तेल कपूर एकत्र करके नीचे पेटके तरफ मालिस करना। उदर और पृष्ट प्रदेशमें स्वेदन करना लाभ प्रद होताहै ।

विशेष द्रष्टव्यः—पित्ताश्मरीके शूलमें १ वर्ष तक गोमूत्र सत्व, वरुण क्षार, अपामार्ग क्षार, अच्छा यवक्षार, लोहभस्म एद्रव्यौंके एक साथ मिलाकर गुचंके काढ़ेमें उचित मात्रा १ माषे तकका मात्रामें दिनमें ३ बार खाना चाहिए। दूधमें कुलत्थ पकाकर दिनमें ३ बार १-१ गिलास पीना चाहिए । इससें पित्ताश्मरी रोग अच्छा होताहै । यह लेखकने स्वयं अनुभव कियाहै ।

हृदय रोगः— वहुत प्रकारके है

एलोंप्याथिक मतसें या आयुर्वेद मतसें होताही हैं यान्त्रिक या क्रियात्मक। क्रियात्मकमें वायु का मुख्य आधार होताहै पीछे कफ और पित्तका अनुबंध यान्त्रिकमें बायुका अनुबंध पित्त और कफका अनुबंध्य होताहै । फिर हृदयके क्रिया संयुक्त यन्त्र विकृतिसें मुद्रा छोटाहो ना या बढी होना या कपाट ठीक ठीक नही चलना। हृदयकका अन्तर् और वाहय कला कोपका प्रदाह होना हृदयमें रक्त संचार होनेमें वाधा होना। हृदयका मांस पेशीमें आक्षेप इत्यादि हृदयके विकारमें निम्न लिखित महौपधियाँ पथ्यहैं यथाः— मृग शृंगका भस्म, रससिन्दूर, मकरध्वज, प्रवाल, अभ्र, लोह, अर्जुनका त्वक्का चूर्ण, बलुके पत्तेका रस, खजूर, दाख,

अंगूर, वेदाना गौके दूध आदि देना चाहिए ।

(२) शुद्ध कुचिलाके चूर्ण २ ३ रत्ती शुद्ध कपूर १-१ लाल+चोप चीनी चूर्ण १-२ माशे इनका मिश्रण करके दूध मिश्रीके साथ खाना चिहाए।

(३) सर्ब्ब प्रकारके हृदय रोगमें नेपाल काठमाण्डूमें वनमें मिलने वाला सेतो काउलो नामका वृक्षका चूर्ण ४ माषामें पिप्पलीका चूर्ण ५ लाल मिलाके लहसुनके काढ़सें सिद्ध क्षीर पाकके अनुपानसें दिनके ३-४ वार खिलानेसे बहुत लाभ होताहै ।

(४ स्वल्पपञ्चमूल (शताबरी पृश्निपर्णी बृहती छोटी बडी गोखुर) के काँढ़ेमें दूध मिलाके पाककरना यह सिद्ध दूधसें लबंगादि ५-५ माशे ४-४ घंटेमें खाना चाहिए।

(५) सिद्ध मकरध्वल १-१ लाल अभ्रक भस्म २-२ लालका योग मुषली अश्वगंधाके काढ़ेमें दिनमें ४-३ बार खिलाना चाहिए ।

मूत्रकृच्छ्र मूत्रा घात अश्मरी रोगोंकी चिकित्सा:-

यह तीन रोगमें पेशावमें कष्ट होताहै। आयुर्वेदिक महौषधिमें इतना निर्दोषता है अश्मरी हो या नही मूत्र-कृच्छ्र हो या मूत्राघात हो निम्न लिखित सफल प्रयोग है:—

(१) गोखुर, एरराडकी छाल तथा शतावरीसें सिद्ध (पकाया) दूध तीनमें दो बार खानेसें अवश्य फायदा होताहै।

(२) नलके जड, सर, कुश, काश, ईखकी जड एसबोंका शीत कषाय ५ औंसमें प्रातः मिश्री मिलाकर पीलेना मूत्रकृच्छ्र मूत्र घातका सब प्रकारके रोग अच्छे होताहै ।

(३) वरूणका छाल, पाषाणभेद, गोखरू इनके ६-७ औंस कथमें यव क्षार १-१ माषा मिलाकर रससिन्दूर १ रत्तीके साथ दिनमें ३ बार खाना चाहिए।

(४) ककडीके बीजके चूर्ण ३ माशे कुलत्थ संयुक्त नलादिपञ्चमूलके काँढ़में शर्करायव क्षार १-१ माशे प्रक्षेप करके एक साथ खाना चाहिए । इससें अश्मरीयुक्त वा अयुक्त मूत्रकृच्छ्र मूत्रा घात नाश होताहै ।

(५) नरियलका फूल १ माशे तक पीसकर पीनेसें १०-१२ रोजमें ही अवश्य लाभ होताहै ।

(६) पपीतेकी जड, वरूणके छालके काँढ़ेमें शुशी-लाजीत १० रत्ती यव क्षार मिलाकर दिनमें ३ बार पीलेना चाहिए ।

नोटः— मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी रोगमें प्रयोग होने वाले दवाइयाँ मूत्रा घात रोगमें भी प्रयोग होतेहैं ।

विशेष पथ्यमें जोर देना चाहिए:- पथ्यः— मट्ठे, यवमराड, मकोयका पत्ती पुनर्न वा लौकी, ककड़ी आदि है।

प्रमेह रोग (Urianry diseases) आयुर्वेदमें वीस प्रकारका प्रमेह रोग होताहै ।

(१) हर प्रकारके प्रमेह रोगमें धन्य आयुर्वेदके योगका प्रभाव त्रिफला शिलाजीत गुर्चके स्वरस, आमलेका

रस हलदीका रस या चूर्ण कर्कटीका बीज आँवलेका बीज यथा लाभ योग करके उचित मात्रामें नित्य नियमित सेवन करनेसें संतोप प्रद लाभ होताहै ।

(२) पितज प्रमेहमें जलन होताहै खस, लालचन्दनके कांढा १६ तोला नित्य खाना चाहिए।

(३) मधुमेह रोगमें मूत्रमें शख्खर आता है इनको डायवेटिस् मेलिटस् करते है ।

यह एलोप्याथिकके मतमें याप्य अथवा असाध्यहै। वरं आयुर्वेक्त सुश्रुतोक्त विधानसें सफल होताहै । यह इस प्रकारका है मांस रस रोटी पथ्य रखकर शुद्ध शिलाजीत मात्रा अनुसार अर्थात् ३·४ माषा तक मात्रा करके

(१) गूलरका जडेका रसका साथ खाके ८०० सौ तोले शुद्ध शिलाजीत खानेका कोर्स पुरा करना चाहिए।

(२) दूसरा योग है जोमधुमेहमें अव्यर्थं है:— जामुनकी गुठलीयेंका महीन चूर्ण ८ रत्ती दिनमें ४ बार खाना चाहिए। खट्टा फलके रसके अनुपानसें निस्संदेह लाभ दायक प्रमाणित होगा ×

× नोट जामुनमें एक तत्वहै जिसमें श्वेतसार पदार्थ कोशर्करामें परिणत होनेको रोक देताहै। इलमें लोह तत्व होनेसें जिगरके काममें लाभ कारी होताहै । प्रति दिन शिला जतुका २-३ माशेका खूराक करके गुड मारके पत्ते या करेलेका काथसें अनेक दिन तक खाते रहना चाहिए ।

(३) शुक्रमेहेमें मूत्रमें शुक्र आताहै स्वप्नदोष होताहै रात और दिनमें वेसमयस्वप्नमें शुक्र आताहै इसमें

शेमलवृक्षक जडेका काथ ८ तोले या चूर्ण ५ माशे तकके खुराकमें दूधकेसाथदिनमें २।३ बार खाना चाहिए।

सर्व्व प्रकारके प्रमेह रोग नाश करनेवाले योगें है। यथाः—

(१) गुर्चका स्वरस २ तोलाका खुराक मधुकेसाथ दिनमें ३ बार खाना चाहिए।

(२) शतावरके रस २॥ तोलेभर गोदुग्धके साथ दिनमें ३ बार खाना चाहिए।

(३) आवँलेका स्वरस २॥ तोला हलदीके चूर्ण ३॥ मापाके साथ ३ बार खाना चाहिए।

स्थौल्य रोगके चिकित्सा

स्थौल्य मोटापा ज्यादा होनेसें अनेकन रोगोंका उपज होताहै। अति स्थौल्य होना रोगका घरहै। जबसप्त धातुओंका कमिक उन्नति वृद्धि होनेको रोकावट होताहै। तल एकत्रसेद Accumulation (सञ्चय) होताहै। आदमी स्थूल होजाता है।

इसका चिकित्सा: –

(१) बेर की पत्तीके कल्क और यव कुलत्थके काञ्जीके साथ अर्थात् सड़ाहुवा खट्टा पानीके साथ दिनमें ३ बार खाना चाहिए।

(२) अग्निमंथ (अरणी) के रस या काथके साथ शुद्ध गोमूत्र सिद्ध शिलाजतु स्थौल्यको नष्ट करता है। दिनमें ३ बार खाना चाहिए।

(३) प्रातः शीतल पानी और मधु एक साथ फिटके पीनेसें शरिर कृश होजाता ।

(४) शुद्ध किया हुवा गुग्गुलु २ मार्षेके खुराकमें शहद्के साथ दिनमें ३ वार खाना चाहिए ।

शरीरके पसीनेके दुर्गन्धकी चिकित्सा:—

(१) शंख भस्म अडूसेके पत्तेके रसके साथ मर्दन करना चाहिए । (२) शंख चूर्ण वेलके पत्तेके रसके साथ लगाना मर्दन करना चाहिए ।

उदर रोग नाशक योग — उदर रोगमें पेटका दोषों से भर जाताहै अग्निमंद होताहै । अतः भुना हुवा हिङ् काला जीरा, विट् लवण, हर्रे, सौंठ यथा लाभ द्रव्य उपयुक्त मात्रामें खाना चाहिए ।

गुल्म और प्लीहा (Splean) बढनेमें आकके पत्तेमें सैंधा नमक रखकर अन्तर्धूम दग्ध करके महीन पीसकर उचित दो मासेतक दहीके लस्सीके साथ खानेसे खूब फायदा होताहै । सहीजनका काथमें छोटी पिप्पली २ माशे मिलाकर खाना प्लीहोदर अच्छा होताहैं ।

जलोदरमें तथा यकृदुदरमें अनेकन दिन खानेका अमोघ औषधि और पथ्य:—

(१) पुराने मानेकन्दको पीसकर कन्दसें द्विगुण चावल मिलाहुवा दूध और जल चीनी मिलाया हुवा खीर खानेसें उदर शोथ नष्ट होजाता है ।

(२) १० दिन तक क्रमशः प्रति दिन ३ पिप्पलीयोंको बढाते हुये गौके दूधके साथ खाना इसी प्रकार कम करना

चाहिए। औपध पचजाने पर दूध और भात खाना १००० हज्जार पिप्पलीयौंका योग उक्त रोगमें रसायनका काम देताहै।

(३) जिसका यकृत् खराव होगया उसने रुहेडे (नेपाली भाषामें) गुरांसका त्वक्का चूर्ण ३-५ मासेका खुराक नव गोमूत्र (बागे गोमूत्र) के अनुपानके साथ खाना चाहिए। दिनमें दो बार खालि पेटमें अव्यर्थ होताहै।

(४) सवेरै गर्म पानीमें कागजी निम्बूका रस मिलाके नित्य पीनेका अभ्यास करना चाहिए। पानीकी मात्रा १०-१२ औंस होना चाहिए। यह योग चायकी तरह खाली पेटमें पीनेसें लीभर (यकृत) की शिकायत मिटती है।

पाराडु और कामला (Anemia and Jundice) खूनके रक्त कणिकाके रक्त रञ्जक कमीमें पाराडु होताहै। रक्त रञ्जक यकृद् यन्त्रके ठीक २ क्रिया होनेसें तैयार होताहै।

कामलामें पित्त निस्त्रावके रस स्वल्पता होतीहै अथवा पित्तके नलीयोंमें पित्त निर्गममें अवरोधवश खूनमें पित्त मिश्रीत होके योगक त्वक् (चमडा) आँख, पेशाव आदि पीतवर्ण होताहै। कभी २ यकृत्के खराबीसें निर्विषी करनेकी शक्ति हीन होनेसें कामला होती जातीहै। कभी अवरोध नही होताहै। किन्तु पित्त शोपित नही होताहै।

पाराडु नाशक कामला नाशक महौपधियाँ तथा चीजें

अंगूर, सन्तरे, गुर्च, गौके घी, और नवनीत (सँस्कार

सिद्ध) हरिद्रा दिघृत, गोमूत्र सिद्ध घृत, पुनर्नवा, कत्थाका छाल, अमल तासका गूदा, हर्रे, नौसागर, पञ्चालके जड़ दूध मिश्री, लोहा, एलुवा, गोमूत्र, सनाय, करेला, पपीता, पालक, मेथी इत्यादि। दोनोंका चिकित्सा (१) गुन गुने पानीमें नीबूका रस मिलाकर चीनी या मिश्री डालकर खालि पेटमें चायकी तरह पीते रहना अच्छा है।

(२) पाराडु नही होके आरंभसें ही कामला होनेमें फौरन रक्त वर्द्धक महोषधिके अपेक्षा दोष संशोधक यानी मल, मूत्र सफा होनेकी दवा देना अच्छा होताहै। मल मूत्र सफा करनेकी दवाइयाँ अमलतासगूदा, त्रिफला सनायके पत्ते, गोखुर जवाखार इत्यादि है। इनमें यथा लाभ द्रव्यका योग करके दिनमें ३ बार प्रशस्त मात्रा शृतशीत पानीके साथ खालेना। कडुई तोरईके फल (जालिनी फल) का काथका ३-४ बूंद नस नित्यलेना अथवा चूर्णका नस लेना चाहिए।

(३) त्रिफला, गिलोय, दारू हलदी, नीमके पत्तेका मिलित अथवा यथा लाभ योगके काथमें शीतल अवस्थामें शहद मिलाके प्रातः काल नित्य खाना चाहिए।

(४) त्रिफला, गुर्च, अड़ूसेका पत्ता, कुटकी, चिरायता, नीमकी छाल यथा लाभ द्रव्य २ तोला ४ पाव भर पानीमें पकाना शेष १ पाव भर नित्य खानेसें पेट साफ होतेही पाराडु कामलाछुट् जायगा।

(५) लोहपात्रमें दूध पकाना और भोजन करना भोजनमें नून नही खाना चाहिए।

(६) कामला रोगमें नरदेवी काठमाण्डु आयुर्वेदिक हस्पिटलमें अन्तरंग विभागमें नित्य नियमित रूपसे कंट-कफलका रस निचोडकर तिसको नासिकामें भी तर दियाथा, खानेका फलत्रि कादि काँढा खालि पेटमें पिलायाथा खानामें केवल फल रस और दूध दियाथा १५ रोजमें कामला रोग छुटगया यह स्वतः अनुभूत है।

(७) एक इसरा योगहै जिनको गरीवौंमें सर्व्वत्र प्रचार होना ज्यादा आवश्यकहै। व यहहै। पद्मक (पद्मक) का वीज करीव १ तोला ब्राह्मी तीतेब्राह्मीके रस ४ तोला मेंपीसकर मांस रोहणी (Rubus Ellipticus) के मूलके शीतकषायके साथ खिलाके हर प्रकारके कामला रोगीयों को अच्छाकियाहै। मेरे घरका पैतृक अनुभूत योगहै।

शोथरोग :— इसरोगमें शरीरका त्वङ् मांसके आश्रय करके शोथ होकर फुला हुवा होताहै। इसकी चिकित्सा शोथघ्नी अर्थात् पुनर्नवासें होतीहै। यह दवा सर्व्वाङ्गमें हुवा शोथ रोगमें अच्छा काम होताहै। पुनर्नवाका मात्रा मूल चूर्णका ३ माशासे ६ माशा तक स्वरस आधासें २ तोला तक वीज २ माशा। हृदयकी खरावी वृक यन्त्रकी खरावीसें उत्पन्न हरप्रकारके शोथमें इस महौषधीके सेवनसें अच्छा काम होताहै।

वकरीका दूध सेवन करने काक माचीके स्वरस अथवा कांढकेसाथ अदरक और गुड मिलाकर खाते रहना चाहिए।

(२) नित्य पिप्पली २ ठोसें रोजही क्रमशें वढाकर

गुडकेसाथ दूध अनुपानसें १२ रोज खाकर फिर घटाना, फिर वढाना शोथरोग अच्छा होताहै ।

(३) पुनर्नवा, नीमकी छाल, परवलकापत्ती, सोंठ, कुटकी, गुर्च, देवदारू, तथा वडी हर्रेका छिला इनका काथ नित्यदिनमें २ वार खाते रहनेसें उपद्रवौं सेयुक्त शोथ नष्ट होताहै ।

(४) वेलके पत्तेका रस ३ चम्मच भरमें कालीमिर्च १०।१३ दानाका चूर्ण मिलाकर दिनमें ३ बार खाना शोथ अच्छा होताहै । वेलका पत्ता मूत्रल गुण युक्त है । यह योग १।२।३ महिना खानेका कोर्स पूरा करना चाहिए।

(५) रोगी रूक्ष वातल प्रकृतिका रोगभी वातिक शोथ होनेसें ऐरण्ड तेल १ औंसमें अदरकके रस १ चम्मच और गर्म पानीसें २।३ दिनमें विरेचन देते रहना चाहिए।

(६) पित्तप्रकोप संयुक्त शोथमें बिन्दुघृत, याने स्नुहि दुग्धके शुद्ध करके इसिमें पानी मिलाके सिद्ध किया हुवा घीदूधकेसाथ १।२ दिनके वाद देते रहना चाहिए।

(७) कफ प्रयोग युक्त शोथमें विशुद्ध जय पाल उचित मात्रामें ठिक २ विचार करके अथवा इच्छाभेदीरस अत्यल्प मात्रामें चंद्रोदय मिलाके सिंधुवारके स्वरससे दिनमें १ मरत वा खानेको देना चाहिए । सिंधुवार दो प्रकारके होताहै (१) काला (२) सादा हिन्दीमें संभालु, संहालूसितु आर कहते हैं। नैपालीभाषामें इसको सिमाली कहते हैं।

इसका प्रयोगः— (१) शोथयुक्त सभी व्याधि फुस्फस शोथ उदराबरण शोथ संधिशोथ, अण्ड शोथ

(वृद्धी)में इसको १।२ चम्मच भर रस मधु और अदरकके रस प्रक्षेप करके दिनमें ३ बार खिलाते रहना चाहिए।

(२) सिंधुवारका पत्ते पीसकर हड्डीमेंगरमकर शोथ पर दिनमें ३-४ बार बाँधना चाहिए ।

(३) प्लुइरिसी (उरस्तोय) में इसका रस वा सिंधु वारका क्राथमें छोटी पिप्पली २-३ मिलाकर दिनमें ३ बार खिलाना चाहिए।

(४) आमवातके शोथमें निर्गुराडी, तुलसी, भंगरैया समान भाग ३-३ चंमच भर स्वरस अजमायनका चूर्ण २ माशे प्रक्षेपदेकर गर्म पानीसे खिलाना अद्‌भू फायदा ७ रोजमें देखनेको मिलेगा इसमें तनिक भी संदेहकी गुंजाईस नही है ।

(५) गृध्रसीमें शोथ देखनेमें आया तो नीलेपुष्प वाली संम्हालूका पत्तेका काथ पिलाते रहना चाहिए ।

(६) अश्मरी युक्त वाशर्करा युक्त मूत्र कृच्छ्र युक्त शोथमें सत्यानाशी जिसको नेपाली पर्वतीय भापामें थाकल कहतेहैं इसका मूलका २-२ चम्मच रस या काथ २-२ औंस दिनमें ३ बार देनेसें बहुत फायदा होताहै इसमें शंका नही है ।

(७) यकृद् यन्त्रके शोथमें तथा पित्तवाहिनी नलिकामें शोथमें अपामार्गका अर्थात् (चिर चिरा) का क्षार ८ रत्ति तक अथवा पञ्चाङ्गका काथ या स्वरस खिलाते रहना चाहिए शोथ और दूषण कम होकर उचित पित्त स्राव होताहै । यह अमोघ दवा है ।

अराड वृद्धि पुरुषोंमें मुश्क वृद्धिमें चिकित्साः- आरम्भमें ही इस पूरी तौरसे रोग निर्मूल करना चाहिए। सर्व प्रथम वंक्षण स्थानमें फुलाहुवा वा शोथ वा ग्रन्थि देखजानासें बाहर खूब स्वेदन करना वंक्षणमें कपास रखकर बन्धनी करना पायखाना और पिशाव साफ रखना चाहिए।

(१) शोधनक्रिया हुवा गुगुलु ऐरण्ड तेलके साथ गोली बनाकर कायफलके बराबर ३-४ गोली गोमूत्रके साथ दिनमें ३ बार खाना चाहिए।

(२) गोमूत्रमें हरीतकी खूब पकाकर ½ तोला मात्रा गोमूत्रके साथ खाना श्रेयहै। हर्रेका चूर्णमें सोंठका १ मापा सेंधा नमक ½ मापा मिलाकर गरम जलके साथ ६ रोज खानेसे अराडकोषोंको शोथ नष्ट होजाता है।

(३) रेडीके तेल १ पावमें २ पाव हर्रे मन्दाग्निमें मुंजना चाहिए। मन्द भुजकर चूर्ण करके सम भाग विधारेका छालका चूर्ण मिलाना यह योग ½ तोलाके खुराक सवेरै और साम खालि पेटमें खाना चाहिए।

(४) साधारण अराड़ वृद्धिमें तजके चूर्ण कर प्रलेप लगाना अच्छा होताहै। १-१ दिनके बाद नयाँ प्रलेप लगाना चाहिए।

(५) नाकुली सँस्कृत नामका महौषधि होताहै। इसको नेपाली भाषामें तीते पानी कहते हैं। इसका पत्ता गर्म इँटामें रखकर कपडेसें लपेटकर बाहर सेकना अच्छा होताहै। "वृषणौं हृदयं दृष्टी स्वेदये न्मृदुनैव वा" इस आयुर्वेदोक्त वाक्यानुसार मन्द स्वेदकरनाही श्रेय होताहै।

आयुर्वेदमें Suspensory Bandage (गोफणा बन्धनी) का विधान मुष्क आदिमें बन्धनोके लिए है अतः "कौपीनवन्तः खलु भाग्य बन्तः" यह शास्त्रमें भाग्य-वान् उल्लेख है । कौपीन धारण करनेसें वृद्धि रोगका प्रतिषेध होही जाताहै ।

श्लीपद रोग (Eliphantiacis) और गलगराड (Goitre) चिकित्साः— यह दोनो रोगका नहि पहिचानने वाला आदमी कम होताहै । अतः इसका चिकित्सा मात्र लिख रहाहूं । श्लीपद रोग पेरसें और जगह भी होताहै ।

(१) दिनमें ३ बार गोरख मुराडीका स्वरस १ तोला या काथ १०-२० तोला थोड़ा मधुमिलाके पीते रहनेसें १२-१५ रोजमें गलगराड नष्ट होताहै ।

(२) काञ्चनारकी छालको पीसकर २ तोलामें सोंठका चूर्ण १ माशे मिलाकर गर्म पानीसें दिनमें ३-४ बार खालि पेटमें १ महिना तक खाना उक्त रोग छुट जाताहै ।

(३) चीते, देवदारू, सहिंजन, सरसों गोमूत्रमें पीसकर गरम कर नित्य लेप लगाते रहनेसें ग्रन्थि, गलगराड़, श्लीपद अच्छा होताहै ।

(४) धत्तूर, एरराड, संभालू, पुनर्न्वा सहिजन सर्व्व द्रव्य वा यथा लाभ द्रव्यमें सरसों मिलाकर ग्रन्थि, गलगराड, और श्लीपदमें नित्य लगाते रहना चाहिए ।

(५) पिप्पली, गुड हरीतकी का सम भाग योग ई

तोला नित्य रातको सोते समय खाना चाहिए। असली यवक्षार १ माषे तक दिनमें दो बार अदरखके रस और गर्म पानीसे खाते रहनेसें नयाँ श्लीपद, वृद्धि रोग ग्रन्थि (गाँठ) अच्छे होजाते हैं।

(६) वरूणके छालके चूर्ण, गुर्च, विधारेका चूर्ण सम भाग ½ तोलाके खुराक ३ बार दिनमें गर्म पानीसें खाना चाहिए। १ महिना तक प्रयोग करनेसें गलगराढ, ग्रन्थि, श्लीपद, बृद्धि रोग अच्छे होतेहै।

(७) काञ्चनार गुग्गुलु १-२ माशे तक अदरकके रस गर्म पानीसें नित्य दीर्घ कालतक खानेसें गलगराड अच्छा होताहै। यदि नयाँ होतो नहीं, नही तो याप्य होताहै।

(८) नयाँ श्लीपद रोगमें नित्यानन्द रस दिनमें दोबार रातको सोते समय गुडकल्प, दिनमें श्वेतपर्पटी ८ रत्तीके खुराक गर्म पानीसें खाना चाहिए। २-३ महिना तक खाना। मुष्क बृद्धिमें लिखाहुवा लेप लगाते रहना अव्यर्थफल दायक होताहै।

कुष्ठ रोग (Leprocy):- यह रोग सात प्रकारका औ एघार प्रकारका होताहै। सात महा कुष्ठ होताहै। त्रिदोष (बात, पित्त, कफ) से उद्भव होनेसें भी उल्ल्वण दोषके हिसाबसें सात प्रकारका मानागयाहैं। पहले वमन, विरेचन द्वारा कोष्ट तथा रक्त मोक्षण द्वारा रक्त शुद्ध हो जानेपर कुष्ठ वालोंको जिनलेपौंका तथा जिन खानेका प्रयोग किया जाताहै। उनकी सिद्धि शीघ्रही होतीहै।

महा कुष्टमें निम्न लिखित योगें अच्छे होतेहैं यथाः-

(१) वच, अडूसा, पखलकी पत्ती, नीमकी पत्ती प्रियंगुकी छालके काथमें मैनफलका चूर्ण मिलाकर पीनेसें वमन होकर दोष निकल जाताहै ।

(२) महा कुष्ठ और क्षुद्र कुष्टमें निसोथ, त्रिफला, मञ्जिष्टा सनायका पत्ते इन द्रव्यौंका सम भाग चूर्ण १ तोलाका खुराक सबेरै पानीसें खाकर पेट साफ करना चाहिए ।

(३) महा कुष्ठमें शिराव्यध करके थोडा बहुत खून निकालनेसें बहुदोष युक्त कुष्ठ रोगीको अच्छा दोष हीन होताहै । तब चरकोक्त लेप लगाना जैसाः—

(१) कालीमिर्च, मनः शिला, हरिताल योग आंकके दूधका लेप एक योग है ।

(२) करञ्जके बीज, पवोंडेके बीज, कुठ्को गोमूत्रमें पीसकर लेप लगाना चाहिए ।

सर्व्व प्रकारके कुष्ठमें खानेका महौषधियाँः-

(१) बाकुची, वायुबिडंग, छोटी पिप्पली, चितेकी जड, आँवलेका चूर्ण, मंडूरके योग समान भाग १ मासेके खुराकमें शुद्ध मिलावेके मज्जाके काँढ़ेके साथ नित्य खाना चाहिए ।

(२) शक्तिके अनुसार ४-५ औंस गुर्चका स्वरस खाना । दिनके ३-२ प्रहरमें औपधि पचजाने पर घी संयुक्त मुंगके यूपके साथ भोजन करना चाहिए ।

(३) नीमका पञ्चाङ्गका चूर्ण २-४ माशेका खुराक नित्य अनेक महिना खाना चाहिए ।

(४) चल मुग्राका बीजका तेल ५ बूंदसे प्रारम्भ करके १५ बूंद तक बढाना । अनेक दिन खाना

(५) बाबचीके बीज खानेके लिए प्रथम दिन ५ दानेसें शुरू करके प्रति दिन १-१ दाना वढाना २१ दिन तक बढाना चाहिए । फिर १-१ दाना घटाते रहना इस प्रकार १ माससें १ आवृत्ति पूर्ण होतीहै कई आवृत्ति करनी चाहिए ।

(६) महा कुष्ठ रोगके वर्द्धित अवस्थामें चलमुग्रेका बीजको ६ ग्रेन्का मात्रासें ३० ग्रेन्की मात्रा तक क्रमशः बढाना क्रमशः घटाकर खानेको देने रहना चाहिए । चिरकाल तक तेल देना होतो ६ सें ३० बूंद तक दूधके साथ दिनमें ३ बार खाना चाहिए । इस तेल लगानेसे भी फायदा होताहै ।

कण्डू (खुजली) में:— फिट्किरी कच्ची ६ मासेको १ सेर जलमें मिलाकर ३ बार दिनमें धोना चाहिए । इससें योनिके भीतरका कण्डूमें भी धोनेसे अच्छा लाभ होतहै (२) सप्त पर्ण (सतीना छतिवन) खे काथ १ पाव भर दिनमें २ बार खानेसे रक्त विकार नष्ट होकर कराडू अच्छा होताहै ।

हर प्रकारके कुष्ठ रोगोंमें निम्न लिखित रक्त विकार नाशक योग नियमित खाना ।

(१) विशुद्ध गन्धक ३-४ लालके खुराकमें अथवा गन्धक रसयन ३ ४ लाल त्रिफलाके चूर्ण २॥ मशे + पंच

निम्ब चूर्ण २॥ मासेके साथ पानीसें प्रत्यह २ दो बार चिरकाल तकसेवन करना ।

(२) रस माणिक्य:— यह खूनके विकारोंमें, तथा बातरक्त संयुक्त खुजलीमें महा कुष्ठ रोगमें १ रत्ती वा आधा रत्तीके मात्रा त्रिफलाके चूर्ण अथवा सादा कत्थासें मिलाकर अमृता (गुर्च) सप्त पर्णके काथसें अथवा चार आना भर मधु और एक आना भर घीके साथसें नित्य खाते रहना चाहिए ।

(३) राजवृक्षके पत्तेको काञ्जीमें अथवा पर्य्युषित यवजलमें पीसकर प्रलेप देनेसें दद्रु और काला विल्कुल हुवा हस्ति चर्म जैसा चर्म हुवा कठिन स्पर्श वाला कुष्ठ रोग अच्छा होताहै।

(४) सिध्मनामक कुष्ठमें देखतेही लौका फूलके जैसा सादा लालवाला पत्तले चर्म्म होताहै। तथाधिस्थानमें घर्षण करनेसें चूर्ण पदार्थ निकलता है। इस रोगमें अपामार्गके रसमें मूलीके बीजोंको पीसकर लगाया लेप सिध्म कुष्ठको नष्ट करताहै ।

(५) अशुद्ध गन्धक और जवाखार कडुवा तेलमें मिलाकर लेप करनेसें सिध्म कुष्ठ नाश होताहै ।

टंकारी यह सँस्कृत नामहै। इसको नेपालके पहाड़के तरफ स्थानीय नाम ध्वांसे नामही है। नेपाली प्रचलित नाम आँखा तरुवा हैं। इसका तेल बाहर लगानेसें कच्छू दद्रु कुष्ठ रोगमें बहुत फायदा होताहै।

शीत पित्त (Articarea) और उदर्द रोगमें वरटीने दंशन किया हुवा शोथ जैसा होताहै। इस रोगोंमें खुजली, दाह, ज्वर आदि लक्षणोंका सर्व्व संयुक्त अथवा कुछ कुछ लक्षण देखनेमें आतेहैं।

इन रोगोंमें निम्न लिखित योगें अच्छे होतेहैं।

(१) त्रिकटु, जवाखार अजवायन सर्व्व सम भाग ३ माशेका खुराक गर्म पानीसें प्रचुर मात्रासें खाना चाहिए।

(२) दुर्व्वा और हलदी एक साथ पीसके मन्दोष्णके रूपमें पतला लेप (आलेप) करना चाहिए।

(३) गर्म पानी व्यवहार (खाने और स्नानमें) करना चाहिए।

(४) खम्भारका पका हुवा उवालकर दूधके साथ खाना चाहिए।

(५) सूखी मूलीके यूप गर्म गर्म करके पीनेसें २ दिनमें अच्छा होताहै।

(६) गुर्च, अडूसा, परवल, नीमकी पत्ती, त्रिफला, कत्था, अमल तासका गूदा सर्व सम भागके काँढा वनाकर ५-७ रोज खाना चाहिए।

क्षुद्र रोगका चिकित्सा: - चिप्प (Whitlow) रगको नेपाली भाषामें नङ् छुरि पाकेको कहने हैं। यह चार प्रकारका होताहै। इसका १ प्रकार गम्भीर अवस्था है। जिसको पेरिओस्टियल ह्विट्लो कहते है। इसमें शस्त्र कर्म्म करना चाहिए। बाँकि ३ प्रकारमें अवस्थानुसार चिकित्सा

करना चाहिए । चिकित्साके लिए महौषधियाँ

(१) हिङ्ग् अदरकके पानीमें पींसकर लेप लगाना चाहिए। (२) च्युउडाका दहिके साथ घोटके मलम लगाना दिनमें ३ बार फेरना। (३) सुहागा और गोदन्तिहरिताल दोनों एक साथ घोटके लगाना और बाँधके रखना।

विदारिका रोग यह है कि जिसरोगमें कक्षा वंक्षण सन्धिसें भूमिकुष्माराड़ (कुमहडा) के कन्द जैसा गोल आकारके शोथ होताहै। इसरोगके चिकित्सा:—

(१) तज, देवदारू शिग्रुमूलके चूर्ण गोमूत्रमें पकाकर लेप लगाना चाहिए।

(१) पाद दारी रोग होताहै विना जूताके अधिकपद व्रजमें भ्रमण करनेसें पैर फाटताहै। इस रोगमें मोम, वसा, मज्जा, घृत, और तेल राल, गुगुलु, जवाखार एक साथ मिलाके रातको सोते समय मर्दन करना सवेरैं गर्म पानीसें धोना चाहिए।

(१) गुदा बाहर निकल जाने वालेको कभी २ गुदा भीतर मुष्किलसें जाताहै अतः स्नेह की मालिस कर गुदाको प्रविष्ट हो जानेपर चूहाका मांस तेलमें पकाकर कपडामें छानके रखना रातको सोते समय गुद द्वारसें पचकासें भीतर प्रवेश करना चाहिए। यह योग लेखकने दीर्घकाल तक अनेकौं रोगीयौं पर सफल अनुभव कियाहै।

युवानपिडका (Achne) में मुंहोमें सरसों, वच, लोध, और सैंधानमकका लेप प्रत्यह लगाते रहना चाहिए।

यह पिड़काका रोग मुंहमें जवानीमें खूब आताहै । पाद दाह और हस्त दाहमें नागकेशर महीन चूर्ण १०० बार पानीसें धोए हुवे घीमें मिलाकर पैर हातमें लगाना चाहिए ।

विषमहे (Gonorrhcea) :— गरोरिया रोगको आयुर्वेदमें विषमेह कहना ही उचित है । यह रोगमें पेशावमें केवल पूयमात्र भी नही आताहै अपितु कभी २ खून भी आताहै । अतः पूयमेह और रक्त मेह कहनेसें विषमेह कहना ही उचित है क्यौं कि यह रोगमें विष (रोगका विष युक्त पेशाव) निकलता है ।

यह रोग संक्रामक है । पुरूषके मूत्रमागमें स्त्रीयोंमें योनिके श्लैष्मिक कलामें आविर्भाव होकर इस रोगका विष सारे शरीरसें फैलताहै । जीवन भर रहकर तृतीय अवस्थामें भी दुःख देताहै ।

चिकित्सा - प्रथम अवस्थामें बाहय प्रयोग पंच वल्कलका गूलरका त्रिफलेका संयुक्त काढ़ेसें लिंगमें योनिमें स्वेदन करना मूत्र यन्त्रके भीतर मल्ल तेलका पचका देकर सफा करना आरम्भसें ही विषमेहका विष नाशक एवं दोष नाशक शुद्ध शिलाजीत यवक्षार, सुवर्ण वंग, चन्दनका तेल, चन्द्र प्रभावटी, त्रिफलेका चूर्ण, आमलेका रस, गोखुरके काँढा, श्रीखण्ड चन्दन, आदि द्रव्यौंमें यथा लाभ द्रव्यौका संयोग करके दिनमें ३-४ बार खिलाना । पेट साफ करना नमक नही खाना फल रस प्रशस्त खाना निरामिष खाना सर्व्वोत्तम है । ब्रहम चर्य्यमें रहना अत्यावश्यक है ।

इस रोगका विष शरीरके भीतर रहजानेसें तृतीय अवस्थामें अनेक व्याधिया हठात् होने पर भी लाक्षणिक चिकित्सा करनेके साथ रोगका निदान जड गनोरिया होजानेसें भी उसका भी इलाज करते रहना चाहिए ।

फिरंग और उपदंश रोगः— सर्व्व प्रथम स्त्री और पुरुष दोनोंका यह रोग (Syphilis) होता है । इस रोगीके साथ संसर्गसें रोग होताहै इसको ख्याल करना चाहिए । यह अत्यन्त संक्रामित रोग है । यह पैतृक आजन्म होताहै । इस रोगमें रूढ़क्षत होताहै । जिसको पाश्चात्य शास्त्रका नाममें हार्ड्स्याङ्कर कहतेहै यह रोग आमरणान्त रहताहै अपने कुलमें स्थायी रूपसे रहता भी है । उस रोगका विष शरीरमें गुप्त रूपसें रहकर शरीरके हृदय आदि यन्त्रौंको कदाचित् विकृत करताहै । इसका विभिन्न अवस्थामें भय पैदा होताहै खूनकी परीक्षासें फिरंगका पत्ता होजानेसें वर्तमान रोगकी चिकित्साके साथ विशिष्ट निदान फिरंगका भी रसकपूर, भेख रस, चोपचीनी उपदंश हर वटी, रस माणिक्य, शिलाजीत आदि दवादेते रहना चाहिए रस माणिक्यका मात्रा ३ लाल रसकर्पूरका मात्रा १-१ रत्तीहैं नमक खाना भी मनाहैं अनुपान चोपचीनी, त्रिफलेका काँढा इत्यादि ।

(१) इस रोगमें व्रणको त्रिफलाका काथ भृंगराजके रस कपूर का विलीन पानीसें वार वार धोना चाहिए ।

(२) कडाहीमें त्रिफला जलाकर इसमें रस कपूर

मिलाकर शहदमें घोटना यह लेप करना उपदंशका घाव शीघ्रही भर जाताहै।

(३) रसोतमें शिरीपका छाल और कत्था मिलाकर लेप करनेसें घाव अच्छा होताहै ।

खानेका दवा:— रस कपूर २ लाल २४ घंटेमें १ दफा देनेके सात दिन तक खाना चाहिए। कत्थेसें मिलाकर रस माणिक्य १-६ लाल १०-१५ रोज खाना। दिनमें चन्द्रप्रभा वटी वा शिलाजीत १-१ माशा मकर बज्र ४ लालके साथ खाना ।

(४) इसरोगमें चोपचीनी अच्छा काम देताहै । अत: चोपचीनी चूर्ण ¼ तोला भर शतावरऔर अमलेका रसमें खातेरहना चाहिए ।

(५ नागदन्ती जिसका सँस्कृत नामहै । जिसको नेपालीमें "कुक्कुर डाईनो" कहते हैं। इस महोपधिका मूल ¼ तोला चूर्णके रूपमें दिनमें ३ बार खानेसें फिरंग रोगके विपमें अपस्मार हृदयरोग हृदयकंपन वातव्याधि आकस्मिक पीडाओंमें ६-१५ मात्रा खिलानेसे ही आराम होताहै, इस दवाके साथ हल्का विरेचन देते रहता भी और अच्छा होताहै ।

रक्त प्रदर (Menorrhgia) :— मासिक ऋतुके समयमें अथवा मासिक ऋतु संबन्धीय कालके मध्यवर्त्ती कालमें अधिक स्त्रीयोंका रज: के स्राव होनेसें रक्त प्रदर रोग होताहै । इस रोगका चिकित्सा.—

यह रोगका दैहिक कारण है असंपूर्ण गर्भ पात

आदि होनेसें इसका हटाना चाहिए। यदि यह रोगका उद्दीपक कारण जैसा अत्यन्त परिश्रममें काम करना, मल त्यागके समय ज्यानासें ज्यादा कुंथन, किंवा आर्द्र बस्त्र पहननेसें ठंडो लगना अथवा श्लैकिककलाओंमें] क्षत प्रभृति होनेसे इनका निराकरण करना चाहिए।

साधारण खानेकी महौषधियाँ:—

(१) अशोककी छालसें सिद्धकिये दूधमें मिश्री मिलाकर ठंडाकर प्रातः और संध्या कालमें पीवे। (२) रसौत, चौराईका जड़ ४ तोला एक साथ पीसकर शहद मिलाके दिनमें ३ बार चावलके जलके साथ १०-१५ रोज पीते रहनेसें अवश्य रक्त प्रदर रोग छुट जाताहै। रक्त पित्त और रक्तातीसारमें कहा हुवा कुटजावलेहका प्रयोग करना भी उत्तम है। नित्य कब्जियत होतो दमचालके मूल और त्रिफलेका काँढा अथवा शीत कषाय नित्य खालि पेटमें खाते रहना चाहिए। (४) वलाका मूल छाग दुग्धसें पीसकर अथवा कुशाका मूल चावल धोवा जलमें पीसकर नित्य १५-२० रोज दिनमें ३-४ बार पीना। (५) केवल रसौत चौलाईके मूलके साथ पीसकर दिनमें ३-४ बार खाना तथा संपूर्ण विश्राममें रहना अति आवश्यक होताहै।

श्वेत प्रदर:— (Lewcorrhoea) :— यह रोगसें महिलाओंका जननेन्द्रिय संबन्धित समस्त यन्त्रके समस्त श्लैष्मिक कला आवरणके किसी भी अंशमें श्लेष्माका रस अथवा पूय युक्त क्लेद निकलनेसें होताहै। स्त्रियोंका भिन्न २ अंग, भग, योनि, जरायु डिम्ब नलीयोंमें पीडा रोग

होजानेसें लक्षणके प्रकाश होताहै ।

चिकित्सा:— इस रोगकी चिकित्सा वहीहै । जोकि कारण निर्णय करके होताहै इस रोगकी चिकित्साके दो भाग है ।

(१) दैहिक:- इसमें उपयुक्त व्यायाम पौष्टिक पथ्य, शीतल जलसें स्नान, भूवायु परि वर्त्तन, बलकारक महौषधियाँ इत्यादि । रक्तहीनकी अवस्थामें अथवा लडकेको दूध पिलाते समय दूध ज्यादा आनेसें रक्त बर्द्धक फल और लोहेका भस्म प्रयोग करना चाहिए । (२) श्वेत प्रदरके लक्षण लाघव करनेके लिए संकोचक (Astringent) औषधि जैसे (Alum) (फिट्किरी) आदि द्रव्योंको विलीन द्रवमें मलमल कपडा भिजाकर योनिमार्गसें प्रवेश कराना चाहिए। ३) हरा गुर्चका कराड २ तोला कुटके १ पाव जलमें भिजाके रखना २४ घण्टेके बाद घोलके कपडेमें छान कर सवेरै शाम १-१ खुराक मिश्री मिलाके पीलेना चाहिए।

ओठोंका पाक: इसमें मुरैठीके चूर्ण, गुगुलु, रक्त चन्दन पानीमें घोट कर आलेप लगाना चाहिए। चलदन्त-रोगका चिकित्सा:- मौल सिरीकी जड चायना दोनों दातौंके बीचमें यमक अर्थात् घी और तेल गर्म करके बार २ लगाना चाहिए । दन्त शूलमें पिप्परमेन्ट महौषधिका पातका कल्क, तुम्बुरूका कल्क, गौरखमुराड़ीका कल्क मुंहमें भीतर स्थिर रखना । जाईके पत्ते मुहमें चवाके रखना

चाहिए । कृमिदन्तमें हिङ्, और कालीमिर्च एक बर्ति बनाकर कृमिदन्त स्थानमें रखते ही बार बार थूकना चाहिए। कृमिदन्तमें मुण्डीका फूल, कपूर दातौंके बीचमें रखना चाहिए । केवलकंटकारीके सान्द्र क्वाथमें तेल मिलाकर गराडूष धारण करना चाहिए।

कृमिदन्तमें नेपालके पश्चिमी सीमाके थारूलोग गूमाके रसमें समुद्रफेन शहद और तेल मिलाकर कानमें छोडते हैं । यह योग शास्त्रोक्त भी है । मुख रोगकी विरसतामें छोटी हर्रे, कुठ् एक साथ मिलाकर मुखमें रखना चाहिए ।

मुखके भीतर दाह पकना सुरू होगयातो गोदुग्धसें शहद मिलाकर केवल धारण करते मुखमे ही रहना चाहिए। खाली गुमाके रस कानमें डालनेसें कृमि बाहर आकर अच्छा लाभ होताहैं । उपजिह्वा रोगमें टंसील बढ़जानेसें बढी हर्रेका चूर्ण और क्षार एक साथ टंसिलमें घिसना चाहिए। पथ्यमें कफ बर्द्धक पदार्थोंसे बचना चाहिए । अदरकके रस गर्म करके उसमें सौभाग्य चूर्ण और शहद मिलाके बार बार टंसिलमें लगाना चाहिए ।

रोहिणी (गल रोहिणी) (Diptheria) यह एक प्रकारके नाना स्थानके रोगमें विशेषतः गले भीतरका तालूका श्लैष्मिक कलाका प्रदाह है। इसमें अप्रकृत श्लैष्मिक कला प्रस्तुत होताहै इसमें ज्वर और दुर्बल होताहै । चिकित्सा:— इसमें बमन, गराडूष, नस्य कर्म्मकरके दोषौंका निरसन करना चाहिए । मनशिला, यवक्षार, सुहागा,

हरिताल (शुद्ध) सैंधा नमकका योग मधुके साथ सीकसे लगाते रहना चाहिए। दारू हलदीके चूर्णमें शहद मिलाकर लगाते रहना चाहिए। मुख रोगकी विरसतामें छोटी हर्रे, कुठ एक साथ मुखमें रखना चाहिए।

अनन्नासके स्वरस सिँकसे गलेका भीतर १-१ घंटेमें लगाते रहनेसें साध्य रोहिणीमें प्रथम अवस्थामें अच्छा काम करताहै। मुख और जिह्वाके क्षतमें रसोंत आधा तोला फिट्किरी ½ मोला १ पाव उष्ण जलमें घोलकर शीतल होनेके बाद दिनसें ३·४ बार गराडूष करना श्रेयहै। केवल फिट्कीरी दो आना भर १ पाव भर गर्म पानीमें मिलाकर गण्डूष करनेसें भी उपकार होताहै।

(२) उक्त गलेके रोगमें दूसरा योगः— एक तोला कत्थामें बब्बूरके छाल और जामूनके छाल १ १ तोला एक सेर पानीमें सिद्ध करके उष्ण अवस्थामें गराडूप करना लाभ होताहै

(३) मुखके भीतर गलेका भीतर क्षत होनेसें भेंडीके दूधमें थोड़ासा गौका घी मिलाकर बार बार लगानेसें आश्चर्य्य दायक उपकार होताहै।

(४) मुखके भीतर सादा दुग्ध सर जैसा होकर क्षत होनेसें शुद्ध किया हुवा स्वाग शहदके साथ मिलाके २·३ बार तुलीसें उतम रूपसें लगाना, बाद सफा बस्त्र खण्डके गर्म पानीमें भिगोकर दुग्ध पानके बाद मुखके भीतर साफ करना चाहिए।

दन्त रोग चिकित्सा:— दाँतमें मसूढोमें दर्द और शोथ होनेसें तुम्बुरू नामके एक प्रकारके सुगन्धि मशालाको चूर्ण करके मुंहमें रख छोडना बराबर थूकना। किंवा, उक्त चूर्ण १ तोला आधासेर गर्म पानीमें सिद्ध करना और बार बार गराडूप करना चाहिए।

मुखके व्रणमें योगान्तर और भी है (१) मुसूरके दालको घीमें भूजकर गर्म दूधमें पीसकर मुखके भीतर बराबर लगाना गर्म पानीसे कुल्ली करना। (२) जमानी मान्द्रो नेपाली नामसें विख्यात एक पेड होताहै। इस पेडका स्वरस गाढा करके शहदमें मिलाकर मुखका भीतरका व्रण और क्षतमें आराम होताहै। बार २ थूकना उत्तम है।

कर्ण रोगके चिकित्साके योग:— (१) तीव्र शूल युक्त मवाद बहते कानके रोगमें एक अनुभूत योग है कि जो मैंने अपने घरमें ही अनुभव किया है। अनेक महीनेका कानके भीतरका पुराने कर्ण पाक क्यौन हो नेपालके पहाडमें उपलभ्य "काने च्याउ" नाममें प्रसिद्ध जोकि कानके आकारका भूंई छत्ती छतोना (छत्राक) होताहै इस एक छत्राकको लेकर तिलके तेलमें भीतर रखकर शीशीमें डाट लगाकर सूर्य तापमें ७ दिन रखना, यह तेल सिद्ध होताहै। मात्रा ३-४ बूंद कानके भीतर विधि पूर्वक नित्य दो तीन मरतबा दिनमें डालना चाहिए। (२) कर्णनाद, कर्ण बाधिर्यमें अपामार्गके क्षार अपामार्गका कल्क (अपामार्ग पिसा हुवा) डालकर तिल तेलको सिद्ध करना (पकाना)

इस तेल नित्य कानके भीतर डालना अच्छा फल प्राप्ति होतीहै। (४) बेलके फलको गोमूत्रके साथ पीसकर बकरीके दूधमें मिला तेलमें सिद्ध करना और कानके भीतर नित्य नियमित डालना वाधिद रोगसें अच्छा होताहै।

कर्ण गूथः— कर्णस्थ श्लेष्मा पित्तोष्णसें शोषित होनेसें कर्ण गूथ रोग होताहै इसमें Wax (कानका मैला) जमा होताहै। कानके भीतर दर्द होताहै। इस रोगमें प्रथमतः तेलके प्रयोगसें कर्ण मलको नरम करके पीछे स्वेदन प्रदान करनेके बाद शलाकासें कर्णमलको वाहर निःस्सारित करना चाहिए। तार्पिन्का तेल सीकसें कानका भीतर लगाकर साफ करना चाहिए।

(६) कानके भीतर दर्द होनेसें गेंदा फूल और पत्तेका रस कानके भीतर डालकर साफ करनेसें कानका दर्द दूर होताहै। (७ कानके भीतर पीप (Pus a cream like matter) सरसौंके तेल आधा छटाकमें शम्बूकके मांस भुजकर छानके तेल टपकाना हितकारक होताहै (८) कानके भीतर व्रण होनेमें धत्तुरेका पत्तेका रस गर्मकरके कानके भीतर टपकाना चाहिए। कानके बाहर भी धतुरेका पत्तेके कल्क गर्म करके लेप लगाना लाभ दायक होताहै।

पीनस रोगः— जब वात नाकके भीतर कफको शोषता है। जब यह रोग होताहै। प्रतिश्यायके प्रथम अवस्थामें भी यह होताहै। प्रतिश्यायके समान ही लक्षण होके यह रोग पैदा होताहै।

इसकी चिकित्सा:— हर्रे, और मुनका दाख योग १ तोला अदरकके रस संयुक्त गर्म जलसें खाना। इससें वायुको शोषण करनेकी शक्ति क्षीण होतीहै नासाके दुर्गन्ध-को नष्ट करनेके लिए तुलसीका रस और थोडा नमकदेके तेल गर्म करना पीछे इसका नस्यलेना। केवल तुलसीके पत्तेका चूर्ण नस लेनेसें भी अच्छा काम होताहै। नये जुकाममें उडद (माष) को उवाल कर गर्म २ कर भोजनके साथ खाना चाहिए। इससें पुराने प्रति श्यायमें भी फायदा होताहै। प्रति श्याय जल्दी अच्छा नही होनेसें कालिमिर्चके साथ सहिंजनके बीजके चूर्णका नित्य नसलेते रहना, खानेमें तुलसी, मजीठ, दालचिनी, तेजपात चूर्णसें दूध चिनीके चायकी तरफ बनाके पीते रहना चाहिए।

जुकामके नाश करने वाली औषधियाँ:— तेजपात, कंटकारी, कुलत्थी, त्रिकटु, देवदारू, अदरक, तुलसी इत्यादिके कांढेमें मिश्री सयुक्त करके गर्म गर्म पीतेरहना अच्छा होताहै। जहाँ रूक्ष स्राव होताहै। पित्त प्रकुपित हुवा है। वहाँ रक्त चन्दन मिश्री संयुक्तका कांढा सुवह साम पीते रहना चाहिए। नेपालके प्रसिद्ध योग रक्त लवंगादि चूर्ण मिश्रीके कांढेके साथ खानेसें भी कफ पित्त प्रकृति वाले आदमीको जुकाम अच्छा होताहै। पुराने प्रति श्यायमें कायफलकी छालको महीन पीसकर सुँघनेसें छींके आजातीहै और जुकाम मिटताहै। पेट साफ नही होतो पुराने गुड और हर्रेका योग रातको सोते समय खाना चाहिए। मौसमके बदलेनेपर हवा और पानीकी खरावीसें

जो जुकाम होताहैं । उसको दूर करनेके लिए कंटकारी कापख्वाङ्ग गुर्चका योगका काथ खाना ।

शिरो रोग:— वायुके प्रकोपसें शिरमें दर्द होनेसें कुठको एरण्ड तेलमें पीसकर लेप करना । अथवा मुकुन्दके पेड बडा होता है इसका फूलमें सुगन्ध पीसनेमें लस्से दार होताहै । इसको शिरमें लेप करनेसे शिर दर्द दूर होताहै । यह फूल गर्मी मौसममें होताहै । इसका कांढा बनाकर शृत शीत अवस्थामें २ ३ बार १-१ गिलास पीना भी बहुत फायदा देताहै । मैने नेपालके विशाल नगर प्रधान मंत्रीके घर बगैंचामें सिपाहीयौंको खिलाके अनुभव कियाहै । पित्तके प्रकोप संयुक्त शिर तालु दहन शिर दर्दमें कमलकी डण्डी, चन्दन, आंवला, नीलकमल यथा लाभ द्रव्यौंका लेप करना चाहिए ।

श्रीखण्डका चूर्ण ३ माशे मिश्रीके साथ शीतल जलके अनुपानसें दिनमें ३ बार खाना चाहिए । कफ प्रकोपसें शिर दर्द हुवातो काय फलकी छालको चूर्णका नसलेते रहना तथा अदरकके रस के साथ गर्म पानीका कवल करते रहना चाहिए ।

तुलसीके पत्तेका रस अदरकके रस चम्मचमें शहद मिलाके खाना ।

शिर; शूल सूर्यावर्त्त (आधाशीशी) में गोघृतके गुडमें पिघलाके ठंडा होनेपर गर्मपानीसें दिनमें दोवार खाते रहना । और दूध और घीसें नस्यलेना चाहिए । पौष्टिक

जडीबूटीयों को जैसाकी अष्ट वर्ग, असगन्ध, शता वरीकारस यथालाभ दूधसें खाना चाहिए।

अनन्तवात शिरो रोगहै जिनमें गलेके पीछेके भाग दोनो गण्ड प्रदेश, मन्या, तथा शंखप्रदेशमें भीवेदना होती रहती है। इसमेंभी सूर्यावर्त्तकी चिकित्सा विधिकरना उत्तम है। ऐरण्डतेल १-१ औंस रातको गर्म दूधसें खाना चाहिए।

शंखप्रदेशमें शिरदर्द होनेपरभी सूर्यावर्त्तकी चिकित्सा करनी चाहिए। किन्तु स्वेदके अलावा शंखप्रदेशमें दर्द होनेसें कभी नही सेंकना चाहिए।

शिरो रोग नाशक औषधियाँ:— कुन्देकापुष्प, ऐरण्ड, त्रिफला, वडीएलाइची, कर्पूर, अजवायनका सत्व इत्यादि है।

नवसादर तथा चूनेके बारीक चूर्णके साथ समांश योग शीशीमें भरकर सूंघना चाहिए। इससें शिरोवेदना दूर होतीहै।

जबशिरस्थ कफको वृद्धि होनेपर महास्त्रोतसें वायु ऊर्ध्वगत होजानेसे कफ सुख् जाताहै। तब शिरमें दर्द होताहै। इसमें पिप्परमेन्ट वृक्षका पत्तेका स्वरस चाय र चंम्मचाके खुराकमें गर्मपानीसें खाना चाहिए।

रजः— स्त्रियोंको बन्ध होनेके समयमें प्रायशः न्युम्याटिक् सब्जेक्ट् अर्थात वातिक रोगका क्षेत्रमें शिरोरोग, शिरो वेदना होतीहै। इसमें आमलेका योग आवलेके स्वरसमें प्रयोग करना साथही दिनमें १ दफे पेट साफ

राखनेका हल्का दवाखाना चाहिहै । धात्री लोह आदि महौषधिका प्रयोग आमलेके स्वरससें १ महिना तक खाना सेवन करना सर्व्व श्रेष्ट उपाय है । कोष्ठ बृद्धता जनित शिरोवेदनासें अमलतासके गूदे १० चक्किके कॉढ़ेमें ऐरण्ड़ तेल २।३ ड्रामका खुराक १।२ दिन बीचमें खानेसें अच्छा काम होताहै । रक्तचाप ब्लड् प्रेसरकी वृद्धिसें शिरमें दर्द होनेसें त्रिफला जटामसी बड़ीइलाइचीके शृतशीत कपाय दिनमें ३ बार खाना चाहिए ।

चांद मरूवाको सेरे गुरू महामहोपाध्याय गणनाथ सेन जीने अनुसंधान करके ५ ग्रेनके मात्रा दिनमें ३ बार खानेको बतलाया है । अनुपान आँवलेका स्वरस या क्वाथ रहना । सभी प्रकारके शिरः शूलसें शतधौत घृतमें पुदिना सत कर्पूरके योग मिलाकर घीमें भरकर रखना इसके स्थानीय प्रयोग करना इसमें मर्दन करना । खुरासानी नामक एक प्रकारका अजवायन है । इसका चूर्णके फॉक करके दूधपीना चाहिए । रक्ताल्पतासें संमुख कपाल प्रदेशमें कभी कभी समस्त मस्तकमें वेदना हो जानेसें खून बढानेके महौपधियाँ जैसे लोहाभस्म, प्रवालका योग गुर्चके स्वरससें दिनमें ३ बार खानेको देना चाहिए ।

रक्ताधिक्य (हाइपेरिमिया) में शिरः पीडा होनेमें स्त्रियोंका वर्पिष्ठावस्थामें ऋतु हठात् बन्ध होजानेमें जो प्रक्रिया बत लायाहै वही ठीक क्रियाहै ।

रजः - कष्ठ रोगमें ही शिरो वेदना होतीहै इसकी चिकित्सा प्रक्रिया और रक्ताधिक्यताजन्य शिरो वेदनाका

प्रक्रिया बराबर है ।

मधुमेह रोगमें सहवर्ती शिर पीड़ा विरल होतीहै। कभी देखजानेसें भयका कारण होताहै। छिन्न श्वास रोग जिनको लक्षण समूह एलोप्याथि नामका युरिमिया रोगसें मिलता जुलताहै। इसमें शिरो वेदना खूब होताहै। चैतन्या वस्थामें वेदनाका अनुभव होताहै। इसकी चिकित्सामें बाष्प स्नान, विरेचन आदि अच्छा होताहै। योषापस्मार जन्य नाड़ी विकार संयुक्त शिरः पीड़ामें तिक्त ब्राह्मीके स्वरसमें सिद्ध गोघृतका सेवन दूधसें १ महिना तक करते रहना सर्व्व श्रेष्ठ है।

शिरो घूर्णनः— इस रोगमें रोगी स्वयं चक्कर खा-रहाहै ऐसा अनुभव होताहै चक्षुके पीड़ामें शिरोघूर्णन होनेसें लिखने पढनेका काम नही करना चाहिए । अश्वगन्ध चूर्ण ३ माशे पुनर्नवाके स्वरससें ३ महिना तक खानेसें अमोघफल होताहै । ग्याष्ट्रिक (आमाशयिक) दोषसें शिरोघूर्णनमें बडी इलाईची, लाङ् + पुदीनाके समांश चूर्ण ३ माशे नरियलके पानीसें खाना चाहिए। अधोग अन्तके दोषसें शिरोघूर्णन होनेसें पिप्परमेन्टके पत्तेका चूर्ण, हर्रे सोंठका चूर्ण समांश मिलाके ३ माशेकी खुराक गर्म पानीसें खाली पेटमें दिनमें ३ बार खाना चाहिए। सोनेका समयमें शिरोघूर्णन होने पर दुरालंभाके काढ़ेमें गौकाघी १ छोटे चंमच मिलाके खाना चाहिए। शिरमें विष्णु तेल अथवा शता वरीका रसमें तेल पकाया हुवा शिरपे मालिस करना चाहिए । निद्रा आजायगी भ्रम छूट जायगा । श्रमाधिक्य

तथा पोषणाभाव शिरोघूर्णन (भ्रम) में उदडके दालपें गौंका घी मिलाके खूब पकाके हिङ् अदरक सैन्धानमक मिलाकर पकाना कागतीका रस मिलाके शालिधान्यका ओदनसें खाना चाहिए ।

नाडीकी दुर्व्बलता होकर शिरोघूर्णन (भ्रम) रोग होनेमें ब्राहमी बूटीके चरस और शहदके योग अल्प मात्रामें दिनमें ३-४ बार खाना । पथ्यमें दूध बढाना उत्तम होताहै ब्राह्मीघृतका प्रयोग सवेरै और साम खानाके बाद गर्म पानीसें खाना आश्चर्य फलप्रद देताहै ।

नेत्र रोगः— यह रोग बहुत प्रकारको होताहै । नेत्र रोगकी चिकित्सा करनेके बास्ते सेक, आश्चोतन (Drop by Drop) आँखमें भीतर दवादेना बिडालक (पद्मसें अलग नेत्रके बाहर भागमें लेप लगाना) तर्पण (आँखके भीतर विधिसें गौका घी और गर्म पानी) भीतर देना, अञ्जन (सुर्मा लगाना) आदिसें चिकित्सा करनी चाहिए ।

साधारणतः नेत्र रोग (नेत्र पाकना आदि) का ४ दिन बित जानेका बाद आमावस्था दूरी कृत होतीहै । पक्वावस्था आजातीहै । नेत्र रोगके आमावस्थामें अञ्जन, आश्च्योतन, काथ पानकरना अच्छा नही होताहै ।

चिकित्सा: साधारणतः नेत्रमें कंन्जङ्टाइभामें लालिमा होकर पित्त प्रकोप होनेसें

(१) आंवलेका फलका स्वरसको कपडेमें छानकर आंखके भीतर बूँद बूँद टपकाना चाहिए ।

(२) दारू हलदीके काथसें यथा विधि सिद्ध रसौतको

स्त्री स्तन्यमें पीसकर आँखके भीतर बूँद १-२-३ टपकानेसे आँखकी, जलन और अश्रु पीडा शात होतीहै । साथ ही षड्बिन्दु तेल कानमें टपकाना भी फायदा होताहै ।

(३) आंखकी लालिमा आदि लक्षण संयुक्त नेत्र प्रकोपमें कनेरकी मुलायम पत्तियोंको तोडनेसे निकला हुवा जल आंखमें भरनेसे सहसा कुपित नेत्र अच्छा होताहै।

(४) आंखके प्रादाहिक अवस्थाके खूब जोरमें सैंधा-नमक, दारु हल्दी, गेरू, छोटी हर्रे ओ रसोंतको पीसकर नेत्रके बाहर लेप लगानेसें खूब आराम होताहै।

(५) आंखके भीतर खुजली जलन और पीड़ामें लोधको घीमें भुजकर थोडासा सैंधानमक मिलाकर यव (जौ) के काञ्जीमें पीसकर सफा कपडेमें बाधकर नेत्रमें बूँद टपकाना चाहिए ।

(६) नेत्रमें किरकिराहट होना, आंसूओंका गिरना और पीडा होतीहै तो सहिंजनके पत्तेके रसको घीके साथ ताम्रपात्रमें घिसकर मिलाकर धूप देना अव्यर्थ है।

(७) आंखके अभिष्यन्द रोग (आंख दुखना) आंखमें ज्यादा पाकना (अधि मन्थ रोग) आंखसें स्राव आना, आंखके भीतर खूनके खराबी होना, आंखमें सूजन इत्यादि रोगोंमें निम्न लिखित योग सफलहै । यथा बेलकी पत्तिके रसमें थोडासा सैंधानमक और गौके घी थोडासा मिलाकर ताम्र पात्रमें कौड़ियोंसे घिसकर गोवरकी आँचसे गरमकर नारी स्तन्य मिलाकर आखोंमें छोडना यह सफल योग है ।

(८) नेत्रके बाहर और भीतर सूजन होना यथा दर्द, नेत्रपाक ललिमा व्रण युक्त आदि होनेमें त्रिभी तकादि काथ उत्तम है ।

त्रिभी तकादि काथ — बहेड़ा, हर्र, आँवला, परवल, नीमकी छाल औ अडूसाके काथके साथ शुद्ध गुगुलु अथवा त्रिफला गुगुलु खाना सर्वोत्तम होताहै । तथा इन्हीसे पकाया हुवा घीसे भी उन रोगका लक्षणोंको दूर होताहै ।

(९) नेत्रमें चोट लग जानेपर ठंडी चिकित्सा करनी चाहिए । दूधसें आश्च्योतन करना अच्छा होताहै ।

(१०) सूर्य ग्रहण, अग्नि, बिजली आदिके दर्शनसें दृष्टिखराव होतीहै । अतः इसमें गौका घी गौके दूधसें नित्य खातेरहना चाहिए। तथा सायंकालमें त्रिफला काथके द्वारा आंखको धोडाले अथवा मृदु स्वेद करें ।

अभिस्यन्द (Congunctivitis) यह रोग नेत्रके है आयुर्वेदमें इसको संक्रामक वत लायाहै । इसमें व्यक्ति गत सफाईकी जरूरत होतीहै । इस रोगका संक्रमणकाल तीन दिन तक होंताहै । यह रोग होनेपर घरमें ही बैठेरहना आवश्यक है । इसमें हल्दीके अर्दरसमें हल मल कपडेको रङाकर निचोडके आँख पोंछनेके काममें लगाना उत्तम होताहै ।

इस रोगका बहुत प्रकारका निदानहोताहै । अतः उनको दूर करना चाहिए। नेत्र पर प्रकाश कम डालना । कालाचश्मा व्यवहार करना । कब्ज रहताहै तो सारक

औषध हर्रेका मुरब्बा या हर्रे और मुतक्रायोग ३ तोला गर्म पानीसें खाना उत्तम होताहै। नेत्रको अधिक श्रमन-ही देना चाहिए । यदि शुल्क मण्डलमें क्षत होगया हो तो शीतल उपचार ज्यदा नही करना। रोगोत्पत्तिके चार दिनके बाद शुद्ध सौभाग्य गम पानीमें उबालकर कपडेसें स्वेदन करना मन्दोष्ण भातसें नेत्रको स्वेदन करना सर्व्वोत्तम है।

पोथकी:- उस रोगको पोथकी संज्ञा दियाहै सुश्रुतने। पलकके भीतर बहु संख्यक पिडिकाएँ उमड आतीहैं । आँख नहीं खुलता। प्रकाश नहीं होता। नेत्र से अश्रु स्राव होता है उसकी ठीक चिकित्सा नहीं सें दृष्टि को हानि पहुँचती है।

उपद्रव (Complications):- यदि व्याधि शीघ्र शान्त नहीं होता है तो अनेकों उपद्रव आजाते हैं। पलकों को उलटकर दोनों आंख पर विसंक्रामक द्रव सें धोने सें रोग शान्त होता है। खाने के लिए लक्ष्मी विलास रस दिन में २ वार भृंगराज के रस औ शहद सें देने सें उपद्रव भी नहीं होता है।

मनशिलामें भृंगराज के रस के साथ घोटकर भीमसेनी कर्पुर अथवा वराँस कर्पूर मिला के घोटकर शीशी में रखना दिनमें २ बार आंख के पलकों को उबटकर लगाना चाहिए। आंख के पातामें खुजली होने सें सूक्ष्म कर्पूर चूर्ण कर वट वृक्ष के दूध के साथ घोटकर आंख में अंजन करना सर्वोत्तम होता हैं।

नाक्तन्ध्य में (Night Blindness):— बकरेको

यकृत में ५।७ पिप्पली रखकर पानी के साथ पका के खा लेने से नित्य सात रोज में उपकार होता है। नेत्र स्राव होने में विशुद्ध असली एरण्डतेल २ दो बूँद आंख के भीतर डालना उपकार होता है। नक्तान्धममें और भी उपाय है। यथा पानके पत्ते का रस दो बूँद आंखमें टपकाना श्रेय होता है। इसमें पुनर्नवा, जीवन्ती, बेथुवा, चौलाइ का शांक गौके घीमें पकाकर खाना।

चर्म्म रोगके चिकित्सा:— औषधादि।

पामा कच्छ्र (Scabies) :— (१) आदि रोगोंमें गन्धक का चूर्ण १ तोला सरसोंके तेलमें मिलाकर ३ घण्टा काल सूर्य के संतापमें शीशी के भीतर रखकर रुग्ण स्थानमें लगाना बहुत ही लाभ करता है।

(२) नरियलका तेल कर्पर सिन्दूर मिलाके लगाने से उपद्रव नष्ट होता है।

(३) साधारण खुजलीमें दूर्वा, सेंधा नमक, तुलसी पत्र, एक साथ पीस के लगाने से फायदा होता है। विशेष द्रष्टव्य:— विशेष आहारादि के दोपसे रक्तदोष होकर खुजली होती है। अतः पायखाना साफ रखना। गन्धक शोधा हुवा गौका दूध ७ सात दिन तक खालि पेटमें खाना नमक नहीं खाना अव्यर्थ होता है। अथवा शुद्ध गन्धक ४।४ रत्ती दूध और चिनी के साथ खाना चाहिए। जवारवा.— गन्धक योग चांगेरीके सरसके साथ लगाना चाहिए।

वान्ता और हिचकी:— औषधादि:— सर्व्वप्रकारके हिक्का

और वान्तामें कारणको अनुसंधान करके योगव्यवस्था करना चाहिए।

सामान्य हिक्का और वमि के लिए:— (१) श्रीखण्ड चन्दन और आंवले का रस कुछ मधु के साथ अवलेह चाटना चाहिए। (२) पिप्पल वृक्ष के शुष्क त्वक् अग्निमें दग्ध करके मिट्टी के बर्तनमें राख और पानी एक साथ रखकर कपड़े में छानना तथा अल्प २ कर पान करना चाहिए। (३) मयूर पुच्छ के भस्म १ रत्ती बडीइलाइची ३ रत्ती और बेर का बीज ३ रत्ती एक साथ शहद के साथ अवलेह चाटना चाहिए।

हिचकी का उत्तम योग:— (१) उड़द के चूर्ण को भस्म करके इसका धूम्रपान करना।

रक्तपात के लिए चिकित्सा:— साधारणत: हठात् आघात होने पर अथवा कट जाने से रक्त आप से बन्द होता है। यदि १।२ मिनट के भीतर भी खून बन्द नहीं हुवातो निम्नलिखित उपाय अवलम्बन करना अच्छा होता है।

(१) एक स्वच्छ कपड़े वा तुलाको कुछ गर्म पानी में उबालकर शीतल करके क्षत स्थान में बांध देना अच्छा होता है। (२) संभव होतो आघात हुवा अंग के ऊपर रखना रक्तपात का वेग कम होता है। (३) निर्म्मल वस्त्र के खण्ड से २।३ मिनट चाप देके रखना चाहिए। (४) अत्यन्त शीतल जल किम्वा बर्फ अथवा उष्ण जल (सह्य होने तक) बाह्य प्रयोग करने से खून जल्दी बन्द होता है। (५) नाक

से अधिक खून वह जानेमें दोनों बाहु ऊपर उठाकर कुछ देर तक खड़े होना अच्छा होता है। इससे प्रतीकार हुवातो ठीक है नहीं तो संमुख कपाल (Frontal Occipital) में ठंडे पानीका धारा अथवा वर्फ देना अच्छा है। (६) दवा प्रयोग करना हो तो दूर्व्वाके रस, दाडिमपुष्परस नस लेना चाहिए।

रक्त पातकी चिकित्सा करते समय सतर्क और सावधान रहना चाहिए।

(१) सहसा रक्त पात होनेपर खूनको बन्द करनेके उपायके लिए घबराहट होताही है, अनभिज्ञता होनेके कारण कोयलाके चूर्ण, मृतिका (मट्ठी) परालके राख देखनेमें आए तो प्रयोग नही करना वैद्यको शौच लक्षण और औषधियों संशोधन जिनको आयुर्वेदमें बतलायाहै इसको भूलना नही। कभी २ भी क्षत स्थानपे मलिन बस्त्रका एवं मलिन जलका प्रयोग नही करना चाहिए। नही तो पीप मवाद संचय होगा खून दूषित होगा प्राणान्त पर्यन्त होनेका संभावना होतीहै।

(२) खूब चोट् पडनेसें पिचकारी जैसा खून आने लगेतो फौरन क्षत स्थानमें निर्मल बस्त्र खराडसें जोरसे बन्धन करनेका महान् उपाय है। हात पैरमें ऐसा आघात लगनेसें कटे हुवे स्थानमें एक शिरानी (उपवर्हण) रखके उसके उपर बन्धन करना अच्छा होताहैं।

विष चिकित्सा:—

विषम क्षण:— भ्रमसें किसी विषाक्त द्रव्यके पेटमें पडजानेसे तत्क्षण रोगीको बमन कराना चाहिए। वमन कारक

लवण एक छटाक अथवा सर्षों का चूर्ण अर्द्ध छटाक पानीसें मिलाकर पान करना चाहिए। एक क्षणमें गरम पानी पीने रहना चाहिए। इससें वमन नही होजानेसें नीलतुत्थ १ माषाके करीब खुराक करके प्रचुर मात्रा गर्म पानीसें मिलाकर पीलेना गलेके भीतर अंगुली देके वमन कराना चाहिए।

स्थावर विषः— अफीम अथवा स्थावर विष खाकर विषाक्त होनेसें गूलरका सत्व द्रव आधा तोला २ सेर पानीमें मिलाकर बार २ पिलाना १०–१५ मिनट्में गलेके भीतर अंगुल देके वमि कराना चाहिए। अफीमसें विषाक्त हुवा तो २४ घण्टा तक नींद आनेको नही देना चाहिए। अफीमके व्यवहार आयुर्वेदिक औषधियाँकी मात्रासें विषाक्त होनेपर चिकित्सा करनी चाहिए। अहि फेनका Antidote प्रति शोधक द्रव या महौषधि युक्त जलसें आमाशय धोना चाहिए। अफीम विषाक्त रोगीके मुंहमें आँखमें पानीका प्रक्षेप आयुर्वेदिक Smelling Salt का आघ्राण, कडारूपके चा और कफी पिलाते रहना चाहिए। यदि रोगी अचेत अवस्थामें है तो मल द्वारसें चा और कफी देनेसें लाभ होताहैं। मनमें ध्यान होना चाहिए कि किसी तरहसें २४ घण्टे अन्दर ही में रोगीके अवस्थाका जरूर परिवर्त्तन होगा।

गाँजा, चरेस, भाङ्का अत्यधिक प्रयोगसें विषाक्त होनेसे रोगीको वमन करना रोगीके मस्तकमें शीतल जलसे चाकाना चांगेरीका स्वरस २-२ चमचा पानीसें पिलाते सेंचना चाहिए। केरोसिन्के तेलका विषका क्रिया होताहै अतः इसमें वमन होताहै। बमन करानेकी भी जरूरत

पडतीहै। रोगीको उत्तेजक मृगमदासव मृत संजीवनीसुरा आदिका प्रयोगकी जरूरत पड़तीहै।

कर्पूरसें विष क्रिया और चिकित्सा:— बालकोंमें कर्पूर सेवनसें विषाक्त हुवा देखनेको मिलताहै। कर्पूरके अत्यधिक मात्रा खानेसें बमन करना रोगीका अवस्थानुसार मृत सञ्जीवनी सुरा चाय, कफी प्रभृति सेवन करना चाहिए।

कुचिलाकी विष क्रिया और चिकित्सा – अनेक लोक अभ्यस्त होकर कुचिला खाते कभी कभी मात्रासें अधिक होताहै इस विषकी साङ्घतिक मात्रा १०–१२ रत्तीसें १५ रत्ती तक है।

चिकित्सा— बमन कराना, आमाशय प्रक्षालन करना, आक्षेप होने लगेतो आमाशय धोना—मुष्किल होताहै।

धत्तुर विषः— खानेसें विष क्रिया होताहै। इसका प्रतिविष चांगेरी स्वरस १-२ तोलाके खुराकमें आगे ४ मात्रा तक २-२ घंटेमें देनेसें अव्यर्थ फल होताहै।

कनेर (कर बीर):— यह फल अनेक उद्यानसें लगातेहै। श्वेतकर बीर और हलदीके वर्णके कर बीर जैसा कनेरका सर्व्वांशही विषाक्त होतेहै।

इससें विषाक्त होनेपर चिकित्सा:— बमन कराना, आमाशयसें विषकोफेंकना बादमें उत्तेजक औषधादि मृत-सञ्जीवनी सुरा आदि सेवन करना।

वत्स नाभ विष:— यह तीव्र विष है कविराजी दवाओंमें यह खूब प्रयोग होताहै । इसका मूल बाजारमें विक्री होताहै । हिमाचल प्रदेशमें इसके मूलसें विपाक्त हुवा फल भालू आदि जानवरोंको खिलाकर उनका शिकार करतेहै । यह विष आयुर्वेद मतमें ज्वर रोगकी प्रधान औषधिके रूपमें व्यवहार होता रहाहै । इसकी साङ्घातिक मात्रा मूलका १ ड्राम

चिकित्सा:— बमन कराना आमाशय प्रक्षालन सें विषको बाहर निकालना उत्तेजक मृतसंजीवनी सुरा, चंद्रोदय आदि औषधियौंका प्रयोग करना। हात पावमें शुंठका चूर्ण घसना चाहिए मद्यपानसें विपाक्त होनेपर आमाशय प्रक्षालन करना। आंखमें और मुखमें पानीका प्रक्षेप करना। नाकसें (Smelling Salt) का आघ्राण लेना। कडा, काफी, चाय आदिका सेवन करना ।

मद्यबिष:- मद्यके साङ्घातिक मात्रा (fatal dose) १२ वर्षसें न्यून वयस्क वालकोंको १-२ औंस। पूर्णवय स्कौंको २६ आउंससें ५ आउन्स तक। मद्यपायी अभ्यस्त लोगोंको साङ्घातिक मात्रासें अधिक मात्रामें मद्यपान करनेसें भी सहय होताहै । मद्य उसको कहतेहैं जिनसें नशा आताहै नशा लानेवाला और पीने योग्य जो द्रव्यहै उसे मद्य कहतेहै । मद्यके भेद अरिष्ठ, सुरा, सीधु, आसव आदि अनेक है। इनमें भिन्न २ साङ्घातिक मात्रा होताहै।

जांत्तव विप जंगम विष

सर्प विप— सर्प निर्विप और सविप दो प्रकारके

होतेहै । साधारणसें निर्विष सर्पके दंशन होनेपर नोचे दो दोटा कुल चार बिन्दु जैसा दाग होताहै । यह दाग देखनेमें यह रूपके होताहै । विष युक्त सर्पसे दृष्ट शोनेमें केवल दो बूंद : दाग होताहै । उभय प्रकारके सर्प दंशन होनेमें विष युक्त हो या नही आधुनिक मतसें (Permanganate of Potass) नामकी एलोप्याथिक औषधि सफल सिद्ध होताहै ।

पाश्चात्यौने प्रमाणित कियाहै । यह औषधि यथा समय प्रयोग करनेसें सर्प विष सहज ही नष्ट होताहै । अतएव सर्पके भय युक्त स्थलमें यह दवा संग्रह करके रखना चाहिए ।

आयुर्वेदमें बताया है कि सर्पके काटनेको समयमें ही मुखके कफ अथवा कानके मैलको वायें हाथकी अनामिका अंगुलीसें लेकर दंश पर लेप करने तथा मनुष्य मूत्रका सिच्चन करनेसें सर्प विष नष्ट होताहै । यह हुवा स्थानीय औषधि है । पान, नस्य व अञ्जनके लिए सांपने काटे हुवे मनुष्योंको सिरसा शिरीषके फूलको स्वरसमें भावित सफेद सरसोंका चूर्ण और कल्क अच्छा होताहै । यह ७ दिनतक प्रयोग करना चाहिए । और भी खानेका योग है जोकि अव्यर्थ है । तगर व कुठ यह घरेलू दवाहै । इह दोनोंका मिलित चूर्ण ८ तोला शहद व घी मिलित १६ तोला मिलाकर पीनेका विधान है ।

और तीसरा योग है:— बांझ खेखसा (वंध्या कर्कोटकी) जिसको नेपाली भाषामें चटेल कहतेहैं । इसका

जड़ बकरेके मूत्रमें भावितकर काञ्जी (यव जल पर्युषित) में मिलाकर विषसें वेहोस मनुष्यको नस्य देना सफल क्रिया हैं

कुक्कुर दंशनः— कुत्ताने काटनेसें ही शरीरमें विष प्रवेश होगा। यह बात नही हैं। केवल विक्षिप्त कुत्ताके काटनेसें विष प्रवेश होकर जलातङ्क रोग होताहै। विष क्रिया ३–४ सप्ताहके भीतर प्रकाशित होताहै। क्षिप्त कुत्तेके विष नाशके लिए धत्तूर मूल, कुचिला, विशुद्धका योग लिखाहै। किन्तु आधुनिक पाश्चात्य संमत सूचीवेध क्रियाही सर्व्वोतम हैं। कुक्कुर विष जनित उन्मत्तताको आधुनिक सूची वेध करते २ बिशुद्ध कुचिला चूर्ण २ रत्ती तकका खुराक करके २०–२५ दिन अनुपान गोघृत गर्म पानीके साथ सेवन करना चाहिए।

नोटः— साधारणतः स्थावर विषका प्रतिषेध जंगम विष होताहै। जंगम विषका प्रति विष स्थावर विष होताहैं।

अनेक कीटोंने दष्ट होनेमें सर्व प्रथम दष्ट स्थानसें छुरीसें हुल (खील) वा हर निकालना चाहिए। निकालकर स्पिरीट क्याम्फर वा तार्पिनके तेल वा विशुद्ध सर्षपके तेल लगाना चाहिए। इस कटे हुवे स्थानमें एक प्याजको काटकर लेप लगाना चाहिए अथवा गाँदाके पत्ते (नेपाली भाषामें शयपत्री जिसको कहते है) इस पेडका पत्तेका रससें रगडनेसें उपकार होताहै। वृश्चिकसें काटनेमें ओल (शूरण–कन्द) को निर्यास अथवा सुदर्शनको पीसकर लेप मलना चाहिए। केवल चूना और नौसागर दोनो मिलाकर स्थानीय

प्रयोग अच्छीतरसें करना चाहिए इससें आश्चर्य जनक फायदा होताहै। मच्छड अथवा अन्य कुछ भी विषाक्त कीटादिके दंशनमें किसी भी शरीरके अशमें शोथ हो जानेसे वेदना खूब होतीहै। इसें स्पिरिट् क्याम्फर अथवा निम्बूके रससें घिसना चाहिए, घिसनेके बाद चूनाको गरम करके लगानेसें उपशम होताहै। भूल वालाकीटने टोकनेसें दष्ट जगहपर गुलरकीपत्ती घिसकर चूना लगाना चाहिए। अनेक समय भुस वाला कीटके संपर्कसें अनिष्ट होताहै। अनेक समय दष्ट स्थानपर पकना सुरू होताहै। इसमें भी निम्बूका रस, घृत (गोघृत) और नमक मिलाके लगाना उपकार होताहै। आंखमें बालूका छोटा कण, कीट, वा चूल भीतर पडजानेसें आंखके पलकके उल्टा कर सफा वस्त्र आदिके अग्र भागसें उसे निकालना चाहिए। आंखको कभी नहीं रगडना चाहिए। आंखके भीतर चूना वा कोयला अथवा तम्बाकूका राख पढनेसें तत्क्षणात् आंखके भीतर दही डालना चाहिए, किंवा भृंगराजका स्वरस ३० बूंद आधा आउंस गर्म पानीमें मिलाकर इससें आखको धोना चाहिए। आंख साफ होनेके बाद निम्बूका रस एक छटाक चूनेके स्वच्छ पानीमें मिलाके आंखके उपर पट्टि देना श्रेयहै। आंखके भीतर किसी धातुके कण भाग आंखमें पडजानेसें वेदना होतीहै। ऐसी अवस्थामें अराडाका श्वेत भाग आंखमें लगाना चाहिए।

कानके भीतर पुतली पड जानेसें कर्ण नाद होताहै। इसमें तेलको गर्म करके कानके भीतर प्रवेश कराना चाहिए।

कोई बीज अथवा कुछ भी छोटा द्रव्य नाकके भीतर प्रविष्ट होनेसें जो दुःख होताहै । इसमें प्रविष्ट द्रव्यको सतर्कके साथ बाहर करना चाहिए। गलेके भीतर मछलीका कांटा प्रभृति सूक्ष्मद्रव्य अटक जानेपर केला (झपरी) और भात दोनो एक साथ खूब मलके गलेसें निगलते रहना चाहिए। साथ ही कांटा प्रभृति द्रव्य नीचे जायगा । मांसके टुकड़े वा अन्य किसी खाद्य द्रव्यको गलेके भीतर अटक जानेसें व्यथा होताहै । इसमें गलेके भीतर अंगूल देके नीचेकी तर्फ ठेलनेसे नीचे जायगा । कभी २ वमन करनेसें भी गलके भीतर अटका हुवा द्रव्य बाहर आताहै ।

Fracture, Dislocation, Sprain (अस्थिभग्न, अस्थि स्थानच्युति): Tprain (संधियाँ मच काना):— नर शरीरके गुल्फ संधियाँको बाधके रखने वाले रज्जू सफेद वर्णके होतेहै । जिसको स्नायु (Ligament) कहतेहै । इनमें आघात होनेसें ये सब रज्जू स्थान च्युत कुछ छिन्न हो जातेहै । आहत स्थान पर वेदना और स्फीत होताहै । उक्त सभी रोगोंमें लगानेका एक योग हैं अव्यर्थ हैं । नेपालमें चिप्ली कीरा नामका कीड़े वर्षातमें खूब होतेहैं । नेपाल काठमाण्डूमें "सिस्नु" नामका चुप होताहैं । उन दोनोंको एक साथ पत्थर पर पीसके लेप लगादेना सब्ब श्रेष्ट उपाय है ।

अर्जन वृक्ष, अस्थि संहार+लाक्षा प्रत्येक समांश द्रव्य पानीमें पीसकर भग्न आदि उक्त रोगमें प्रलेप देना चाहिए । इसरा उपाय है कच्ची हलदी और नमक एक

साथ पीसके गर्म गर्म करके लगाना चाहिए । आघात स्थान पर बाहर घाव नहीं देखा तो कच्ची इमली, कलमी सोरा एक साथ मिलाके गर्म करके लेप लगानेसें सूजन और वेदनाका उपशम होताहै ।

मचकानसें अलग यदि कोई हड्डी टूटगया तो, हाथ पैर आदिकी हड्डीका संयोग छुट गयातो कुशलताके साथ ठीक स्थानमें बैठा देना अच्छा होताहै बादमें बन्धनी ठीकसें बाधना चाहिए । यदि (Splint) लगाना पडेतो अर्जुर खदिर, वेत आदिका लगाना अच्छा है । पीछे पीछे नरम तेल, मज्जा, स्नेह, आदि धूपमें रहकर या, आगमें तपाकर नित्य मालिस करना भी बहुत अच्छा होताहै । लेखकने ऐसे उक्त रोगौंमें जब मालिस लगानेका समय आताहै । तव तिलका तेल, गोघृत, वकरेके वसा, मज्जा, मोम आदि द्रव्यौंको एक साथ मिलाकर पकाके लगानेका सफल प्रयोग पाया है ।

Shock (ग्लानि) :— इसमें शक्ति हीन होताहै । अवसन्नता देखनेसें आतीहै । यदि रक्त चापकी ह्रास भी होतो शुद्ध कर्पूर २ रत्ती कुचिला भस्म १-३ रत्ती मृत संजीवनी सुरा २ ड्राम एक साथ मिश्रीके कांढ़ेमें खाना चाहिए । गर्म शय्यामें रखकर अगल वगलमें हाथ पैरमें ताप देना चाहिए ।

Excitment (उत्तेजना) यदि Blood pres-sure रक्त चापका बृद्धि भी होतो, Functional hyp-ertension मैं भी ब्राह्मी (तीता) का स्वरस ४ चम्मच

भर २ तीला मिश्रीका चूर्ण और ठंडा पानीके साथ खालि पेटमें दिनमें दो बार खाना चाहिए। विष्णु तेल नामक तेल शिरसें मालिस करना नित्य स्नान करना चाहिए। यह योग उत्तमहै मूर्च्छा वराबर होतीहै किन्तु कारणका पता नही लगता हो कभी शक, कभी भ्रम, होतेहै और मूर्च्छा हो ती भी है। मूर्च्छाके पूर्व रूपकी अवस्था पत्ता लगेतो पेट साफ नित्य करना इसके उपचारमें कौम्भ अर्थात् १० या १०० वर्षके पुराने घी दुरालभेका मन्दोष्ण जलके साथ खानेका विधान अत्युत्तम है।

व्रण (व्रण शोथ) साधारणतः वणके लिए शोथ होताहै। सद्यो व्रणः- तत्काल लगे घावमें गूलरका सत्व द्रव या गूलरके पत्तेके रसमें सफा कपड़े या कपासको भिगोकर लगाना चाहिए। चिकित्साः— वेन्जोईन् की तहरकी आयुर्बेदीय दवा बनती है। इसी गूलरका सत्व मृत संजीवनी सुराके साथ बिलीन करके निर्बिषीकरणकी क्रियासें बनाकर मुंह बन्द करके रखना चाहिए।

(२) इसका प्रयोग करके वन्धनीदेके रखना सर्व्वो परि श्रेय है। तात्कालीन घावौंमें खून बहनेसें लट जीरेके पत्तोंके रससें सिञ्चन करके रोकना चाहिए।

(३) गौके घीके साथ शुद्ध कर्पूरको मिलाकर बिल-कुल सफाईके साथ व्रणमें लगाना चाहिए।

(४) आयुर्वेदमें ७ दिन तक सद्यो व्रणकी चिकित्सा करनी चाहिंए। व्रणकी चिकित्सामें सफाई नही होनेसें घावमें कीडौंका प्रभाव बढता है। अगर घाव रोपण नही

होता है। ऐसी दशामे संभालूका पत्तेका रस कलायके पत्तियांका रस, तुलसी पत्तीकेरस सें सेक अथवा लेप करनेसें क्रिमियोंका नाश होता है।

(५) लहसुनके कन्दका रस, अथवा लहसुनके कन्दका लेप करनेसें भी व्रणमें हुवा क्रिमि नष्ट हो जातेहै।

(६) व्रण, सड़े, पके, स्राव, गन्ध, तथा शोथ युक्त भी हो जातेहैं। शुद्ध गन्धक, दारू हलदी, और हलदी १६–१६ तोला कांढा, या कच्चा मिलेतो स्वरस २–२ तोले भरमें शहद १ चम्मच मिलाकर खाना हितकर है।

(७) उक्त अवस्थाके घावमे एक अमोघ योग है जो खानेमें, वाहय प्रयोगमें आताहै।

बाह्य प्रयोग (क):– उदूम्बर (गूलर) इसके पत्तेका गाढा कांढ़ासें स्वेदन देते रहना।

(ख) आभ्यन्तरिक प्रयोगः— पत्तेकी रस क्रियासें घन अवलेह बनाके ४–४ लाल दिनमें ४ बार खाना उत्तम हैं।

नोटः— गूलर ६० फीट तकका वृक्ष होताहै। ५–७ ईंचि लम्बे अण्डाकार और चिकने चमकीले गूलर वृक्षपर फूल नही आताहै।

विद्रधिः— फोड़ाः – इसमें गेहूंके पुल्टिसका स्वेदन देना सर्व्वोतम है। पुल्टिसके बाद तजनामक एक द्रव्य होताहै जिसको नालुका कहतेंहै। इसका प्रलेप लगाना। विद्रधि पक जायतो व्रण विद्रधिसें उपचार करना चाहिए।

समासेन विलिखितं रोगजालाऽपनोदन- ॥
प्रयोग–योग विज्ञानं समेषां क्षेमहेतवे ॥१॥

ये सन्ति सन्तः परदोषविज्ञा येऽन्ये गुणज्ञाश्च नमामि तेभ्यः ॥
मुद्रापणे लेखन-कार्यजाते श्रमंच जानन्ति नमामि तेभ्यः ॥ ॥

सहायकाश्च ये सन्ति ममाऽस्य कार्य सिद्धये ॥
भद्रं कमे सदा तेषां गुप्त-साहाय्य-कारिणाम् ॥३॥

इति

लेखकः– हेमन्त राम भट्टराई
कमलादि ब्लक नं. २७/१२७ नेपाल।

शमस्तु
२०३४।१०।२५



भारतीय सूचना विभाग

Information Service of India

EMBASSY OF INDIA, NEPAL

काठमाडौं,

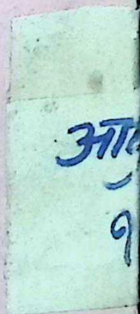
दिनांकः- नवम्बर ३०, १९७७

कविराज हेमन्तराम भट्टराई लिखित संक्षिप्त गार्हस्थ्य चिकित्सा नाम पुस्तक मैंने देखा । इसमें आयुर्वेद के आधार पर रोगों के नाम, प्रकार, लक्षण, और चिकित्सा के लिए औषधियौं तथा अन्य उपायौं को संक्षेप में बतलाया गया हैं । पुस्तक बहुत उपयोगी है और इससे बहुत से लोगों का उपकार होगा । इसके लिए लेखक बधाई के पात्र हैं ।

हरिश्चन्द्र शुक्ल

सूचना तथा सांस्कृतिक सहकारी





मुद्रकः–
आनन्द प्रेस,
बागबजार (टुकचा पुल निर)
काठमाडौं, फो० नं० ११६२५